सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 172, नई दिल्ली, शनिवार 30 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा- नैशनल मीडिया रजिस्टर का भव्य शुभारंभ

06 पत्रकारिता के स्रोत महान शिक्षक हो सकते हैं

08 ओड़िशा में चलेंगी 1000 ई-बसें

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में,

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में पीईएफआई (PEFI), युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में राष्ट्रीय गौरव के लिए सवारी।

प्रयागराज से दिल्ली, कानपुर, झांसी, ग्वालियर और आगरा होते हुए - 24 अगस्त से 31 अगस्त तक,

अमर हॉकी आइकन मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए।

आइये विरासत के लिए आगे बढ़ें, आइये भारत के लिए आगे बढ़ें।

हम 31 अगस्त को सुबह 7:30 बजे मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, इंडिया गेट पर ग्रैंड फिनाले के लिए दिल्ली पहुंच रहे हैं... हमसे जुड़ें

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें :
- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान :
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र :
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

शहीद भगत सिंह कालोनी के निवासियों ने महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह से बैठक कर एमसीडी कर्मचारियों द्वारा उनकी कालोनी में सफाई नहीं करने की सौंपी शिकायत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। वार्ड नंबर 92 के शहीद भगत सिंह कालोनी निवासियों के प्रतिनिधि मंडल में पूर्व महापौर सरदार जत्थेदार अवतार सिंह , देवेन्द्र यादव और कालोनी निवासी के के छावड़ा और राजरानी महापौर सरदार राजा एकबाल सिंह को मिले और शहीद भगत सिंह कालोनी मे समस्याओं को लेकर एक ज्ञापन सौंपा,

के के छावड़ा ने महापौर को बताया इस कालोनी में तीन वर्षों से बरसाती नालियों की सफाई नहीं हुई, गंदगी, कुड़े के ढेर के अम्बार कालोनी में हर जगह देखने को मिल जाएंगे। पार्कों के बुरा हाल है, पेड़ों की छंटाई नहीं होने से पेड़ मकान पर लटके पड़े है और कभी भी घरों पर गिर सकते है और एक बड़ी हादसा हो सकता है। गलियों के मरम्मत न होने से चलना मुश्किल हो रहा है।

इन सब समस्याओं से महापौर सरदार राजा एकबाल सिंह को अवगत कराया गया। महापौर ने शहीद भगत सिंह कालोनी की समस्याओं के शीध्र ही हल करने के लिए आदेश दिया है। महापौर को ज्ञापन देने वाले प्रतिनिधि मंडल में सरदार कुलदीप सिंह, राजरानी, सरदार अजीत सिंह, कपिल मदान और बी डी गुप्ता भी शामिल थे।

भारी भरखम राजस्व वसुली से खतरनाक सड़क पर ओवरलोड गाड़ियों की एंट्री पासिंग का खेल

पुलिस, प्रशासन व परिवहन के सह पर ट्रेक्टर ट्रालीयों की मौज

नई दिल्ली -राजस्थान में ओवरलोडिंग, ट्रेक्टर ट्रॉली नियमों और पुराने ई-चालानों के खिलाफ ट्रक यूनियनों का अनिश्चितकालीन धरना जारी; हनुमानगढ़ और टिब्बी यूनियनों ने भी उठाई जोरदार आवाज – प्रदेश सरकार की उदासीनता पर गहरा रोषः डॉ. राजकुमार यादव

"उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज राजस्थान में ओवरलोडिंग और ट्रेक्टर ट्रॉली संबंधी खुली छूट के खिलाफ चल रहे ट्रक यूनियनों के प्रदेशव्यापी आंदोलन पर एक विस्तृत बयान जारी किया है। उन्होंने प्रदेश सरकार की उदासीनता को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा है कि ट्रांसपोर्टरों, ट्रक चालकों और ट्रक मालिकों की अनदेखी न केवल आर्थिक संकट पैदा कर रही है, बल्कि राज्य की आपूर्ति श्रृंखला को भी पूरी तरह ठप कर सकती है। डॉ. यादव ने विशेष रूप से हनुमानगढ़ और टिब्बी ट्रक यूनियनों के योगदान को रेखांकित किया, जो इस आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल होकर अपनी मांगों को मजबूती प्रदान कर रही हैं।

राजस्थान में ट्रक यूनियनों का यह आंदोलन अगस्त के मध्य 2025 के अंतिम सप्ताह से शुरू हुआ था और अब अनिश्चितकालीन रूप धारण कर चुका है। मुख्य मुद्दे ओवरलोडिंग से जुड़े पुराने ई-चालान, ट्रेक्टर ट्रॉलियों के अवैध परिचालन को सह देना और वाहनों की आरसी (पंजीकरण प्रमाणपत्र) निलंबन हैं। प्रदेश के विभिन्न जिलों में यह धरना फैल चुका है, जिसमें चूरू जिले के सुजानगढ़, जालौर, हनुमानगढ़ और टिब्बी क्षेत्र प्रमुख हैं।

चूरू और सुजानगढ़ में स्थितिः सुजानगढ़ के डीटीओ कार्यालय के सामने ट्रक यूनियन का धरना 20 दिनों से अधिक समय से चल रहा है। यहां खनन और क्रशर एसोसिएशन भी शामिल हैं। ओवरलोडिंग के पुराने डेटा (2017-18 से) के आधार पर ई-चालान जारी किए गए हैं, जहां एक ट्रक पर 7-8 करोड़ रुपये तक की पेनाल्टी लगाई गई है। वास्तविक चालान राशि 20 लाख तक हो सकती है, लेकिन 5% वसूली नोटिस लाखों में हैं। परिणामस्वरूप, करीब 600 ट्रक डीटीओ कार्यालय में खड़े हैं और आरसी निलंबित हैं। ट्रेक्टर ट्रॉलियों का उपयोग खनन सामग्री (बजरी, पत्थर, कंक्रीट) के परिवहन में प्रतिबंधित होने से कारोबार ठप है। यूनियन अध्यक्ष हेतराम जी ने राज्यव्यापी सड़क जाम की चेतावनी दी है। कई सांसद और विधायक ने धरने में समर्थन दिया, और सांसद ने संसद में मुद्दा उठाने का आश्वासन दिया है।

हनुमानगढ़ और टिब्बी यूनियनों का योगदान - हनुमानगढ़ जिले में ट्रक यूनियन ने आंदोलन को नई गति प्रदान की है। यहां टिब्बी क्षेत्र की ट्रक यूनियन विशेष रूप से सक्रिय है, जहां ट्रेक्टर ट्रॉलियों पर सख्ती से स्थानीय किसान और ट्रांसपोर्टर प्रभावित हैं। टिब्बी रोड पर स्थित कई ट्रांसपोर्ट हब्स में धरना चल रहा है, और यूनियन ने ओवरलोडिंग फाइन के खिलाफ पुराने मामलों में 100% छूट की मांग की है। हनुमानगढ़ में करीब 300 ट्रक प्रभावित हैं, जिनकी आरसी निलंबित होने से दैनिक आय ठप है। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) ने हनुमानगढ़ में ट्रक वालों का समर्थन किया है और न्याय दिलाने का वादा किया है। टिब्बी यूनियन के पदाधिकारियों ने बताया कि खनन परिवहन में ट्रक व ट्रेलरों का उपयोग यहां की अर्थव्यवस्था का आधार है, लेकिन नए नियमों से सैकड़ों चालक बेरोजगार हो गए हैं। मध्य अगस्त 2025 से शुरू हुए प्रदेशव्यापी चक्का जाम में हनुमानगढ़ और टिब्बी यूनियनों ने सड़क अवरोध कर अपनी एकजुटता दिखाई है। इससे जुड़े 15 दिनों से अधिक समय से 1,000 से ज्यादा चालक और मजदूर भी प्रभावित हैं, जिससे उनके परिवारों में आर्थिक संकट गहरा गया है।

जालौर और अन्य जिलों में भी इसका फैलाव देखने को मिला है।जालौर जिले में आरटीओ और ट्रक यूनियन की बैठक में ओवरलोड ट्रकों पर सख्ती का फैसला लिया गया, जो ट्रक ट्रॉलियों तक पहुंचा। यहां से आंदोलन प्रदेशव्यापी हुआ, जिसमें श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ के किसान संगठन भी शामिल हो गए। कुल मिलाकर, प्रदेश में 2,000 से अधिक ट्रक और ट्रक ट्रॉलियां प्रभावित हैं, और ईंधन, टोल तथा निजी वित्तीय संस्थाओं की दबाव से ट्रांसपोर्टर पहले से ही जूझ रहे हैं।

ट्रक यूनियनों ने मुख्यमंत्री के नाम कलेक्ट्रेट व अन्य सरकारी कार्यालयों के द्वारा कई ज्ञापन सौंपे हैं, लेकिन कोई ठोस व दृस्टिगोचर कार्रवाई नहीं हुई। आंदोलन के कारण आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित हो रही है, और यदि मांगें पूरी नहीं हुईं तो उफ्तत्सा के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर हड़ताल का विस्तार संभव है।

प्रदेश सरकार की उदासीनता पर डॉ. राजकुमार यादव ने कहा, ₹राजस्थान सरकार की यह उदासीनता ट्रक ट्रांसपोर्ट ही नहीं पुरे परिवहन उद्योग को तबाह करने वाली है। ओवरलोडिंग की सख्ती और ट्रेक्टर ट्रॉली के परिचालन रोकने हेतु नियमों को शखती लागू करने में कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई, जबकि ट्रांसपोर्टर टोल की ऊंची कीमतों, ईंधन महंगाई, महंगे स्पेयर पार्ट्स और निजी वित्तीय संस्थाओं की गुंडागर्दी से पहले से पीड़ित हैं। हनुमानगढ़ और टिब्बी यूनियनों की भागीदारी से आंदोलन और मजबूत हुआ है, लेकिन सरकार पुराने डेटा पर भारी जुर्माने थोप रही है और सुनवाई नहीं कर रही। हम मांग करते हैं कि ई-चालानों में 100% छूट दी जाए, ओवरलोड विकल्प हटाया जाए, आरसी बहाली की जाए और ट्रेक्टर ट्रॉलियों पर प्रतिबंध में सख्ती लागु की जाए। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो 'उफ्तत्सा' राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन शुरू करेगा और सभी ट्रांसपोर्टरों को एकजुट करेगा।₹राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के रविंद्र धरनिया आंदोलन को मजबूती प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे है व अन्य साथी सहित राष्ट्रीय अध्यक्ष भी जल्द ही शामिल होंगे

डॉ. यादव ने सभी ट्रांसपोर्टरों, चालकों और मजदूरों से अपील की कि वे एकजुट रहें और सरकार की मनमानी के खिलाफ आवाज बुलंद करें। उफ्तत्सा इस मुद्दे पर निरंतर नजर रखे हुए है और आवश्यकता पड़ने पर कानूनी एवं राजनीतिक सहायता प्रदान करेगा।

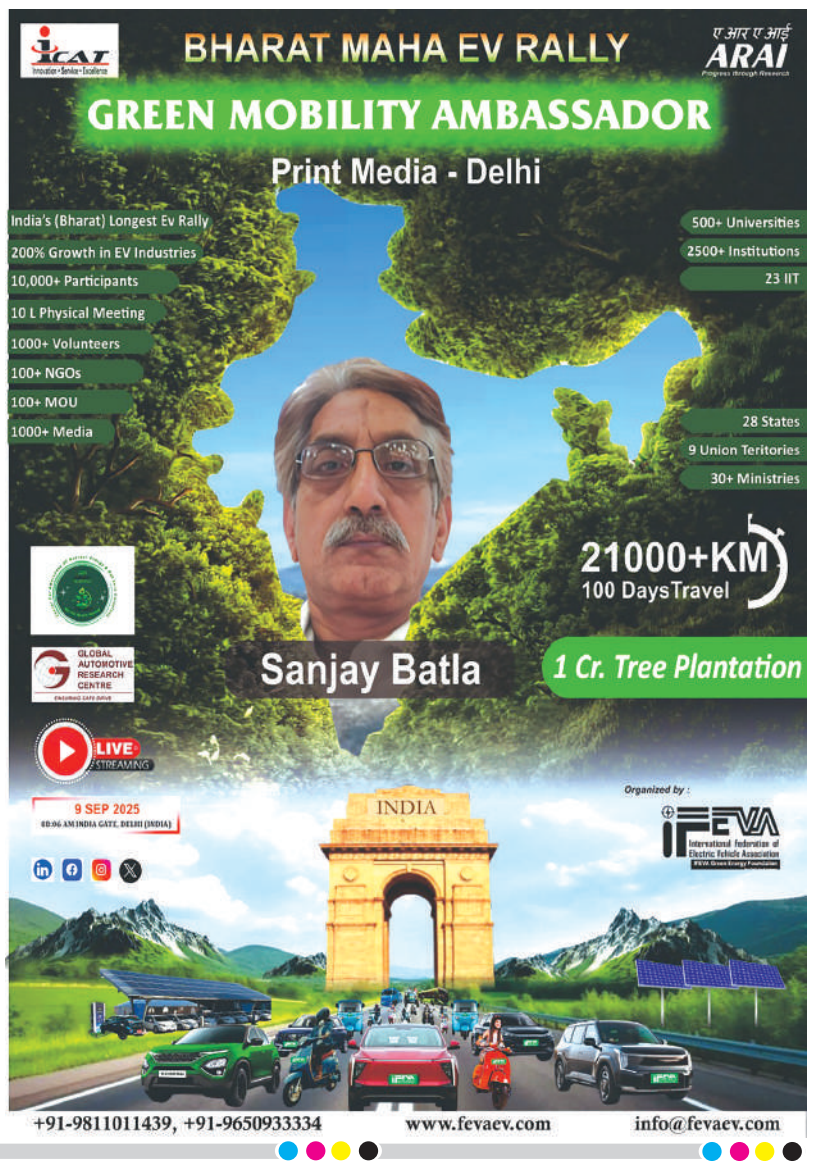

"ऐतिहासिक वोट चोरों, देश छोड़ो - ये देश बाबा साहब के संविधान से चलेगा गाली गलौज और अराजकता से नहीं"

नया मजबूत भारत अब अराजकता बर्दास्त नहीं करेगा और सच्चा भारतीय वोटर 'मां की गाली' देने वाली अराजक राजनीति को वोट नहीं करेगा

देश ने जिन मूल्यों और आदर्शों के आधार पर लोकतंत्र की नींव रखी है, वे आज अराजक तत्वों के निशाने पर हैं, वे सभी मिलकर बंगलादेश के पैटर्न पर भारत में तख्ता पलट का षड्यंत्र रच रहें हैं।

ऐसे में अब समय आ गया है कि भारतीय राजनीति में जवाबदेही, मर्यादा, शालीनता और पारदर्शिता को सर्वोपरि रखा जाए।

मजदूर दलित वोटरों का आह्वान, अराजक राजनीति के विरुद्ध सच्चें भारतीयों की राष्ट्रवादी पुकार

उत्तरप्रदेश, संजय साग़र सिंह। देश के प्रधानमंत्री की मां से एक पार्टी के मंच से भद्दी-भद्दी गाली गलौज और एक हताश नेता के द्वारा देश प्रधानमंत्री से तू-तू की अराजक भाषा शैली से आक्रोषित आम ग़रीब मजदूर दलितों की देश के कोने-कोने से उठ रही आवाज़ें अब एकजुट होकर एक ऐतिहासिक आंदोलन का रूप लेती जा रही हैं। "ऐतिहासिक वोट चोरों, देश छोड़ो" - यह नारा केवल विरोध नहीं, बल्कि लोकतंत्र की मर्यादा और जनविश्वास की रक्षा के लिए जन-आह्वान बन चुका है।

अराजक राजनीति के विरुद्ध सच्चें भारतीयों, राष्ट्रवादी आम ग़रीब, मजदूर और दलितों का कहना है कि ऐतिहासिक वोट चोरों, देश छोड़ो - ये देश बाबा साहब के संबिधान से चलेगा गाली गलौज और अराजकता से नहीं। ये नया मजबूत भारत अब गाली गलौज और अराजकता की राजनीति बर्दास्त नहीं करेगा और कोई सच्चा भारतीय वोटर अराजक राजनीति को कभी भी वोट नहीं करेगा।

उन्होंने आगे कहा कि देश ने जिन मूल्यों और आदर्शों के आधार पर लोकतंत्र की नींव रखी है, वे आज अराजक तत्वों के निशाने पर हैं। वे सभी मिलकर बंगलादेश के पैटर्न पर भारत में तख्ता पलट का षड्यंत्र रच रहें हैं। ऐसे में अब समय आ गया है कि भारतीय राजनीति में जवाबदेही, मर्यादा, शालीनता और पारदर्शिता को सर्वोपरि रखा जाए।

उन्होंने यह भी बताया कि घुसपेठिया बचाओं यात्रा के बाद चुनावी हार भविष्य की अराजक राजनीति का नया पैटर्न तय कर सकती है, क्युकी सत्ता से बाहर हुई पार्टियों के पास आज़ ना कार्यकर्ता हैं और नहीं कोई संघठन हैं, हार तो पक्की हैं, बगैर जनता के समर्थन के सत्ता मिलने से रही। इसीलिए ये सभी मिलकर गाली गलौज और अराजकता की ही राजनीति करेंगे और विनाश की ओर अग्रसर होंगे।अभी तो सिर्फ़ शुरुआत हैं, सत्ता पाने के लिए ये किसी भी हद तक जा सकते हैं।

लेक़नि, जनभावनाओं की अनदेखी कर देश में अराजक राजनीति में बने रहना देश में संभव नहीं होगा। ऑपरेशन सिंदूर और ट्रंप के टेरर टेरीफ थोपे जाने के बाद देश की जनता का रुख बदल रहा हैं, वो विदेशी दुश्मनों को पहचान रही हैं, और देश में विदेशी दुश्मनों के सुर में सुर मिलाने वाले भीतर घातियों को भी पहचान गयी हैं। देश की जनता अब अराजक तत्वों के मंसूबे स्पष्ट जान चुकी है। इन हताश नेताओं की घुसपेठिया बचाओं यात्रा में दुश्मन देश पाकिस्तान और बंगलादेश के झंडे दिखाएँ जा रहें हैं और ये घुसपैथियों को बचा रहें हैं।

आखिर में उन्होंने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता, चुनावी प्रक्रियाओं में कथित अनियमितताओं और शांति व्यवस्था को भंग करने वाली भद्दी-भद्दी गाली गलौज की अराजक राजनीति के खिलाफ जनता का गुस्सा फूट रहा है। सोशल मीडिया से लेकर सड़कों तक, देशवासी अब साफ साफ़ कह रहे हैं कि भारत जैसे शांति प्रिय और लोकतांत्रिक राष्ट्र में अस्थिरता, हिंसक भाषण, गाली गलौज, फ़ेक न्यूज़, झूठ, अफवाह एवं अराजकता, बेशर्मी और लोकतांत्रिक संस्थाओं, सैना और प्रधानमंत्री की मां का अपमान अब और बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। लोकतंत्र में विश्वासघात की कोई जगह नहीं है।

मच्छरों से व कैंसर रोकथाम

मच्छरों का सीजन चल रहा है!
नग्न या अर्धनग्न वस्त्र ना पहनें पूरा शरीर ढककर रखें!
मच्छरों के काटने से हर वर्ष पूरी दुनिया में 8 करोड़ लोगों को बुखार आता है, जिनमें से 6 लाख लोग हर वर्ष मच्छरों के काटने से मर जाते हैं!
मलेरिया - डेंगू- जैसी 5 से अधिक बीमारियां मच्छरों के काटने से हर साल लाखों लोगों को होती है--
कच्छा पहनकर घूमने वाले और हाफ शर्ट या खुले बदन घूमने वाले नर और नारी सावधान रहें---
मच्छर धरती का सबसे बड़ा साईलेंट कीलर है जो कभी भी पकड़ा नहीं जाता।

कैंसर का मरीज 40 दिन तक केवल ये डाइट लें इनके अलावा सर्व त्याग कर दे----
नारियल पानी- नारियल की मलाई!
जौ और गेंहू के ज्वारे का रस दिन में दो बार --
गन्ना चबाकर खाना है--

खेत की कच्ची लौंकी जो कड़ुवी ना हो!
उबला हुआ करेला!
मूली के पत्तों का रस!
चुकुंदर !
सेंधा नमक - अल्प मात्रा में!
इसके अतिरिक्त कुछ ना ले!
40- दिन में कैंसर जड से मिट जाएगा सदा सदा के लिए!
अनुलोम विलोम प्राणायाम 20 मिनट सुबह और 20 मिनट सांयकाल करें -----

क्या आपने कभी सोचा है कि हम प्रार्थना से पहले मंदिरों में घंटी क्यों बजाते हैं?

क्या यह सिर्फ़ भगवान को प्रसन्न करने के लिए है या बुरी आत्माओं को भगाने के लिए?

असली जवाब कहीं ज़्यादा दिलचस्प है और यह विज्ञान और परंपराओं पर आधारित है।

2. मिथक- घंटी बजाने से बुरी आत्माएँ दूर भागती हैं और देवता प्रसन्न होते हैं। प्रतीकात्मक रूप से यह सुंदर तो है, लेकिन कहानी का यह केवल एक हिस्सा है।

3. सच्चाई- मंदिर की घंटियाँ पीतल और तांबे के सटीक मिश्रण से बनी होती हैं। बजाने पर, ये लगभग 7 सेकंड तक चलने वाली ध्वनि उत्पन्न करती हैं। यह कोई संयोग नहीं है, यह प्राचीन इंजीनियरिंग का कमाल है।

4. इसके पीछे का विज्ञानः घंटी से निकलने वाली अनोखी ध्वनि आवृत्तियाँ ऐसे कंपन पैदा करती हैं जोः आसपास के वातावरण को शुद्ध करती हैं। हवा में मौजूद कुछ रोगाणुओं, जीवाणुओं और विषाणुओं को मारती हैं। आपकी श्रवण शक्ति को उत्तेजित करती हैं और मन को शांत करती हैं।

5. जैसे ही आप घंटी की आवाज़ सुनते हैं, आपका मन सांसारिक अराजकता से हटकर दिव्य उपस्थिति पर केंद्रित हो जाता है। यह एक ऐसी ध्वनि है जो आपको ध्यान और दर्शन के लिए तैयार करती है।

6. 7 सेकंड क्यों? 7 सेकंड की प्रतिध्वनि शरीर के सभी 7 चक्रों को सक्रिय करती है, जिससे प्रार्थना से पहले संतुलन और सामंजस्य की भावना पैदा होती है। यही कारण है कि प्राचीन मंदिरों में सटीक ध्वनिक डिज़ाइन का पालन किया जाता था।

7. तो अगली बार जब आप किसी मंदिर में जाएँ और घंटी बजाएँ, तो याद रखें: आप सिर्फ़ शोर नहीं मचा रहे हैं। आप हवा को शुद्ध कर रहे हैं, अपने मन को संतुलित कर रहे हैं और अपनी ऊर्जा को एकसार कर रहे हैं।

8. हमारे पूर्वज बिना कारण के कभी कोई काम नहीं करते थे। हर कर्मकांड में आध्यात्मिकता का समावेश था। घंटी बजाना इसका एक उदाहरण है।

मिच्छामी दुक्कड़म

आओ मिटाए जाति, धर्म का भेद,
अपनी गलतियों पर व्यक्त करें खेद।

ये दो शब्द रमिच्छामी दुक्कड़मर
विशेष हैं सभी को याद रहे हरदम।

जब शब्दों, कर्मों या विचारों से,
हुई हो किसी भी प्रकार की पीड़ा।

गलती से भी पैरों में आकर,
अस्तित्व से मिट गया हो कोई कीड़ा।

इस पवित्र अवसर पर हृदय से,
उन सभी से क्षमा मांग उठाओं बिड़ा।

करो त्याग अहंकार की भावना,
कर लो सच्चे मन से क्षमा की कामना।

सच्ची शांति और सुख संभव तभी,
करों एक-दूजे को क्षमा का साहस सभी।

दिलों में प्रेम और करुणा का हो भाव,
जलाओ ज्योत प्रेम की हर-घर में हो छांव।

संजय एम तराणेकर

दुनियाभर में तेजी से बढ़ रहे कैंसर के मामले, बचाव के लिए डॉ हृदयेश कुमार ने विस्तार से जानकारी दी

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने बैंगलोर के Ritz Comfort, Hotel में अपने ट्रस्ट द्वारा प्रोजेक्ट के तहत

स्वास्थ्य जागरूकता अभियान आयोजित किया गया यहां पर होटल के मैनेजर सहित अन्य पूरा स्टाप इस मुहिम से बहुत खुश हुआ जिसमें ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने बढ़ रहे कैंसर जैसे मामलों को देखते हुए आमजन को अपने वास्तविक जीवन और खान पान पर ध्यान देने के लिए बताया कि कैंसर एक गंभीर समस्या है जिससे बचाव के लिए लाइफस्टाइल में बदलाव और सही खानपान जरूरी है। व 3 में से एक कैंसर से बचाव हो सकता है अगर आप कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें। आइए जानते हैं कैंसर से बचने के लिए किन बातों का रखें ध्यान।

कैंसर से बचाव लाइफस्टाइल में बदलाव और खानपान से कम करें खतरा

कैंसर एक गंभीर बीमारी है, जो किसी को भी अपना शिकार बना सकती है। कैंसर से बचाव में मदद मिल सकती है। इन दिनों कैंसर दुनियाभर में एक गंभीर समस्या बनी हुई है। यह बीमारी किसी को भी अपना शिकार बना सकती है। वर्तमान में कई

लोग इससे पीड़ित है और कई इसकी वजह से अपनी जान तक गंवा चुके हैं। कैंसर कई तरह का होता है और यह कई वजह से हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि इसके रिस्क फैक्टर की पहचान की जाए और इससे बचाव के लिए जरूरी बातों का ध्यान रखा जाए।

कैंसर से बचाव के लिए आप कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। अपनी लाइफस्टाइल में कुछ बदलाव और डाइट से कुछ फूड्स को बाहर कर आप कैंसर के खतरे को कम कर सकते हैं । उन्होंने बताया कि लाइफस्टाइल में कुछ छोटे-मोटे बदलाव कर आप 20 से 30 प्रतिशत तक कैंसर से बचाव कर सकते हैं। इन फूड्स से बढ़ता है कैंसर का खतरा , व्हाइट ब्रेड , पैकेज्ड फ्रूट जूस , कोल्ड ड्रिंक्स , मैदा प्लास्टिक की बोतल में पानी , फ्राइड फूड्स , रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट , शराब और तंबाकू , प्रोसेस्ड फूड्स से दूरी

प्रोसेस्ड मीट और अन्य प्रोसेस्ड फूड्स जितना कम खाएंगे, उनता ही कैंसर का खतरा कम होगा। इनकी जगह अपनी डाइट में हरी सब्जियों को शामिल करना फायदेमंद होगा।

सनस्क्रीन लगाना हमेशा जरूरी है। भले ही बाहर धूप न हो, फिर भी इसे लगाएं। आप चाहें घर पर रहें या बाहर कहीं जाएं, सनस्क्रीन लगाना कभी भूलें।

रोजाना एक्टिव रहने की कोशिश करें। अगर ज्यादा समय नहीं है, तो कम से कम 30 मिनट तक एक्टिव रहने का टारगेट रखें। आप चाहें तो वॉक कर सकते हैं, जिम में कसरत या अपने कुत्ते को टहलाकर भी खुद को एक्टिव रख सकते हैं।

पेट में गड़बड़ी को न करें नजरअंदाज ! भारत में तेजी से बढ़ रहे हैं गैस्ट्रिक कैंसर के मामले

लंबे समय तक बैठे रहने से बचें

ऑफिस में लंबे समय तक बैठे रहने से बचें। ऐसा करना आपके लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए दिन भर में छोटे-छोटे ब्रेक लें और बीच-बीच घूमने की कोशिश करें।

7-8 घंटे की अच्छी नींद लेने से तनाव कम होता है, इंफ्लेमेशन कम होता है और पूरी हेल्थ बेहतर होती है।

मुक्ताभरण व्रत आज

भाद्रपद मास में आने वाली सप्तमी का विशेष महत्व होता है। भाद्रपद सप्तमी तिथि को मुक्ताभरण सप्तमी, संतान सप्तमी और दुबड़ी सप्तमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन महिलाएं अपनी संतान की मंगल कामना के लिए व्रत रखती हैं। साथ ही संतान प्राप्ति की जो महिलाएं कामना रखती हैं वह भी इस व्रत को करती हैं। इस दिन दुबड़ी माता की पूजा की जाती है।

कब है संतान सप्तमी का व्रत?

==========

बता दें कि मुख्य रुप से राजस्थान में इसके दूबड़ी सप्तमी कहा जाता है। जबकि देश के अन्य भागों में इसे संतान सप्तमी और मुक्ताभरण सप्तमी के नाम से जाना जाता है। महिलाएं अपनी संतान की लंबी आयु और अच्छे स्वास्थ्य के लिए इस व्रत को रखती हैं। दुबड़ी सप्तमी का व्रत इस बार 30 अगस्त 2025 शनिवार के दिन रखा जाएगा।

संतान सप्तमी पूजा विधि

==========

सबसे पहले अपने मंदिर की अच्छे से साफ सफाई के बाद लकड़ी की एक पटरी स्थापित करें। उसपर लाल कपड़ा बिछा दें। इसपर माता पार्वती की प्रतिमा स्थापित करें।

फिर एक कलश में पानी भरकर उसपर नारियल रख दें। कलश में आम के पत्ते जरूर लगाएं।

पूजा के लिए आरती की थाली की तैयारी करें। थाली में हल्दी, कुमकुम, चावल, कपूर, फूल, मिठाई, आटे की लोई और उसमें कुछ दक्षिणा रख लें। साथ ही मीठी पूड़ी भी रखें।

इन सबके बाद 7 मीठी पूड़ी को केले के पत्ते में बांधकर उसे पूजा में रखें और संतान की रक्षा की कामना करते हुए भगवान शिव और माता पार्वती को कलावा अर्पित करें।

पूजा करते समय सूती का डोरा हाथ में पहन लें। यह व्रत माता और पिता दोनों ही रख सकते हैं।

इसके बाद संतान सप्तमी की कथा का पाठ करें और अंत में माता पार्वती की आरती जरुर करें।

अंत में अपना व्रत मीठी पूड़ी के साथ अपने व्रत का पारण करें।

संतान सप्तमी व्रत का महात्म्य

==========

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन का व्रत करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती हैं। संतान के अच्छे स्वास्थ्य और उसकी लम्बी आयु की कामना के साथ इस व्रत एवं पूजन को करने से संतान का सदा ही शुभ होता हैं। इस व्रत को करने सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती हैं।

संतान सप्तमी व्रत कथा

==========

हिंदु धर्मग्रंथो के अनुसार एक बार भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को संतान सप्तमी के व्रत की कथा सुनाते हुये कहा कि यह व्रत योग्य संतान प्रदान करने वाला, उसकी रक्षा करने वाला और उसके दुखों का नाश करने वाला हैं। ऋषि लोमेश ने इस व्रत के विधान को माँ देवकी को बताया था।

भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को संतान सप्तमी की व्रत कथा सुनाते हुये कहा- हे धर्मराज ! मैं आपको संतान सप्तमी के व्रत की कथा सुनाता हूँ, आप ध्यान से सुनिये। बहुत समय पहले अयोध्या नगरी पर राजा नहुष का राज था। वो बहुत ही प्रतापी और न्यायप्रिय राजा थे। उनकी रानी चंद्रमुखी बहुत ही सुंदर, सुशील और धर्मपरायण स्त्री थी। उनके राज्य में एक विष्णुदत्त नामका ब्राह्मण अपनी भार्या रूपवती के साथ निवास करता था। रानी चंद्रमुखी और ब्राह्मणी रूपवती में बहुत अनुराग था। वो दोनों काफी समय एक दूसरे साथ बिताती थी।

एक दिन वो दोनों सरयू नदी में स्नान करने के लिये गईं। उस दिन संतान सप्तमी थी। उन्होने देखा कि स्त्रियाँ वहाँ पर स्नान करके, वहीं माता पार्वती और भगवान शिव की प्रतिमा बनाकर विधि-विधान के साथ उनकी पूजा-अर्चना कर रही थी। तब उन दोनों ने उन स्त्रियों से उस पूजा-अर्चना के विषय में पूछा, तो उन स्त्रियों ने कहा- हे रानी जी ! हम सुख-सौभाग्य और संतान देने वाला संतान सप्तमी व्रत (मुक्ताभरण व्रत) कर रही हैं। इसमें हम भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना करके भगवान शिव को धागा बाँधकर जीवन भर यह व्रत करने का संकल्प कर रही हैं। इस प्रकार उन स्त्रियों ने उनको उस व्रत की विधि के विषय में बताया। उन स्त्रियों से उस संतान देने वाले व्रत के विषय में जानकर उन दोनों ने भी भगवान शिव को धागा बाँधकर जीवनभर उस व्रत को करने का संकल्प कर लिया। परंतु दुर्भाग्यवश वो दोनों ही संकल्पित व्रत करना भूल गईं। परिणामस्वरूप मरने के बाद उन्हे कुयोनियों में जन्म लेना पड़ा। उन विभिन्न योनियों में दुख भोगकर एक बार फिर उन्हे मनुष्य योनि प्राप्त हुयी।

इस जन्म में रानी चंद्रमुखी ने राजकुमारी ईश्वरी के रूप में जन्म लिया और उनका विवाह मथुरा के राजा पृथ्वीनाथ के साथ हुआ और ब्राह्मणी रूपवती ने भूषणा के रूप में एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया और उसका विवाह मथुरा के राजपुरोहित अग्निमुखी के साथ हुआ। पूर्वजन्म की ही भांति इस जन्म में भी उन दोनों में बहुत प्रेम था। पूर्व जन्म में संकल्पित व्रत ना करने के कारण इस जन्म में रानी को संतान सुख प्राप्त नही हो सका। उसने एक मूक-बधिर बालक को जन्म दिया और वो भी अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस कारण वो बहुत दुखी रहने लगी। उधर सौभाग्यवश ब्राह्मणी भूषणा को उस व्रत का स्मरण रहा और उसने इस जन्म में उस व्रत का पालन किया। जिसके फलस्वरूप उसको आठ पुत्रों की प्राप्ति हुई। उसके पुत्र स्वस्थ होने के साथ-साथ बहुत ही रूपवान और गुणवान थे।

जब भूषणा को अपनी सखी रानी ईश्वरी के मूक-बधिर पुत्र की मृत्यु का पता चला तो वो रानी को सहानुभूति देने के लिये उससे मिलने गई। पुत्र की मृत्यु के शोक के कारण रानी के हृदय में अपनी सहेली भूषणा के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो गई। रानी ईश्वरी ने भूषणा के पुत्रों को मारने की इच्छा से उन्हे भोजन के लिये बुलाया और उन्हे भोजन में विष देकर मारने का प्रयास किया। किन्तु उस व्रत के प्रभाव से भूषणा के पुत्रों पर उस विष का कोई प्रभाव नही हुआ।

यह देखकर रानी ईश्वरी क्रोध और ईर्ष्या के मारें जल उठी और उसने सेवकों को आदेश दिया कि वो भूषणा के पुत्रों को यमुना के गहरे पानी में फेंक दे। परंतु इस बार भी उस व्रत के प्रभाव से उन बालकों का बाल भी बांका नही हुआ और वो सुरक्षित रहें। इतना सबकुछ होने के बाद भी रानी ईश्वरी को सब्र नही हुआ और उसने भूषणा के पुत्रों को मारने के लिये जल्लादों को आदेश दे दिया। सेवक उन्हे जल्लादों के पास ले गये। किंतु यहाँ भी भगवान शिव और माता पार्वती ने भूषणा के पुत्रों की रक्षा करी और उन्ही की कृपा से वो इस बार भी पूर्ण रूप से सुरक्षित रहें।

जब यह बात रानी को पता चली की तो उसे आभास हुआ की हो न हो यह कोई ईश्वरीय चमत्कार हैं और उसने भूषणा से अपनी भूल के लिये क्षमा माँगी। रानी ने भूषणा को बताया कि उसने किस-किस प्रकार से उसके पुत्रों को मारने का प्रयास किया, परंतु उसके पुत्र हर बार सुरक्षित रहें। रानी ने भूषणा से उसका कारण जानने चाहा। तब भूषणा ने रानी को पूर्वजन्म के उस व्रत का स्मरण कराया और उसे बताया की वो दोनों पूर्वजन्म में सहेलियाँ थी और उन्होने मुक्ताभरण व्रत का संकल्प लिया था परंतु वो उसे करना भूल गई थी। किंतु इस जन्म में मैंने उस संकल्प को पूर्ण किया और मुक्ताभरण व्रत का पालन किया। यह सब भगवान शिव और माता पार्वती का आशीर्वाद है और उस व्रत का प्रभाव है जिसके कारण मेरे पुत्र हर विपत्ति से सुरक्षित रहें।

भूषणा से यह सबकुछ जानकर रानी ईश्वरी को भी उस व्रत का स्मरण हो आया और रानी ने विधि-विधान के साथ मुक्ताभरण व्रत करना प्रारम्भ कर दिया। उस व्रत के प्रभाव से रानी को भी एक स्वस्थ और सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। तभी से स्त्रियाँ संतान प्राप्ति और उनकी रक्षा के लिये यह संतान सप्तमी व्रत करती हैं।

प्रेम पच्चीसा (भाग 15)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रोहन ने मुंबई की चकाचौंध भरी जिंदगी को अलविदा कह दिया था। उसका मन अब उन बच्चों की मदद करने में रम गया था, जिन्हें समाज ने किनारे कर दिया था। माया और मालती के एनजीओ, ₹मुक्ताकाश उड़ान ₹, में शामिल होने के बाद उसकी जिंदगी को एक नया मक़सद मिला। यह एनजीओज़ अनाथ और ज़रूरतमंद बच्चों के लिए पारिवारिक लालन-पालन, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं पर केंद्रित था। रोहन ने ठान लिया था कि वह इन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाएगा और उनकी ज़िंदगी को बेहतर बनाएगा।

रोहन ने माया और मालती के आदर्श समाज स्वप्न साकार संस्था (एनजीओज़) के साथ अपने पहले दिन की शुरुआत एक छोटे से गांव में की, जहां ₹मुक्ताकाश उड़ान ₹ का बाल आश्रय स्थल था। यह जगह शहर की भागदौड़ से कोसों दूर हिल स्टेशन पर थी। चारों तरफ हरियाली, छोटे-छोटे मिट्टी के घर, और बच्चों की हंसी की आवाज़ें साथ ही बौद्ध -विहार से सुबह शाम बुद्ध वंदना की घंटियाँ सुनाई पड़ती थीं। मालती जी , जो एनजीओज़ की संस्थापक थीं, ने रोहन और माया को बच्चों से मिलवाया। बच्चे शर्मीले, लेकिन उत्सुक नजरों से उसे देख रहे थे। मालती ने रोहन को बताया कि ये बच्चे अलग-अलग पृष्ठभूमियों से आए हैं कुछ अनाथ हैं, कुछ के माता-पिता गरीबी के कारण उन्हें छोड़ गए, और कुछ को सड़कों से बचाया गया था।

रोहन ने बच्चों के साथ समय बिताना शुरू किया। उसने देखा कि कई बच्चे पढ़ाई में कमज़ोर थे, लेकिन उनकी आंखों में सीखने की ललक थी। उसने अपने कॉलेज के दिनों की याद ताजा की, जब वह ख़ुद पढ़ाई में तेज़ था। उसने ठान लिया कि वह इन बच्चों को न सिर्फ पढ़ाई में, बल्कि आत्मविश्वास और सपनों को पंख देने में भी मदद करेगा।

पहले कुछ हफ्ते आसान नहीं थे। बाल आश्रय स्थल में संसाधनों की कमी थी। किताबें पुरानी थीं, क्लासरूम में बिजली की समस्या थी, और दवाइयों का स्टॉक भी सीमित था। साथ ही संवेदनशेल प्रशिक्षकों की कमी थी । रोहन ने माया और मालती के साथ मिलकर एक योजना बनाई। उसने अपने पुराने दोस्तों और भोपाल के कुछ कॉरपोरेट संपर्कों से मदद मांगी। उसने सोशल मीडिया पर ₹ मुक्ताकाश उड़ान ₹ के लिए एक कैंपेन शुरू किया, जिसमें उसने बच्चों की कहानियां और उनकी जरूरतों को साझा किया।

कैंपेन ने लोगों का ध्यान खींचा। कुछ लोग किताबें और स्टेशनरी भेजने लगे, तो कुछ ने आर्थिक मदद दी। एक स्थानीय डॉक्टर ने हर हफ्ते मुफ्त स्वास्थ्य जांच का वादा किया। रोहन ने बच्चों के लिए इंटरैक्टिव क्लास शुरू की, जहां वह कहानियों और खेलों के जरिए पढ़ाई को मज़ेदार बनाता था। उसने देखा कि बच्चे अब पहले से ज्यादा उत्साहित होकर क्लास में हिस्सा लेते थे।

इन सबके बीच रोहन की मुलाकात 12 साल के विशाल से हुई, जो बेहद शांत पर उसकी लिखावट बहुत सुन्दर थी । विशाल के पिता शांत हो चुके थे माँ अपने दूसरे छोटे बेटे के साथ छोटा मोटा काम करके पास के ही गॉव में रहती थी । रोहन ने धीरे-धीरे उससे दोस्ती की। उसने पाया कि विशाल लेखनी / लिखावट के साथ अच्छी चित्रकारी भी करता है । रोहन ने उसके लिए रंग और कागज़ का इंतज़ाम किया। विशाल की बनाई पेंटिंग्स देखकर माया ने सुझाव दिया कि वे बहुत जल्दी इनका एक छोटा सा प्रदर्शन आयोजित करें।

विशाल की चित्रकारी में प्रकृति की सवीव झलक देखी जा सकती थी। उसने बाल आश्रय कि सामने की दीवाल पर आकर्षक हराभरा पेड़ बनाकर उस पर चहचाते पक्षी प्रदर्शित किए । धीरे धीरे रोहन की यथार्थवादी कविताओं के बीस आकर्षक कविता पोस्टर्स बनाए। इन कविताओं में प्रेम, प्यास , आस्था, समर्पण के साथ ही सामाजिक जीवन से जुड़ी सच्ची बातें भी कूची कलम से उकेरी गई थी ।

रोहन अब सिर्फ़ एक स्वयंसेवक नहीं था; वह बच्चों के लिए एक बड़ा भाई, एक शिक्षक, और एक प्रेरणा बन गया था। उसने माया और मालती के साथ मिलकर एक और बाल आश्रय स्थल खोलने की योजना बनाई। उसका सपना था कि हर बच्चे को एक परिवार, संस्कार, शिक्षा, और स्वस्थ जीवन मिले। रोहन जानता था कि यह राह आसान नहीं होगी, लेकिन बच्चों की मुस्कान और एनजीओज़ के सहयोग ने उसके सपनों की हर चुनौती से लड़ने की ताकत दी।

(क्रमश : भाग 16)

कर्ज-निवारण व धन-वृद्धि हेतु रखें इन बातों का विशेष ध्यान

झाड़ू को कभी पैर न लगायें।

भोजन बनाने के बाद तवा, कढ़ाई या अन्य बर्तन चूल्हे से उतारकर नीचे रखें।

घर के दरवाजे को कभी भी पैर से ठोकर मार के न खोलें।

देहली (दहलीज) पर बैठकर कभी भोजन न करें।

सुबह शाम की पहली रोटी गाय के लिए बनायें व समय-अनुकूलता अनुसार खिला दें।

घर के बड़ों को प्रणाम करें। उनके आशीर्वाद से घर में बरकत आती हैं।

रसोईघर में जूठे बर्तन कभी भी नहीं रखें तथा रात्रि में जूठे बर्तन साफ करके ही रखें।

घर में गलत जगह शौचालय बन गया हो तो शौचालय में नमक रखने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव दूर होता हैं। नमक को शौचालय के अलावा कहीं भी खुला न रखें। इससे धन-नाश होता हैं।

घर की नकारात्मक ऊर्जा (negative energy) दूर करने के लिए हफ्ते में एक बार नमक मिले पानी से पोंछा लगायें।

घर में जितनी भी घड़ियाँ हों उन्हें चालू रखें, बंद होने पर तुरंत ठीक करायें, धनागम अच्छा होगा।

घर की छत पर टूटी कुर्सियाँ, बंद घड़ियाँ, गत्ते के खाली डिब्बे, बोतलें, मूर्तियाँ या कबाड़ नहीं रखना चाहिए।

घर में जाला या काई न लगने दें।

घर की दीवारों व फर्श पर पेंसिल, चाक आदि के निशान होने से कर्ज चढ़ता हैं। निशान हों तो मिटा दें।

बाधाओं से सुरक्षा हेतु हल्दी व चावल पीसकर उसके घोल से या केवल हल्दी से घर के प्रवेश द्वार पर ॐ बना दें।

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नान करें, स्वच्छ वस्त्र पहनें । असत्य वचन न बोलें। पूजाघर में दीपक व गौ-चंदन धूपबत्ती जलायें। हो सके तो ताजे पुष्प चढ़ायें और तुलसी या रुद्राक्ष की माला से अपने गुरुमंत्र का कम से कम १००० बार (१० माला) जप करें। जिन्होंने मंत्रदीक्षा नहीं ली हो वे जो भी भगवन्नाम प्रिय लगता हो उसका जप करें।

राष्ट्र, समाज और संघ: शताब्दी की नयी दृष्टि

संघ की शताब्दी यात्रा का उद्देश्य केवल संगठन विस्तार नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों में संतुलन, संस्कार और एकता लाना है। डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि भारत अखंड है और हिन्दू राष्ट्र की भावना जीवन और संस्कृति में निहित है। संघ का कार्य नि:स्वार्थ सेवा, शिक्षा में संस्कार और सामाजिक उत्थान पर केंद्रित है। आर्थिक स्वावलंबन, स्वदेशी और रोजगार सृजन पर बल दिया गया। संघ महिलाओं को नेतृत्व में सक्रिय करता है। जनसंख्या संतुलन, आरक्षण और सांस्कृतिक जागरूकता पर ध्यान देते हुए संघ समाज के कोने-कोने तक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

- डॉ सत्यवान सौरभ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उदय भारत की आत्मा और उसकी सभ्यता को केंद्र में रखकर हुआ है। संघ का कार्य केवल संगठन निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत के उस लक्ष्य की ओर अग्रसर है जहाँ राष्ट्र विश्वगुरु के रूप में पुनः स्थापित हो सके। संघ की प्रार्थना का अंतिम उद्घोष "भारत माता की जय" इस यात्रा का प्रेरणास्रोत है। यही कारण है कि संघ की कार्यप्रणाली धीमी, दीर्घकालिक और सतत है।

संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने शताब्दी वर्ष के अवसर पर यह स्पष्ट किया कि संगठन का अर्थ किसी के विरोध में खड़ा होना नहीं है। संघ का मर्म 'वसुधैव कुटुंबकम्' है—पूरा विश्व एक परिवार है। इस दृष्टि से संघ ने स्वयंसेवकों के माध्यम से समाज और राष्ट्र की एकता के लिए कार्य किया है। स्वयंसेवक स्वयं तैयार होते हैं और दूसरों को तैयार करते हैं। संगठन की यह प्रक्रिया आत्मनिर्भर है, जिसमें 'गुरु दक्षिणा' जैसे उपक्रम केवल प्रतिबद्धता और आस्था का प्रतीक हैं।

भारत की राष्ट्र-परिभाषा पश्चिमी अवधारणा से भिन्न है। यहाँ राष्ट्र सत्ता पर आधारित नहीं, बल्कि संस्कृति और आत्मा पर आधारित है। अंग्रेजों की गुलामी के दौरान भी भारत राष्ट्र था, क्योंकि राष्ट्र का आधार यहाँ केवल शासन नहीं बल्कि साझा परंपरा, श्रद्धा और संस्कार रहे हैं। यही कारण है कि संघ का उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के नैतिक उत्थान के द्वारा राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना है।

"विविधता में एकता और समन्वय का संदेश"

भारत की वास्तविक पहचान उसकी विविधता में एकता है। डॉ. भागवत ने कहा कि भारतीय समाज का स्वभाव संघर्ष का नहीं, बल्कि समन्वय का है। इस भूमि ने हमेशा भीतर झाँककर सत्य की खोज की है, बाहर देखने की आवश्यकता कम ही रही। यही कारण है कि यहाँ के महापुरुषों ने मानवता, सृष्टि और मनुष्य को आपस में जुड़े हुए रूप में समझा।

स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुषों ने अपने विचारों से इस चेतना को जागृत किया। वहीं, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने यह अनुभव किया कि समाज की कुरीतियाँ और आंतरिक दोष हमें बार-बार गुलामी की ओर धकेलते हैं। उन्होंने ठाना कि संपूर्ण हिन्दू समाज का संगठन कर ही इन दोषों को दूर किया जा सकता है। यही उद्देश्य लेकर 1925 में संघ की स्थापना हुई।

'हिन्दू' शब्द को धार्मिक सीमा में बाँधना उचित नहीं है। यह शब्द समावेश का प्रतीक है, जिसमें हर किसी की श्रद्धा का सम्मान है। हिन्दू का अर्थ है दूसरों को बदलने की आवश्यकता न समझना, बल्कि उन्हें उनके मार्ग पर सम्मानपूर्वक चलने देना। इस दृष्टि से हिन्दू कहना "हिन्दू बनाम अन्य" नहीं है, बल्कि यह विविधता में एकता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

आज जब जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक समरसता पर प्रश्न उठते हैं, तो लोग अपने मूल की ओर लौटते हैं। इसीलिए धीरे-धीरे वे लोग भी स्वयं को हिन्दू कहने लगे हैं, जो पहले इससे दूरी रखते थे। संघ इस प्रक्रिया को बल देता है, लेकिन किसी पर दबाव नहीं डालता। संघ के लिए हिन्दू राष्ट्र सत्ता या शक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समन्वय की स्वाभाविक परिणति है।

"संघ की शताब्दी यात्रा और नये क्षितिज की ओर कदम"

संघ ने अपने शताब्दी वर्ष को केवल उत्सव तक सीमित नहीं रखा है, बल्कि इसे आत्ममंथन और भविष्य-दृष्टि का अवसर बनाया है। संघ यह मानता है कि भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। इस सांस्कृतिक राष्ट्र की विशेषता यह है कि इसमें विविधताओं का सम्मान है, परंतु यह विविधता विभाजन का कारण नहीं बनती।

आज की पीढ़ी में यह प्रश्न अक्सर उठता है कि हिन्दू राष्ट्र का अर्थ क्या है? डॉ. भागवत ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि हिन्दू राष्ट्र का अर्थ किसी के बहिष्कार से नहीं है। यह सबको साथ लेकर चलने का मंत्र है। संघ सत्ता की राजनीति का हिस्सा नहीं, बल्कि समाज की चेतना और संस्कृति के उत्थान का साधन है।

भारत की प्रगति और विश्व नेतृत्व तभी संभव है जब समाज संगठित और आत्मविश्वासी बने। संघ ने शिक्षा, सेवा और सामाजिक सुधार के अनेक क्षेत्रों में काम करके यह दिखाया है कि संगठन के बल पर समाज की दिशा बदली जा सकती है। 'सेवा ही संगठन' का यह भाव संघ के कार्य में स्पष्ट झलकता है।

संघ की शताब्दी यात्रा भारत के नये क्षितिज खोलने की ओर संकेत कर रही है। यह केवल संघ का उत्सव नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का उत्सव है। जब हर व्यक्ति अपने धर्म, भाषा और परंपरा का सम्मान करते हुए एक साझा राष्ट्रीय धारा से जुड़ता है, तब वह भारत माता की सच्ची सेवा करता है। यही संघ का सपना है और यही भारत को विश्वगुरु बनाने का मार्ग भी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संदेश स्पष्ट है— समाज के संगठन और समन्वय के बिना राष्ट्र का पुनरुत्थान संभव नहीं। विविधता में एकता भारत की पहचान है और इसी के आधार पर भविष्य का निर्माण होना चाहिए। संघ की शताब्दी दृष्टि केवल संगठन की शक्ति को ही नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को विश्व मंच पर पुनः प्रतिष्ठित करने का संकल्प भी है।

"राजनीति में भाषा की गरिमा: लोकतंत्र की आत्मा की रक्षा"

लोकतंत्र में असहमति और आलोचना आवश्यक हैं, लेकिन जब यह अभद्रता और घृणा का रूप ले लेती है, तो समाज की आत्मा को चोट पहुँचती है। नेताओं द्वारा अपशब्दों और व्यक्तिगत हमलों का प्रयोग लोकतंत्र की गरिमा के लिए घातक है। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए राजनीतिक संवाद में शिष्टता, संयम और सम्मान अनिवार्य हैं। वैचारिक मतभेद स्वीकार किए जा सकते हैं, पर भाषा और व्यवहार की मर्यादा बनाए रखना ही लोकतंत्र की आत्मा को जीवित रखता है। राजनेताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके शब्द समाज को बांटे नहीं, बल्कि जोड़ें और प्रेरित करें।

- डॉ प्रियंका सौरभ

लोकतंत्र केवल बहुसंख्यक मतदान और शासन प्रणाली तक सीमित नहीं है। यह समाज की सोच, नैतिकता, संवाद की गुणवत्ता और व्यक्तिगत आचरण का प्रतिबिंब भी है। लोकतंत्र में असहमति और आलोचना का होना स्वाभाविक है, क्योंकि यह समाज को सतत सुधार और विकास की ओर प्रेरित करता है। लेकिन जब असहमति अभद्रता, कटुता और घृणा के रूप में प्रकट होने लगे, तब यह केवल राजनीतिक बहस नहीं रह जाती; यह समाज की आत्मा पर चोट पहुँचाती है।

वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि राजनीतिक संवाद का स्तर लगातार गिर रहा है। नेताओं के भाषणों में पहले की अपेक्षा अधिक व्यक्तिगत आरोप, अपमानजनक टिप्पणियाँ और कटु शब्दावली का प्रयोग हो रहा है। यह केवल राजनीतिक असहमति का विस्तार नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र की गरिमा के लिए गंभीर खतरा बन चुका है। लोकतंत्र के मूल मूल्य में शामिल है—विचारों का सम्मान, विरोधियों के प्रति सहिष्णुता और संवाद की मर्यादा। जब ये मूल्य अनदेखा किए जाते हैं, तो समाज में असंतुलन और सामाजिक कट्टरता की स्थिति उत्पन्न होती है।

एक महिला होने के नाते यह अत्यंत पीड़ादायक है कि राजनीतिक भाषणों में महिलाओं के प्रति अपमानजनक और अभद्र टिप्पणियाँ की जाती हैं। यह केवल व्यक्तिगत हमला नहीं है, बल्कि यह समाज के नैतिक ताने-बाने पर भी चोट है। किसी भी ज़िम्मेदार नेता द्वारा अशोभनीय और असंसदीय विशेषणों का प्रयोग लोकतंत्र और उसकी गरिमा के लिए घातक होता है। नेताओं को यह समझना होगा कि उनके शब्द केवल उनके समर्थकों तक सीमित नहीं रहते; उनका प्रभाव समाज के हर वर्ग और पीढ़ी पर पड़ता है।

इतिहास हमें यह सिखाता है कि राजनीति में गरिमा और शालीनता बनाए रखने से ही समाज स्थिर और सभ्य रहता है। देश ने अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी जैसे नेताओं को देखा है, जिनके समय में राजनीतिक असहमति के बावजूद संवाद का स्तर उच्च रहा। वे अपने विपक्षियों का सम्मान करते थे, वैचारिक मतभेद होने पर भी व्यक्तिगत अपशब्दों का प्रयोग नहीं करते थे। उनका आदर्श यही था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि समाज को शिक्षित, संगठित और सुसंस्कृत बनाना भी है। आज जब हम उनके दौर से तुलना करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में राजनीतिक संवाद अपने नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से बहुत दूर चला गया है।

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं है। यह विचारों का माध्यम, संस्कारों का प्रतिबिंब और सामाजिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। जब भाषा अशोभनीय और अपमानजनक हो जाती है, तो यह न केवल व्यक्तियों को अपमानित करती है, बल्कि समाज में आपसी विश्वास और सहयोग की भावना को भी कमजोर करती है। असहमति का अर्थ यह नहीं कि विरोधी के प्रति घृणा व्यक्त की जाए। असहमति का अर्थ यह है कि आप अपने विचार स्पष्ट करें, लेकिन सम्मान, सहिष्णुता और तर्क की मर्यादा बनाए रखें।

आज की राजनीति में अपशब्दों और अभद्रता की प्रवृत्ति का सबसे बड़ा खतरा यह है कि यह समाज में नई पीढ़ी के लिए उदाहरण स्थापित करती है। जब युवा नेताओं और समर्थकों के संवाद में अशोभनीय भाषा का प्रयोग देखेंगे, तो वे इसे सामान्य मानने लगेंगे। यह समाज की नैतिक पतन की ओर पहला कदम है। ऐसे में आवश्यक है कि हम राजनीतिक नेताओं से अपेक्षा करें कि वे अपने भाषणों और व्यवहार में मर्यादा का पालन करें। लोकतंत्र केवल कानून और संविधान तक सीमित नहीं; यह समाज की नैतिक चेतना और मूल्य प्रणाली पर भी आधारित है।

राजनीति में गरिमा बनाए रखने का अर्थ केवल विरोधियों का सम्मान करना ही नहीं है, बल्कि यह अपने समर्थकों और अनुयायियों के लिए भी नैतिक मार्गदर्शन करना है। जब नेता शालीन भाषा का प्रयोग करते हैं, तो वह समाज में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करता है। यह वातावरण विभिन्न विचारों, मतभेदों और बहस के लिए सुरक्षित मंच प्रदान करता है। इसके विपरीत, अशोभनीय और अपमानजनक भाषा समाज में भय, द्वेष और असहमति को बढ़ाती है।

संपूर्ण लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक है कि नेताओं में नैतिक चेतना और शब्दों की शक्ति की समझ विकसित हो। शब्द केवल माध्यम नहीं हैं; ये समाज की सोच, संस्कृति और भविष्य को आकार देते हैं। यदि राजनीतिक नेतृत्व अपने शब्दों की गंभीरता को समझे और संवाद में मर्यादा बनाए रखे, तो समाज में सम्मान, शांति और सहयोग की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित होगी।

भले ही राजनीति में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन व्यक्तिगत हमलों और अपशब्दों के बिना असहमति को व्यक्त किया जा सकता है। इसके लिए नेतृत्व को अपनी भाषा की संवेदनशीलता और प्रभाव को समझना होगा। लोकतंत्र में असहमति के लिए जगह हमेशा होनी चाहिए, लेकिन वह सम्मानजनक और सभ्य होनी चाहिए। यह प्रक्रिया समाज में न्याय, समानता और मानवता के मूल्यों को मजबूत करती है।

साथ ही, राजनीतिक संवाद में महिलाओं के प्रति सम्मान बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजनीति केवल पुरुषों का क्षेत्र नहीं है; समाज की आधी शक्ति महिलाओं में है। जब राजनीति में महिलाओं के प्रति अभद्र भाषा प्रयोग होती है, तो यह समाज के बड़े हिस्से को चोट पहुँचाती है। महिलाओं की गरिमा और सम्मान का ध्यान रखना न केवल नैतिक दायित्व है, बल्कि यह लोकतंत्र के मूल्यों की रक्षा भी करता है।

हमारे समाज ने देखा है कि जब नेता मर्यादित भाषा का प्रयोग करते हैं, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक रूप में भी होता है। भाषा की गरिमा बनाए रखने से युवा पीढ़ी सही मूल्य और नैतिक दृष्टिकोण सीखती है। इसके विपरीत, अपशब्दों और अभद्रता की प्रवृत्ति समाज में हिंसा, द्वेष और असहमति को जन्म देती है।

इसलिए, अब समय आ गया है कि राजनीति में फिर से शिष्टता, गरिमा और सम्मानजनक भाषा का पुनर्जागरण हो। नेताओं को अपने भाषणों और सार्वजनिक संवाद में संयम, विवेक और शालीनता बनाए रखना होगा। यह केवल राजनीतिक नैतिकता की आवश्यकता नहीं, बल्कि यह लोकतंत्र और समाज की आत्मा की रक्षा का माध्यम भी है।

लोकतंत्र में स्वस्थ संवाद के बिना समाज का विकास असंभव है। राजनीतिक असहमति को अभद्रता में बदलने की प्रवृत्ति समाज को कमजोर करती है। अतः सभी राजनीतिक दलों, नेताओं और समाज के जागरूक नागरिकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भाषा और संवाद का स्तर उच्च बना रहे। यह केवल शब्दों का संघर्ष नहीं, बल्कि समाज की नैतिकता, संस्कार और लोकतांत्रिक मूल्य संरचना की रक्षा है।

अंततः, लोकतंत्र केवल कानून और संविधान तक सीमित नहीं है। यह समाज की नैतिक चेतना, संवाद की शालीनता और नेतृत्व की जिम्मेदारी पर भी आधारित है। जब राजनीतिक भाषा गरिमामय होगी, तभी लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति और समाज की एकता सुरक्षित रह सकेगी। आज समय है कि हम सब मिलकर राजनीति में भाषा की गरिमा की पुनर्स्थापना करें, ताकि लोकतंत्र की आत्मा स्वस्थ और समाज का भविष्य उज्जवल बना रहे।

ट्रंप के टैरिफ के जवाब में डॉ. अशोक मित्तल की स्वदेशी 2.0 की जोरदार अपील का देशभर में हुआ स्वागत

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली: आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद और लवली प्रोफेसनल यूनिवर्सिटी के फाउंडर, चांसलर डॉ. अशोक कुमार मित्तल ने LPU कैंपस में सभी अमेरिकी सॉफ्ट ड्रिंक्स की बिक्री पर रोक लगा दी है। उन्होंने यह कदम उठाकर ₹स्वदेशी 2.0₹ अभियान की शुरुआत की है और सभी भारतीयों से अपील की है कि वे अमेरिकी प्रोडक्ट्स का बहिष्कार करें और इस आंदोलन का हिस्सा बनें। यह अभियान डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर थोपे गए टैरिफ का जवाब है।

यह कदम अमेरिका के उस 'अनुचित' फैसले के जवाब में उठाया गया है, जिसमें ट्रंप ने भारतीय सामान पर टैरिफ दोगुना कर दिया है। इससे कुल टैरिफ बढ़ोत्तरी 50% हो गई है। यह टैरिफ दुनिया के किसी भी देश पर अमेरिका द्वारा लगाए गए सबसे ज्यादा टैरिफ में से एक है।

नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में मीडिया से बात करते हुए डॉ. मित्तल ने ट्रंप प्रशासन की ₹दोहरी नीति और दबाव बनाने की राजनीति₹ की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा, "अमेरिका और उसके यूरोपीय साथी आज भी रूस से तेल खरीद रहे हैं, लेकिन भारत को केवल इसलिए निशाना बनाया जा रहा है क्योंकि वह अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दे रहा है। LPU 40,000 छात्रों वाली भारत की सबसे बड़ी प्राइवेट यूनिवर्सिटी है। अब LPU ने अमेरिकी कंपनियों के उत्पादों का बायकॉट लागू कर दिया है। मुझे गर्व है कि इस आंदोलन को देशभर से जबरदस्त समर्थन मिल रहा है!"

डॉ. मित्तल ने ₹स्वदेशी 2.0₹ का आह्वान किया है और सभी भारतीयों से अमेरिकी प्रोडक्ट्स का बहिष्कार करने की अपील की है। उन्होंने कहा, "LPU में अमेरिकी सॉफ्ट ड्रिंक्स पर बैन लगाकर हम दुनिया को यह स्पष्ट संदेश देना चाहते हैं कि भारत किसी भी अनुचित आदेश के आगे नहीं झुकेगा।" आप सांसद डॉ मित्तल ने यह बात राजघाट (महात्मा गांधी जी की समाधि) पर पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद लेने के बाद बैन की घोषणा करते समय कही।

राजघाट से बोलते हुए डॉ. मित्तल ने कहा, "1905 में स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटिश कपड़ों और सामान का बहिष्कार करके आयात को काफी हद तक कम कर दिया था। अगर हमारे पूर्वज यह काम गुलामी के समय कर सकते थे, तो हम आज क्यों नहीं कर सकते? मुझे लगता है कि अमेरिका ने भारत की ताकत और संकल्प को कम आंका है। अब समय आ गया है कि हम उन्हें अपनी असली ताक़त और संकल्प दिखाएँ।"

गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर डॉ. मित्तल ने 1905 के स्वदेशी आंदोलन के नायकों जैसे बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल, अरविंदो घोष और अन्य लोगों को याद किया। उन्होंने कहा कि सौ साल से भी पहले

तिलक जी ने गणेश उत्सव को सांस्कृतिक एकता और जनआंदोलन का मंच बना दिया था ताकि ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा सके। उन्होंने कहा, "मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि आज गणेश चतुर्थी के दिन मैं स्वदेशी 2.0 की शुरुआत कर रहा हूँ।"

अपने गृह राज्य पंजाब की बात करते हुए डॉ. अशोक मित्तल ने कहा कि अमेरिकी टैरिफ उन सेक्टर्स को सीधे प्रभावित कर रहे हैं, जिनमें पंजाब दुनिया भर में आगे है। पंजाब अमेरिका को कई प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट करता है, जैसे हैंड टूल्स, टेक्सटाइल और गारमेंट्स, खेलों का सामान, ट्रैक्टर और कृषि उत्पाद आदि।

अमेरिका जब भारत पर ज्यादा टैरिफ लगाकर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है, तो डॉ. मित्तल जैसी आवाज़ें राष्ट्रीय हित की रक्षा के मजबूत संकल्प को दर्शाती हैं। एक राष्ट्रवादी और सच्चे देशभक्त के रूप में डॉ. मित्तल ने हमेशा भारत को सबसे पहले रखा है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान की आतंकवाद को बढ़ावा देने वाली भूमिका को उजागर करने के लिए डॉ. मित्तल रूस, स्लोवेनिया, लातविया, स्पेन और ग्रीस जाने वाले सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे।

डॉ मित्तल के नेतृत्व में लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी ने तुर्किये और अज़रबैजान की संस्थाओं के साथ सभी MoU खत्म कर दिए, क्योंकि इन दोनों देशों ने पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान का समर्थन किया था।

मई 2025 में डॉ. मित्तल ने 'जय जवान स्कॉलरशिप' की घोषणा भी की। इस स्कॉलरशिप के तहत करीब 22 लाख सशस्त्र बलों (आर्मी) और अर्धसैनिक बलों (पैरामिलिट्री) के जवानों को LPU ऑनलाइन प्रोग्राम्स में दाखिला लेने पर 100% ट्यूशन फीस माफ की जाएगी। यह स्कॉलरशिप हमारे जवानों की सेवाओं के प्रति आभार जताने का प्रतीक है।

स्वदेशी 2.0 के आह्वान के साथ डॉ. मित्तल आर्थिक अन्याय के खिलाफ और भारत की गरिमा की रक्षा में दुनिया के मंच पर सबसे मजबूत आवाज़ों में से एक बन गए हैं। इससे पहले डॉ मित्तल ने ट्रंप को एक ओपन लेटर भी लिखा था। उन्होंने यह ओपन लेटर 7 अगस्त 2025 को तब लिखा था, जब ट्रंप प्रशासन ने 6 अगस्त 2025 को अतिरिक्त टैरिफ लगाने की घोषणा की थी।

एक अनूठा अनुभव - वास्तविक त्वचा आत्मविश्वास, प्रभावशाली आवाज़ों और नीम की कालजयी शक्ति का संगम

मुख्य संवाददाता

मुंबई पिछले 25 वर्षों से अधिक समय से हिमालया वेलनेस नीम की शक्ति के माध्यम से पिंपल और मुहाँसों से जूझ रहे लाखों युवा भारतीयों के लिए विश्वसनीय साथी रहा है।

इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए, ब्रांड ने त्वचा की देखभाल और आत्मविश्वास के बारे में एक महत्वपूर्ण बातचीत शुरू करने के लिए, पिंपल एक्ने पॉजिटिविटी डे से पहले, ताज लैंड्स एंड में अपने पहले 'वर्ल्ड ऑफ नीम' कार्यक्रम का आयोजन किया।

पिंपल एक्ने पॉज़िटिविटी डे से पहले यह आयोजन इसलिए किया गया ताकि त्वचा की देखभाल और -आत्मविश्वास पर एक महत्वपूर्ण संवाद शुरू किया जा सके।

भारत में ही 20 करोड़ से अधिक किशोर और युवा पिंपल और मुहाँसों की समस्या से जूझ रहे हैं। यही कारण है कि पिंपल एक्ने पॉज़िटिविटी आयोजित किया जा रहा है ताकि कलंक को खत्म करने, आत्मविश्वास को बढ़ावा देने और लोगों को को पिंपल व मुहाँसों से निपटने के सरल एवं प्रभावी उपायों के बारे में जागरूक किया जा सके।

'वर्ल्ड ऑफ़ नीम' को आज के युवाओं से जुड़ाव महसूस कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया था। इस कार्यक्रम में दिखाया गया कि कैसे त्वचा की देखभाल सरल, प्रभावी और समग्र हो सकती है, साथ ही पिंपल और मुहाँसों से जुड़े कलंक को भी खत्म किया जा सकता है।

कार्यक्रम में पिंपल और त्वचा के प्रति आत्मविश्वास के बारे में एक इंटरैक्टिव पैनल चर्चा हुई, जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध त्वचा विशेषज्ञ, कॉस्मेटोलॉजिस्ट और एस्थेटिक मेडिसिन एक्सपर्ट डॉ. रश्मि शेट्टी ने किया। उन्होंने आम मिथकों पर प्रकाश डालते हुए समग्र देखभाल के महत्व पर ज़ोर दिया।

वहीं लापता लेडीज़ फ़िल्म की प्रमुख अभिनेत्री रही सेलिब्रिटी नितांशि गोयल ने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। उन्होंने यह साबित किया कि पिंपल बढ़ती उम्र का एक स्वाभाविक हिस्सा है और इसे छुपाने की आवश्यकता नहीं है। दोनों ने मिलकर युवाओं को यह संदेश दिया कि वे अपनी त्वचा को आत्मविश्वास और गर्व के साथ अपनाएँ।

यह नवाचार इस बात को और मजबूती देता है कि हिमालया आज भी क्यों भारत का नंबर 1 फेसवॉश ब्रांड और पिंपल-प्रोन स्किन के लिए अग्रणी समाधान बना हुआ है, जिसे उसकी कोमलता और प्रकृति-आधारित भरोसे के लिए पसंद किया जाता है।

राजेश कृष्णमूर्ति, बिज़नेस डायरेक्टर – कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिविज़न, भारत, हिमालया वेलनेस ने अपने विचार साझा करते हुए कहा, "हिमालया वेलनेस में हम मानते हैं कि स्किनकेयर कोमल, प्रभावी और कलंक-मुक्त होना चाहिए। पिछले 25 वर्षों से हमारा नीम फेसवॉश दैनिक देखभाल का पर्याय रहा है। नए '5-पार्ट्स ऑफ़ नीम' फ़ॉर्म्युलेशन के साथ हम इस विरासत को और मजबूत बना रहे हैं और लोगों, खासकर युवाओं को आत्मविश्वास के साथ अपनी त्वचा को अपनाने के लिए सशक्त बना रहे हैं।"

रागिनी हरिहरन, मार्केटिंग डायरेक्टर – ब्यूटी एंड पर्सनल केयर, हिमालया वेलनेस ने कहा, " आज के उपभोक्ता, विशेषकर जेन जेड, प्रकृति से प्रेरित व विज्ञान आधारित समाधानों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। यह आयोजन ठीक इसी बात को दर्शाता है - यह दिखाते हुए कि पीढ़ियों से भरोसेमंद नीम कैसे आज भी ब्यूटी और पर्सनल केयर में सार्थक बदलाव लाने में प्रासंगिक बना हुआ है। इस आयोजन के माध्यम से हम त्वचा से जुड़े हर अनुभव को साझा कर रहे है और ऐसा माहौल बना रहे है जहाँ त्वचा की देखभाल कोमल, प्रभावी और देखभाल पर आधारित हो।"

वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा- नैशनल मीडिया रजिस्टर का भव्य शुभारंभ

मुख्य संवाददाता

"वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया", मीडिया कर्मियों का एक अग्रणीय संगठन है। भारतभर में इस संगठन के 30,000 से अधिक सदस्य हैं। यह संगठन भारतीय मजदूर से संबद्ध है। इस संगठन का शुभारंभ 2017 में किया गया। सभी सदस्य आपस में संपर्क बढ़ाकर एक दूसरे के काम में सहयोग बढ़ा सकें और जरूरत पड़ने पर सहायता भी कर सकें। 8 साल की अपनी यात्रा में विषम परिस्थितियों में इस संगठन ने पत्रकारों के हित में की कदम उठाए इनमें प्रमुख है मीडिया कर्मियों को पत्रकारों की श्रेणी में रखवाना। भारत में यत्र तत्र कार्यरत पत्रकारों का एक डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाना ताकि देशभर के पत्रकारों से संपर्क करने का एक सुलभ सुविधा मिल सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया ने शुक्रवार 29 अगस्त 2025 को नई दिल्लीके मंडी हाउस स्थित हरियाणा भवन के सभागार में नैशनल मीडिया रजिस्टर के शुभारंभ समारोह का आयोजन किया। इस समारोह की अध्यक्षता WJI के राष्ट्रीय महासचिव नरेंद्र भंडारी ने की। मंच पर उनके साथ WJI के उपाध्यक्ष संजय उपाध्याय, विशिष्ठ अतिथि वरिष्ठ पत्रकार सी. एम. पपनै, सुरेंद्र कुमार, मनोज मिश्रा, परमानंद पांडेय, ज्ञानेन्द्र, पार्थसारथि थपलियाल विराजमान थे। वर्किंग जर्नलिस्ट ऑफ़ इंडिया नेशनल एडवाइजर सुरेंद्र वर्मा ने बताया कि पत्रकारों के लिए एकता और नेशनल मीडिया रजिस्टर कितना जरूरी है। इस रजिस्टर के जरिए हम ऑल इंडिया लेवल पर कहीं भी किसी भी पत्रकार साथी से उसे एरिया की जानकारी हासिल कर सकते हैं और मुसीबत के समय उनसे सहायता भी मांग सकते हैं। इस समारोह के आरंभ में अतिथियों का परिचय तथा उनका स्वागत किया गया। हाल ही में वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया की दिल्ली इकाई की नई टीम गठित की गई थी। इस टीम की घोषणा एवं परिचय इस समारोह में

किया गया

उपस्थित सभी पत्रकार बंधु उत्सुकता से नेशनल मीडिया रजिस्टर का शुभारंभ देखने के लिए प्रतीक्षा में थे। हर्षोल्लास के साथ डिजिटल माध्यम से नेशनल मीडिया रजिस्टर का शुभारंभ किया गया। सभी ने करतल ध्वनि से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। राष्ट्रीय महा सचिव नरेंद्र भंडारी ने नेशनल मीडिया रजिस्टर के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस रजिस्टर में सम्पूर्ण भारत के पत्रकारों के नाम पते और उनके कार्य से संबंधी समस्त सूचनाएं उपलब्ध होंगी 30 अगस्त से वेबसाइट पर सभी पत्रकार अपनी जानकारियां इसमें दे पाएंगे। उन्होंने बताया कि नेशनल मीडिया रजिस्टर को बनाने वाली तकनीकी टीम के प्रमुख तीर्थंकर सरकार का परिचय कराया और उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर तीर्थंकर सरकार ने व्यापक रूप से नेशन मीडिया रजिस्टर के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वेबसाइट में 12 भाषाओं में सूचनाएं मिलती रहेंगी। राष्ट्रीय महासचिव भंडारी ने नेशनल मीडिया रजिस्टर बनाने वाली टीम के प्रमुख तीर्थंकर सरकार और उनकी टीम का परिचय कराया और उनके कार्य की सराहना की। इस अवसर पर अनेक पत्रकारों ने नैशनल मीडिया रजिस्टर की सराहना करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ पत्रकार परमानंद पांडेय ने नेशनल मीडिया रजिस्टर शुभारंभ की सराहना की और WJI को बधाई दी। अपना विचार व्यक्त करते हुए बताया कि प्रिंट मीडिया का समय अधिक नहीं रहा है। डिजिटल मीडिया ने पत्रकारिता की दिशा बदल दी। आने वाले समय में पत्रकारिता का रूप और स्वरूप बदल जाएगा। उसके लिए अभी से तैयारी कानी चाहिए। यह रजिस्टर बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

वरिष्ठ पत्रकार मनोज मिश्रा कि पत्रकारों से संबंधित जानकारी का नेशनल रजिस्टर शुरू होना एक महत्वपूर्ण बात है। इसका व्यापक प्रचार प्रसार होना चाहिए ताकि सरकार तक यह विचार पहुंच सके। वरिष्ठ पत्रकार सी एम पपनै ने उस सोच को महत्वपूर्ण बताया जो नैशनल मीडिया रजिस्टर शुरू करने तक पहुंच पाये। उनका लंबा अनुभव रहा है। पत्रकारिता जिस मोड़ तक पहुंच गई है वह सोचनीय है। पत्रकारों का जीवन कठिन हो गया है। जो वर्ग दूसरों की सूचना देता है उसका समाचार क्या है? इसे समझना कठिन है।

धन्यवाद ज्ञापन के बाद हुआ। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में "राष्ट्रीय विकास में मीडिया की भूमिका" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन था।

नि:संदेह भारी लम्बे मानसून के चलते जलभराव हुआ है पर सीएम रेखा गुप्ता सरकार ने सुनिश्चित किया है कि जल निकासी तुरंत हो : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि अनेक वर्ष बाद दिल्ली ने एक लम्बा मानसून का अनुभव किया है, समय से पूर्व लगभग 20 जून से प्रारम्भ मानसून आज अगस्त अंत तक लगातार चल रहा है पर एक दिन भी जनजीवन रूका नहीं है।

सचदेवा ने कहा है कि नि:संदेह मानसून में थोड़े बहुत जलभराव का सामना तो दिल्ली वालों को करना पड़ा है पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की तत्परता के चलते जलबोर्ड, लोकनिर्माण विभाग, डी.डी.ए., एन.डी.एम.सी. सहित सभी सम्बंधित एजेंसियों ने पंप लगाकर एवं कर्मचारी नियुक्त कर जल निकासी सुनिश्चित करने का प्रबंध सुनिश्चित किया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि मानसून को लेकर आम आदमी पार्टी नेताओं अरविंद केजरीवाल, आतिशी मार्लेना एवं सौरभ भारद्वाज के आरोप प्रत्यारोप उनके लिए शर्मनाक हैं।

काश जलभराव का दोष भाजपा सरकार पर लगाने से पहले टीम अरविंद केजरीवाल दिल्ली की जनता का बताती कि दस साल सत्ता में रहकर उनकी सरकार ने दिल्ली के सीवर मास्टर प्लान पर क्या काम किया।

सचदेवा ने कहा है कि ₹आप₹ नेता भाजपा सरकार पर कोई भी आरोप लगाने से पहले यह भी ध्यान रखें कि दिल्ली वाले यह भूले नहीं है कि गत वर्ष सामान्य मानसून के बावजूद दिल्ली में लगभग 50 लोगों जिनमें 10 तो बच्चे थे की मृत्यु जलभराव में डूबने या सड़क पर बिजली करंट लगने से हुई थी।

राधाष्टमी (31 अगस्त 2025) पर विशेष: राधा कृष्ण, कृष्ण हैं राधा, एक रूप दोऊ प्रीत अगाधा

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

राधा रानी परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण की अचिंत शक्ति हैं।उनकी कृपा से ही कृष्ण-तत्व की प्राप्ति होती है।इसीलिए इनमें से किसी एक की उपासना से भी दोनों की प्राप्ति सुनिश्चित है। कृष्ण की शक्ति हैं राधा, कृष्ण की आत्मा हैं राधा। कृष्ण शब्द हैं तो राधा अर्थ, कृष्ण गीत हैं तो राधा संगीत, कृष्ण वंशी हैं तो राधा स्वर, कृष्ण समुद्र हैं तो राधा तरंग, कृष्ण फूल हैं तो राधा उसकी सुगन्ध। राधा के आराधकों ने कृष्ण और राधा का एकाकार स्वरूप दर्शाने के अनेक प्रयास किये हैं। सन्त-महात्माओं ने कृष्ण तत्व व राधा तत्व को अभिन्न माना है। अनेक विद्वानों की यह मान्यता है कि श्रीकृष्ण और राधा अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। पहली समानता तो यही है कि इन दोनों का जन्म भाद्रपद मास की अष्टमी को हुआ।कृष्ण का जन्म कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ, राधा का जन्म शुक्ल पक्ष की अष्टमी को। ₹नारद पंचरात्र₹ के ज्ञानामृत सार के अनुसार राधा और कृष्ण एक ही शक्ति के दो रूप ही हैं। वहीं चैतन्य सम्प्रदाय (गौड़ीय सम्प्रदाय) भी राधा और कृष्ण में भिन्नता को नहीं मानता है।भगवान श्रीकृष्ण की एक पराशक्ति है, जिसका नाम आल्हादिनी शक्ति राधा है। उसे स्वरूप शक्ति भी कहते हैं। वे श्रीकृष्ण से अभिन्न हैं। यह भी मान्यता है कि ₹श्रीकृष्ण₹ में ₹श्री₹ शब्द राधा रानी के लिए प्रयुक्त हुआ है। सूरदास जी ने अपने ग्रन्थ ₹सूरसागर₹ के एक दोहे में यह लिखा है कि श्रीकृष्ण की सोलह हजार एक सौ रानियाँ मात्र देह हैं, जबकि उनकी आत्मा राधा हैं। कहा भी गया है- राधा कृष्ण, कृष्ण हैं राधा। एक रूप दोऊ प्रीत अगाधा।।

जगतजननी राधा को भगवान श्रीकृष्ण की स्वरूपभूता आल्हादिनी शक्ति माना गया है। ₹पद्मपुराण₹ में कहा गया है कि राधा, श्रीकृष्ण की आत्मा हैं। महर्षि वेदव्यास जी ने लिखा है कि श्रीकृष्ण आत्माराम हैं और उनकी आत्मा राधा हैं। वात्सल्य, सख्य और श्रृंगार की रस त्रिपुटि का प्रशस्त आधार लेकर अष्टछाप के भक्त हृदय महाकवियों ने जिस महाभाव की लोकमंगल प्रतिष्ठा भक्ति काव्य जगत में की गई है, उसकी मूल प्रेरक विधायिका शक्ति राधा ही हैं। वह रस की अंतः श्रोत भी हैं और रस की अतुल महानिधि भी। उनकी इस रस निधिता में समग्र शक्तियाँ अंतर्निहित हैं। संस्कृत साहित्य के अंदर राधा को काव्य और भक्ति दोनों ही क्षेत्रों में समादर देते हुए प्रेयसी, नायिका और आराध्या आदि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण की वंशी के अवतार श्रीहित हरिवंश महाप्रभु ने तो राधा को भगवान श्रीकृष्ण से भी अधिक प्रधानता दी है। उन्होंने उन्हें अपना इष्ट और गुरु दोनों ही माना है। यह तक कि उन्होंने अपने सम्प्रदाय तक का नाम ₹श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय₹ रखा। जो भी हो ब्रज में राधा की श्रीकृष्ण से भी अधिक मान्यता है। यहां तक कहा जाता है कि उन्होंने यशोदानंदन तक को पूर्णत्व प्रदान किया। वस्तुतः यहाँ चहुंओर उनका ही साम्राज्य है। यहाँ प्रत्येक शुभकार्य का श्रीगणेश ₹श्री राधे₹ के स्मरण से एवं पारस्परिक अभिवादन ₹राधे-राधे₹ कहकर ही किया जाता है। हो भी क्यों न, राधा लोक पितामह ब्रह्मा एवं भगवान शिव तक की भी वन्दनीय और उपास्य हैं।

जगदसृष्टा ब्रह्मा जी द्वारा वरदान प्राप्त कर राजा सुचन्द्र एवं उनकी पत्नी कलावती कालांतर में बृषभानु एवं कीर्तिदा हुए। इन्हीं की पुत्री के रूप में राधा रानी ने आज से 5000 वर्ष से भी अधिक पूर्व मथुरा जिले के गोकुल-महावन कस्बे के निकट रावल ग्राम में जन्म लिया था। बताया जाता है कि वृषभानु एवं कीर्तिदा को राधा रानी की प्राप्ति की यमुना महारानी की घोर तपस्या करने के बाद हुई थी। राधा रानी के जन्म के सम्बंध में यह भी कहा जाता है कि वृषभानु भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को जब एक सरोवर के पास से गुजर रहे थे तब उन्हें मध्याह्न 12 बजे एक सघन कुंज की झुकी वृक्षावलि के पास एक बालिका कमल के फूल पर तैरती हुई मिली। जिसे उन्होंने अपनी पुत्री के रूप में अपना लिया।

बाद को वृषभानु कंस के अत्याचारों से तंग होकर रावल से बरसाना चले गए। एक बार जब कंस वृषभानु जी को मारने के लिए अपनी सेना सहित बरसाना की ओर गया तो वह राधा रानी की दिव्य शक्ति से बरसाना की सीमा में घुसते ही स्त्री बन गया और उसकी सारी सेना पत्थर बन गयी। एक दिन जब देवर्षि नारद विचरण करते हुए बरसाना आये तो उन्होंने उसे पहचान लिया। उन्होंने उससे इस स्वरूप का कारण पूछा। कंस ने उनके पैरों पर पड़कर सारी घटना सुनाई। नारद जी ने ध्यान लगाकर इसे राधा रानी की महिमा बताया। अतः वह इसे वृषभानु जी के महल में ले गए। वहां जाकर कंस बहुत गिड़गिड़ाया और उनसे अपने किये हुए कि क्षमा मांगी। इस पर राधा रानी ने उससे यह कहा कि अब तुम यहाँ छः महीने तक रहो और गोबर के उपले थापकर बरसाना की गोपियों की इस कार्य मे मदद करो। छः महीने की समाप्ति के अंतिम दिन तुम बृषभानु कुंड में स्नान कर चुपचाप मथुरा चले जाना। उसके बाद तुम स्वतः अपने पुरूष भेष में आ जाओगे। कंस ने ऐसा ही किया। छः माह के अंतिम दिन उसने जैसे ही वृषभानु कुंड में स्नान किया वह अपने वास्तविक भेष में आ गया। साथ ही उसने कुंड का जल अपनी सेना पर छिड़का, जिससे उसकी सेना भी जीवित हो गयी।

फिर कभी उसने बरसाना की ओर मुड़कर नही देखा।

रस-साम्राज्ञी राधा रानी ने नंदगांव में नंद बाबा के पुत्र के रूप रह रहे भगवान श्रीकृष्ण के साथ समूचे ब्रज में बड़ी ही अलौकिक लीलाएं कीं। जिन्हें की पुराणों में माया के आवरण से रहित जीव का ब्रह्म के साथ विलास बताया गया है। इन लीलाओं का रसास्वादन करने के लिए लोक पितामह ब्रह्मा तक लालायित रहे। अतैव उन्होंने एक दिन भगवान श्रीकृष्ण से यह प्रार्थना की कि वह उनकी कुंज लीलाओं का दर्शन करना चाहते हैं। इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने उनसे यह कहा कि तो चलो आप बरसाना में ब्रह्मेश्वर पर्वत के रूप में विराजमान हो जाओ। मैं आपकी ही गोद में अपनी समस्त लीलाएं करूँगा। इस पर ब्रह्मा जी अत्यंत प्रसन्न होकर बरसाना में आ विराजे।

कालांतर में एक बार जब देवर्षि नारद के अवतार ब्रजाचार्य नारायणभट्ट बरसाना स्थित ब्रहमेश्वर गिरि नामक पर्वत पर गोपी भाव से अकेले विचरण कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि राधा रानी भी भगवान श्रीकृष्ण के साथ विचरण कर रही हैं। भट्ट जी इन दोनों के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़े हो गये। इस पर राधा रानी ने उनसे यह कहा कि इस पर्वत में मेरी एक प्रतिमा विराजित है। उसे तुम अर्ध रात्रि में निकाल कर उसकी सेवा करो। इतना कहकर वह अंतर्ध्यान हो गईं। भट्ट जी ने उनके कहे अनुसार प्रतिमा को खोज निकाला। साथ ही वह इस प्रतिमा का अभिषेक आदि कर पूजन-अर्चन करने लग गए। यह घटना सम्वत 1626 की आषाढ़ शुक्ल द्वितीया की है।

इसके बाद ब्रह्मेश्वर पर्वत पर राधा रानी का भव्य मंदिर बनवाया गया, जिसे कि श्रीजी का मंदिर या लाड़लि महल भी कहते हैं। इस मंदिर की अत्यधिक मान्यता है। कहा जाता है कि यदि कोई व्यक्ति ब्रज में आकर और बरसाना जाकर राधा रानी मन्दिर के दर्शन कर राधा-कृष्ण का स्मरण नही करता है, तो उसका ब्रज में आना निरर्थक है।

राधा रानी भगवान श्रीकृष्ण का अभिन्न अंग थीं। वह आयु में श्रीकृष्ण से 11 माह बड़ी थीं। उनकी भगवान श्रीकृष्ण में अनन्य आस्था थी। वह उनके लिए हर क्षण अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहतीं थीं। ब्रज की जीवन धन राधा रानी की महिमा अपरंपार है विभिन्न पुराण, धार्मिक ग्रंथ एवं अनेकानेक विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकें उनकी यशोगाथा से भरी हुयी हैं।

ब्रज में यह मान्यता है कि राधा का नाम लेने से ही सारे अधूरे काम स्वतः पूरे हो जाते हैं। यह भी कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति राधा को त्याग कर केवल भगवान श्रीकृष्ण का भजन करे तो उसका स्वप्न में भी कल्याण सम्भव नहीं है। वस्तुतः राधा रानी का नाम सम्पूर्ण अमंगल को नास करने वाला है।

राधावल्लभीय रसिक सन्त श्रीहित ध्रुवदास जी महाराज ने राधा रानी के एक सौ एक नाम बताते हुए यह कहा है कि जिस भाग्यशाली भक्त की जिह्वा इन नामों का गान करेगी, वह निश्चित ही परमशान्ति को प्राप्त करेगा। राधा रानी को भगवान श्रीकृष्ण से भी बड़ा बताया गया है। कहा गया है कि-

राधा तू बड़भागिनी, कौन तपस्या कीन्ह।
तीन लोक तारन तरन, सो तेरे आधीन।।
श्री राधा चालीसा में यह भी कहा गया है-

"राधा नाम लेई जो कोई, सहजहि दामोदर बस होई। यशुमति नन्दन पीछै फिरिहें, जे कोई राधा नाम सुमिरिहै।।"

बरसाना के ब्रह्मेश्वर गिरि स्थित श्रीजी मन्दिर में सन 1545 से निरन्तर प्रति वर्ष राधा रानी का जन्म दिवस राधाष्टमी महोत्सव के रूप में अत्यधिक धूमधाम के साथ मनाया जाता है। राधाष्टमी की पूर्व रात्रि से ही श्रीजी मन्दिर में ₹राधा-राधा₹ की रट लगाकर रात्रि जागरण और पद गायन होता है। प्रातः5 बजे मन्दिर में स्थापित उनकी मनोहारी प्रतिमा को सफेद साड़ी पहनाकर मन्दिर के गोस्वामियों द्वारा सवा मन दूध, सवा मन दही, सवा मन देशी घी, सवा मन बूरा आदि से बने पंचामृत के द्वारा अत्यंत विधि-विधान के साथ वैदिक मंत्रों के मध्य अभिषेक किया जाता है।चूंकि राधा रानी का प्राकट्य मूल नक्षत्र में हुआ था इसलिए मूल शान्ति हेतु उनके अभिषेक में प्रयुक्त होने वाले पंचामृत में 27 कूंओं का जल, 27 ब्रज के पवित्र स्थानों की रज एवं 27 वृक्षों की पत्तियाँ आदि भी मिला दीं जाती हैं। इसके बाद राधा रानी की महाआरती एवं उनके स्वर्ण पालने में दर्शन होते हैं। ततपश्चात बरसाना एवं नंदगांव के गोस्वामीगण राधा रानी एवं भगवान श्रीकृष्ण के प्रतीक के रूप में आमने-सामने बैठकर सामूहिक बधाई समाज गायन करते हैं।जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं-

"आज बरसाने बजति बधाई, भाग बड़े रानी कीरति के जिन यह कन्या जाई.....।"

एवं "भादौं सुदि आठें उजियारी, श्रीवृषभानु गोप के मन्दिर प्रगटी राधा प्यारी.....।

आदि पदों को बड़ी ही धूम के साथ गाया जाता है। साथ ही "राधा प्यारी ने जन्म लियौ है" की जय घोष के साथ दही में हल्दी व केशर डालकर अत्यंत हर्षोल्लास के साथ एक दूसरे पर फेंका जाता है। जिसे "दधिकांदा" कहते हैं। साथ ही रुपये, बर्तन व कपड़े आदि भी लुटाये जाते हैं। सारा मन्दिर "राधा रानी की जय, बरसाने वारी की जय" से गूंज उठता है। मध्यान्ह में राजभोग आरती होती है। भक्तगण न केवल मन्दिर की अपितु समूचे गहवर वन की नाच-गाकर परिक्रमा करते हैं।

सांय काल राधा रानी का डोल मन्दिर की 250 सीढ़ियां उतरकर मन्दिर के नीचे छतरी पर आता है।यहाँ पर भक्तगण राधा रानी के मनोहारी विग्रह के दर्शन करते हैं। साथ ही गोस्वामी परिवार की किसी विवाहित स्त्री के द्वारा उनकी आरती की जाती है। इसके बाद राधा रानी के अभिषेक के समय प्रयुक्त साड़ी के चीर एवं मालपूए भक्तगणों को बतौर प्रसाद बाँटे जाते हैं। इस अवसर पर श्रीजी मन्दिर की अनुपम व भव्य सजावट की जाती है।ततपश्चात समाज गायन होता है। इसके अलावा वृषभानु मन्दिर में भी बधाई के पद गाये जाते हैं। राधा रानी का डोल रात्रि को मन्दिर में वापिस आ जाता है। उसके बाद श्रीजी मन्दिर के सेवायत गोस्वामी की विवाहित बेटी या बहन राधा रानी की पुनः आरती उतारती है।

इस अवसर पर समूचे बरसाना में राधा अष्टमी की विकट धूम रहती है। इस पुण्य-पर्व में भाग लेने हेतु दूर-दराज से लाखों लोग बरसाना पहुंचते हैं। लोग-बागों के टोल के टोल पूरे बरसाना की पद गायन करते हुए परिक्रमा करते हैं। इस अवसर पर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सारा बरसाना ₹राधामय₹ हो गया है। तमाम भजन गायक जगह-जगह अपने भजनों के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। जगह-जगह कथा-भागवत, रासलीलाओं एवं दंगल आदि के कार्यक्रम होते हैं। साथ ही यहाँ पर विशाल भंडारे भी होते हैं, जिनमें कि बरसाना आने वालों को भरपेट नाना प्रकार के व्यंजन खिलाए जाते हैं। इस अवसर पर लोग-बाग जी भरकर रुपये-पैसे एवं अन्य वस्तुयें लुटाते हैं। समूचे ब्रजमण्डल के अलावा दूर-दराज के प्रायः सभी सिद्ध सन्त राधा रानी के प्राकट्य महोत्सव पर बरसाना पहुँचते हैं।

बरसाना वासी अपने घरों की बिजली के रंग-बिरंगे बल्वों, वन्दनवारों एवं फूलों आदि से नयनाभिराम सजावट करते हैं। सारे का सारा बरसाना यहां आए हुए लोग-बागों से इस कदर पट जाता है कि चहुंओर मानव समुद्र हिलोरें सी लेता हुआ दिखाई देता है।

इसके बाद एक सप्ताह तक बरसाना व उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों पर प्राचीन रासलीलाओं का आयोजन किया जाता है। लोक पारम्परिक भाषा में इसे ₹बूढ़ी लीला₹ के नाम से पुकारा जाता है। इस दौरान नवमी को होने वाली रासलीला में भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप मोरकुटी पर मोर का रूप धारण करके नाचते हैं और राधा रानी की स्वरूप उन्हें लड्डुओं का भोग लगाती हैं। दसवीं को विलासगढ़ पर ₹शंकर लीला₹ होती है। एकादशी को सांखरी खोर ₹चोटी बन्धन₹ लीला होती है। इसी दिन सांयकाल प्रेम सरोवर (गाजीपुर) में राधा-कृष्ण के स्वरूप ₹जल विहार₹ की लीला करते हैं।द्वादशी को बरसाना के प्रियाकुण्ड पर श्रीकृष्ण के विवाह की लीला होती है और ₹जल विहार₹ के दर्शन होते हैं। अगले दिन बरसाना के राधा रानी मन्दिर में राधा रानी का छटी महोत्सव अत्यंत धूमधाम के साथ मनाया जाता है। पूर्णिमा को करहला में महारासलीला के दर्शन होते हैं।

राधा रानी की प्राकट्य स्थली रावल में भी राधाष्टमी तीन दिनों तक अत्यंत धूमधाम के साथ मनाई जाती है। इस मंदिर में राधा रानी के चरण दर्शन राधाष्टमी के अवसर पर अभिषेक के समय वर्ष भर में केवल इसी दिन एक बार होते हैं। यहां मध्याह्न 12 बजे मन्दिर के गर्भ गृह की पूजा व प्राकट्य उत्सव, अपरान्ह 2 बजे रासलीला एवं सांय काल यहां के गोकुलनाथ मन्दिर के गोस्वामियों द्वारा राधा रानी के श्रीविग्रह का पूजन होता है। रात्रि 8 बजे षष्टी पूजन किया जाता है। अगले दिन ₹बृषभानु उत्सव₹ के अंतर्गत झूलन के मनोरथ एवं बधाई गायन होता है।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी
(लेखक प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार हैं)
रमणरेती, वृन्दावन

साहित्यकार सम्मान समारोह व कवि सम्मेलन 31 अगस्त को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। ट्रांसपोर्ट नगर/मंडी समिति के पीछे मंशा टीला स्थित पं लटूर प्रधान फार्म हाउस में प्राग हरि साहित्यिक व आध्यात्मिक शोध संस्थान, जयपुर एवं ब्रजवानी जन सेवा समिति, ब्रज नगर (डीग) राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में राधाष्टमी के पावन अवसर पर साहित्यकार एवं पत्रकार सम्मान समारोह 31 अगस्त 2025 को प्रातः 10 बजे से आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए ब्रजवानी जन सेवा समिति के अध्यक्ष हरीश चंद्र शर्मा ₹हरि₹ ने बताया है कि कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्वाह्न 11 बजे सरस्वती वंदना के साथ होगा।साथ ही ₹रम गयौ मन वृंदावन मेंर ब्रजभाषा गीत संग्रह का विमोचन किया जाएगा।तत्पश्चात 11:30 बजे से सम्मान समारोह आयोजित होगा। इसके अलावा 12 बजे से 02:30 बजे तक कवि सम्मेलन का आयोजन होगा।जिसमें देश भर के कई प्रख्यात कवियों द्वारा काव्य पाठ किया जाएगा।

प्राग हरि साहित्यिक और आध्यात्मिक शोध संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष प्रोफेसर डॉक्टर सरोज गुप्ता (जयपुर) ने बताया है कि इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ओम प्रकाश पांडेय ₹निर्भय₹ करेंगें।साथ ही मुख्य अतिथि डॉक्टर ब्रज भूषण चतुर्वेदी एवं विशिष्ट अतिथि प्रख्यात साहित्यकार/ पत्रकार डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी व कन्हैया लाल सारस्वत होंगे।कार्यक्रम के संयोजक/संचालक प्रख्यात कवि अभिषेक ₹अमर₹ (ब्रज नगर,डीग) हैं।

उन्होंने बताया कि काव्य सम्मेलन में डॉ. आर.के. पाण्डेय (ओजस्वी गीतकार), सोहनलाल प्रेम (व्यंग्यकार), नानकचंद ₹नवीन₹ (गीतकार), भुवनेश चौहान ₹चिंतन₹ (गीतकार), सबरस मुरसानी (हास्यकवि), श्याम सिंह मधुर जघीना (गजलकार), विनीता गौतम (ओज कवि), श्रीमती रेनू उपाध्याय (गीतकार), हिमांशु भारद्वाज ₹नीतू₹ (गीतकार), प्रतीक्षा सुहानी (गीतकार), राजेन्द्र अनुरागी (कवि), आचार्य निर्मल (छंदकार), लोकेश सिंघल (व्यंग्यकार) एवं डॉ. राधाकांत शर्मा (कवि) आदि को आमंत्रित किया गया है।

कानपुर में प्रेमिका के भाई ने दोस्तों संग मिलकर की 16 साल के कुलदीप की हत्या, गिरफ्तार

15 वाँ भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन, शंघाई सहयोग संगठन- ड्रैगन-एलीफैंट फ्रेंडशिपः- बदलता एशियाई समीकरण और पश्चिम की बेचैनी

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर बदलते परिदृश्य में जापान में 29 30 अगस्त 2025 को 15 वाँ भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन, 31 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तक चीन के तियानजिन शहर में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में रूस,भारत, पाकिस्तान, कजाखस्तान, किर्गिजस्तान, ताजिकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, ईरान,बेलारूस तुर्की समेत 20 देशों के राष्ट्राध्यक्ष पहुंच रहे हैं। जिसमें चीन अपने रक्षा की ताकत दुनियाँ को दिखाएगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य आर्थिक परिदृश्य में अमेरिका ने अमेरिकी फर्स्ट नीति को प्रेशर देते हुए टैरिफ वार शुरू किया है,उसे देखतेहुए भारत चीन रूस गठबंधन की बहुत बड़ी भूमिका होने की संभावना है,रूस पहले से ही भारत का मित्र देश रहा है,भौगोलिक दृष्टि से:रूस एक महाद्वीपीय देश है जो यूरोप और एशिया -दोनों महाद्वीपों में फैला हुआ है। उसके लगभग 75 पर्सेंट भूभाग एशिया में आता है,जबकि उसकी 25 पेर्सेंट आबादी यूरोप वाले हिस्से में रहती है। इसलिए रूस को यूरो-एशियाई शक्ति कहा जाता है। राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से:रूस की सैन्य शक्ति, परमाणु हथियार, और एशिया के देशों (चीन, भारत, ईरान, मध्य एशिया) के साथ उसके रिश्ते उसे एशियाई भू-राजनीति का अहम हिस्सा बनाते हैं।रूस एशिया में ऊर्जा (तेल-गैस) का प्रमुख स्रोत है। एशिया में शक्ति-संतुलन (विशेषकर अमेरिका-चीन-भारत समीकरण) में रूस की भूमिका हमेशा महत्त्वपूर्ण रहती है। ठीक वैसे ही भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, और चीन की भी अपने क्षेत्रों में बहुत बड़ी दक्षतारखता है, तीनों देशों की शंघाई सहयोग संगठन में बड़ी भूमिका है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत रूस और चीन,सबसे बड़ी एशियाई शक्तियाँ, जब एक साथ आती हैं,तो पूरी दुनियाँ के लिए यह किसी बड़े भू-राजनीतिक भूकंप जैसा होगा।वैश्विक परिदृश्य-अमेरिका की बेचैनी और एशियाई गठबंधन- भविष्य का परिदृश्य, नई वैश्विक शक्ति-संतुलन की ओर।

साथियों बात अगर हम भारत- चीन की दोस्तीः एशियाई भू-राजनीति में नई लकीर की करें तो, भारत और चीन, दो सबसे बड़ी एशियाई शक्तियाँ, जब भी साथ आते हैं तो पूरी दुनियाँ के लिए यह किसी बड़े भू-राजनीतिक भूकंप जैसा होता है। लंबे समय से भारत-चीन के बीच मतभेद, सीमा विवाद और रणनीतिक अविश्वास रहा है, लेकिन जब भी दोनों राष्ट्र साझा मंच पर आते हैं, पश्चिमी दुनिया में बेचैनी बढ़ जाती है। अमेरिका और यूरोप मानते हैं कि ₹ड्रैगन- एलीफैंट फ्रेंडशिप₹ अगर गहरी हुई, तो यह न केवल एशिया बल्कि पूरी दुनियाँ के शक्ति संतुलन को हिला सकती है।डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका पहले से ही व्यापार युद्ध और टैरिफ नीतियों के ज़रिए चीन और भारत दोनों पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन भारत-चीन की संभावित नजदीकी उसके लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बन सकती है। एशिया की 2.7 अरब से अधिक की आबादी, दुनियाँ की तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ और संयुक्त सैन्य शक्ति, यदि सहयोग में बदल जाएँ तो पश्चिमी देशों की वर्चस्ववादी राजनीति को गंभीर चुनौती दे सकती हैं।यह तथ्य न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से अहम है बल्कि भू-राजनीतिक और सुरक्षा व्यवस्था में भी बड़ा असर डाल सकता है। यदि भारत और चीन तकनीकी सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा और व्यापारिक साझेदारी में हाथ मिलाते हैं, तो अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए एशिया में हस्तक्षेप करना और कठिन हो जाएगा। यही कारण है कि वाशिंगटन और लंदन से लेकर टोक्यो और पेरिस तक सभी की निगाहें भारत-चीन समीकरण पर टिकी हैं।

साथियों बात अगर हम वैश्विक परिदृश्यः अमेरिका की बेचैनी और एशियाई गठबंधन की करें तो,ट्रंप को सबसे बड़ा डर इस बात का है कि भारत-चीन की जुगलबंदी रूस के साथ मिलकर एक ऐसा त्रिकोण बना सकती है, जो अमेरिका की दशकों से चली आ रही वैश्विक प्रभुत्व की नींव हिला दे। भारत-रूस पहले से ही ऊर्जा, रक्षा और व्यापार में गहरे साझेदार हैं। चीन और रूस के बीच भी ₹नो लिमिट्स पार्टनरशिप₹ की चर्चा पिछले वर्षों में तेज़ हुई है। अगर इस समीकरण में भारत स्थायी रूप से जुड़ता है, तो यह अमेरिका और यूरोप की रणनीतिक योजनाओं को कमजोर कर देगा। इस संदर्भ में दो बड़े आयोजन खासतौर से चर्चा में हैं। पहला, जापान में 29-30 अगस्त 2025 को होने वाला 15वाँ भारत- जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन, जिसमें भारत की प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति बेहद अहम होगी। इस सम्मेलन का मकसद एशिया-प्रशांत क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना और तकनीकी व सुरक्षा सहयोग को बढ़ाना है। जापान भारत का करीबी मित्र है, लेकिन यदि भारत-चीन की दोस्ती गहरी होती है, तो जापान को अपनी रणनीति को संतुलित करने की चुनौती होगी।दूसरा बड़ा आयोजन है शंघाई सहयोग संगठन समिट, जो 31 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तक आयोजित होने जा रहा है। इसमें भारत, चीन और रूस के शीर्ष नेता एक मंच पर आएँगे। पश्चिमी देशों को सबसे अधिक चिंता इसी सम्मेलन से है, क्योंकि यह मंच पश्चिम-विरोधी नहीं तो कम से कम पश्चिम-नियंत्रण मुक्त दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है। एससीओ की चर्चाएँ

अक्सर सुरक्षा सहयोग, ऊर्जा साझेदारी और व्यापारिक गलियारों पर केंद्रित होती हैं, और इस बार जब ट्रंप ने भारत-चीन को लेकर आशंका जताई है,तो उनकी बेचैनी और स्पष्ट नज़र आती है।अमेरिका की चिंता केवल रणनीतिक नहीं है बल्कि आर्थिक भी है। भारत और चीन दोनों ही अमेरिका के लिए बड़े व्यापारिक साझेदार हैं। अगर दोनों मिलकर व्यापारिक नीतियाँ तय करते हैं और रूस को ऊर्जा साझेदारी में शामिल करते हैं, तो डॉलर के वर्चस्व को चुनौती मिल सकती है। यही कारण है कि ट्रंप और पश्चिमी मीडिया लगातार यह सवाल उठा रहे हैं कि ₹क्या भारत चीन का साथ देगा?₹

साथियों बात अगर हम भविष्य का परिदृश्यःनई वैश्विक शक्ति- संतुलन की ओर की करें तो, भारत-चीन की दोस्ती का असर केवल एशिया तक सीमित नहीं रहेगा,बल्कि यह वैश्विक भू- राजनीति का नक्शा बदल सकता है। आज की दुनिया बहुध्रुवीय होती जा रही है, और इसमें एशिया की भूमिका पहले से कहीं अधिक बढ़ी है। अगर भारत, चीन और रूस मिलकर किसी साझा आर्थिक ब्लॉक या तकनीकी गठबंधन का निर्माण करते हैं, तो यह जी7 और नाटो जैसी पश्चिमी संस्थाओं को चुनौती देगा।भारत लंबे समय से ₹रणनीतिक स्वायत्तता₹ की नीति पर चलता आया है। न तो वह अमेरिका का पूरी तरह साथी बनना चाहता है और न ही चीन का अनुयायी। लेकिन बदलते हालात में भारत के लिए चीन के साथ कुछ मुद्दों पर सहयोग करना उसके राष्ट्रीय हित में हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी विकास, क्लाइमेट चेंज,और आतंकवाद- रोधी अभियानों में सहयोग से भारत को फायदा होगा।पश्चिमी देश मानते हैं कि अगर भारत और चीन का गठबंधन मजबूत होता है, तो वे वैश्विक संस्थाओं में सुधार और पश्चिमी प्रभुत्व को तोड़ने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। यह स्थिति अमेरिका को सबसे ज्यादा असहज बनाती है, क्योंकि वह दशकों से अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का ₹निर्माता और नियंत्रक₹ रहा है।आने वाले दिनों में जापान का शिखर सम्मेलन और एससीओ समिट भारत की इस रणनीति को स्पष्ट करेंगे। अगर मोदी इन मंचों पर संतुलनकारी भूमिका निभाते हैं, तो भारत एशिया का ₹पावर ब्रोक़र₹ बन सकता है। वहीं, अगर भारत-चीन-रूस त्रिकोण मजबूत होता है, तो ट्रंप की चिंताएँ सही साबित होंगी और अमेरिका को अपनी एशिया नीति परपुनर्विचार करना पड़ेगा।भविष्य का वैश्विक परिदृश्य यही बताता है कि ₹ड्रैगन-एलीफैंट फ्रेंडशिप₹ अब केवल एक संभावना नहीं रही, बल्कि एक ऐसी वास्तविकता बन रही है जिससे दुनिया का नक्शा सचमुच बदल सकता है। अमेरिका और पश्चिमी देशों की बेचैनी इसी बदलाव की आहट है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करेंगे तो हम पाएंगे कि 15 वाँ भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन,शंघाई सहयोग संगठन- ड्रैगन-एलीफैंट फ्रेंडशिपः-बदलता एशियाई समीकरण और पश्चिम की बेचैनी वैश्विक परिदृश्य- अमेरिका की बेचैनी और एशियाई गठबंधन- भविष्य का परिदृश्य, नई वैश्विक शक्ति-संतुलन की ओर भारत रूस और चीन,सबसे बड़ी एशियाई शक्तियाँ, जब एक साथ आती हैं,तो पूरी दुनियाँ के लिए यह किसी बड़े भू-राजनीतिक भूकंप जैसा होगा।

मारुति सुजुकी करेगी सितंबर में नई एसयूवी लॉन्च, मिली डिजाइन की जानकारी....

Maruti SUV देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। इस एसयूवी को कब लॉन्च किया जाएगा। किस तरह के फीचर्स और तकनीक को दिया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख निर्माता मारुति सुजुकी की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता कब और किस तरह की खासियत के साथ नई एसयूवी को लॉन्च करेगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

मारुति करेगी नई एसयूवी लॉन्च

प्रमुख वाहन निर्माता मारुति सुजुकी ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से अभी गाड़ी के नाम और फीचर्स के साथ किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा।

किस नाम से आ सकती है

मारुति की ओर से अभी इसकी जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि नई एसयूवी को Maruti Escudo नाम से लॉन्च किया जाएगा। इस एसयूवी को मारुति एरिना डीलरशिप के जरिए ऑफर किया जाएगा।

कितना दमदार इंजन

रिपोर्ट्स के मुताबिक नई एसयूवी में 1.5 लीटर की क्षमता का पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। इसके अलावा इसमें हाइब्रिड तकनीक को भी दिया जा सकता है। 1.5 लीटर की क्षमता के इंजन से एसयूवी को 101 बीएचपी की पावर और 139 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा।

मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

मारुति अपनी नई एसयूवी को भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ऑफर करेगी। इसमें एलईडी लाइट्स, हेड्स-अप डिस्प्ले, वेंटिलेटिड सीट्स, डार्क इंटीरियर, सनरूफ, छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकेरज, हिल असिस्ट जैसे कई फीचर्स दिए जा सकते हैं।

कितनी होगी कीमत

जानकारी के मुताबिक मारुति की नई एसयूवी को 10 से 12 लाख रुपये एक्स शोरूम कीमत के आस पास लॉन्च किया जा सकता है। नई एसयूवी मारुति की ग्रैंड विटारा के नीचे और ब्रेजा के ऊपर पोजिशन की जाएगी।

किनसे होगा मुकाबला

मारुति की नई एसयूवी को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाएगा। इस सेगमेंट में एसयूवी का सीधा मुकाबला Maruti Grand Vitara, Hyundai Urban Cruiser Hyryder, Hyundai Creta, Kia Seltos, Honda Elevate जैसी एसयूवी के साथ होगा।

टीवीएस NTorq 150 भारत में लॉन्च के लिए है तैयार, दमदार इंजन के साथ मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स, कितनी होगी कीमत

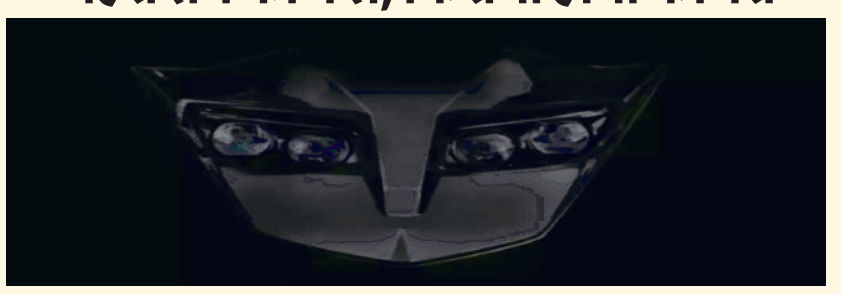

TVS NTorq 150 देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल टीवीएस मोटर्स की ओर से जल्द ही एक और स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से किस सेगमेंट में किस तरह के फीचर्स और इंजन के साथ इसे लॉन्च किया जाएगा। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। भारत में एंट्री लेवल स्कूटर्स के साथ ही प्रीमियम सेगमेंट वाले स्कूटर्स को भी काफी पसंद किया जा रहा है। जिसे देखते हुए अब प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माता टीवीएस की ओर से भी नए स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। टीवीएस कब और किस सेगमेंट में नए स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इसकी संभावित कीमत क्या हो सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगा नया स्कूटर

टीवीएस की ओर से भारत में जल्द ही एक और स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस स्कूटर को प्रीमियम सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा।

कौन सा स्कूटर होगा लॉन्च

जानकारी के मुताबिक टीवीएस की ओर से TVS NTorq 150 को चार सितंबर को भारत में औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स और इंजन

लॉन्च के समय ही इसके इंजन और फीचर्स के साथ कीमत की सही जानकारी दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसमें 150 सीसी की क्षमता का सिंगल सिलेंडर इंजन दिया जाएगा। जिसके साथ ही इसमें क्वाड एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी डीआरएल, एलईडी टेल लाइट्स, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, 14 इंच बड़े अलॉय व्हील्स के साथ पहिए, एबीएस, टर्न बाय टर्न नेविगेशन सिस्टम, इंजन स्टॉर्ट/स्टॉप, हजार्ड लाइट्स जैसे कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जा सकता है।

ब्रिक्सटन क्रॉसफायर 500XC की कीमत 27 हजार घटी, पावरफुल इंजन और दमदार फीचर्स से है लैस

ब्रिक्सटन मोटरसाइकल्स ने अपनी फ्लैगशिप स्क्रैंबलर Brixton Crossfire 500XC की कीमतों में 27499 रुपये की कटौती की है जिससे इसकी एक्स-शोरूम कीमत 492000 रुपये हो गई है। 486cc इंजन KYB सस्पेंशन और BOSCH ABS जैसे फीचर्स के साथ यह बाइक स्टाइल और परफॉर्मेंस का मिश्रण है। यह कोल्हापुर में स्थानीय रूप से असेंबल की गई है और ऑफ-रोड और शहरी सड़कों के लिए उपयुक्त है।

नई दिल्ली। ब्रिक्सटन मोटरसाइकल्स ने अपनी फ्लैगशिप स्क्रैंबलर Brixton Crossfire 500XC की कीमतों में कटौती की है। इस कदम से यह एडवेंचर-रेडी मशीन भारत में बाइक चलाने वालों के लिए एक और भी आकर्षक ऑप्शन बन गई है। इसकी कीमत में कमी करने के अलावा बाकि किसी और चीज में बदलाव नहीं किया गया है। आइए इसकी नई कीमत और मिलने वाले फीचर्क के बारे में विस्तार में जानते हैं।

Brixton Crossfire 500XC की नई कीमत

ब्रिक्सटन क्रॉसफायर 500XC को पहले 5,19,499 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता था। अब इसकी कीमत में 27,499 रुपये की कटौती की गई है। इसके बाद अब इसे भारत में 4,92,000 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जा रहा है। इस बाइक को उन राइडर्स को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जो स्टाइल और परफॉर्मेंस दोनों की मांग करते हैं। ऑस्ट्रियाई इंजीनियरिंग के प्रभाव के साथ एक ग्लोबल स्क्रैंबलर के रूप में इसे डिजाइन किया गया है और कोल्हापुर में स्थानीय रूप से असेंबल की गई, 500XC एक ऐसी मोटरसाइकिल है जो मजबूत परफॉर्मेंस को आकर्षक डिजाइन के साथ मिलाती है।

Brixton Crossfire 500XC के फीचर्स

ब्रिक्सटन क्रॉसफायर 500 XC एक मजबूत और बहुमुखी स्क्रैंबलर है। इसमें 486cc लिक्विड-कूल्ड, दो-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 47 hp की पावर और 43 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें KYB एडजस्टेबल सस्पेंशन, BOSCH ABS, J. J. Juan डिस्क ब्रेक और Pirelli Scorpion Rally STR टायरों के साथ, यह ऑफ-रोड रास्तों और शहर की सड़कों दोनों को आसानी से संभालने के लिए बनाई गई है। इसमें 13.5L का फ्यूल टैंक, 195 kg का कर्ब वेट और 839 mm की सीट की ऊंचाई है, जो आराम और स्थिरता सुनिश्चित करती है। इसका डेजर्ट गोल्ड मैट फिनिश और सिग्नेचर एक्स-आकार का फ्यूल टैंक डिज़ाइन इसे ब्रिक्सटन की खास पहचान देते हैं।

टाटा विंगर प्लस हुई लॉन्च, 9 सीटर में मिलेगा ज्यादा आराम और शानदार फीचर्स, कितनी है कीमत?

भारत में निजी वाहनों के साथ ही कमर्शियल वाहन सेगमेंट की भी काफी मांग रहती है। टाटा की ओर से इस सेगमेंट में नए वाहन के तौर पर टाटा विंगर प्लस को लॉन्च किया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल टाटा मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से यात्री वाहन सेगमेंट के साथ ही कमर्शियल सेगमेंट में भी कई विकल्प ऑफर किए जाते हैं। टाटा की ओर से हाल में ही कमर्शियल यात्री वाहन सेगमेंट में Tata Winger Plus को लॉन्च किया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। इसे किस कीमत पर लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Winger Plus लॉन्च

टाटा की ओर से विंगर प्लस को कमर्शियल यात्री वाहन सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। निर्माता की ओर से इसे पर्यटकों और कर्मचारियों के परिवहन को आरामदायक बनाने के लिए लॉन्च किया है। इस वाहन को मोनोकॉक चेसिस पर बनाया गया है जिससे यह काफी सुरक्षित और स्थिरता देता है।

क्या है खासियत

Tata Winger Plus में निर्माता की ओर से नौ सीटों को दिया गया है। जिसके साथ ही इसमें एडजस्टेबल आर्मरेस्ट, रिक्लाइनिंग कैप्टन सीटें, व्यक्तिगत यूएसबी चार्जिंग पॉइंट, व्यक्तिगत एसी वेंट और पर्याप्त लेग स्पेस को दिया गया है।

कितना दमदार इंजन

निर्माता की ओर से इसमें 2.2 लीटर की क्षमता का डाइकोर डीजल इंजन दिया गया है। जिससे इस वाहन को 100 हॉर्स पावर और 200 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

अधिकारियों ने कही यह बात

टाटा मोटर्स में कमर्शियल पैसेंजर व्हीकल बिजनेस के वाइस प्रेसिडेंट आनंद एस ने कहा कि विंगर प्लस को यात्रियों को एक बेहतरीन अनुभव और फ्लीट ऑपरेटरों के लिए एक आकर्षक मूल्य प्रस्ताव देने के लिए सोच-समझकर डिज़ाइन किया गया है। अपनी बेहतरीन राइड कम्फर्ट, अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ कम्फर्ट फीचर्स और सेगमेंट में अग्रणी दक्षता के साथ, इसे स्वामित्व की सबसे कम लागत प्रदान करते हुए लाभप्रदता बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। भारत का यात्री गतिशीलता परिदृश्य तेज़ी से विकसित हो रहा है—शहरी केंद्रों में कर्मचारियों के परिवहन से लेकर देश भर में पर्यटन की बढ़ती माँग तक। विंगर प्लस को इस विविधता को पूरा करने के लिए बनाया गया है, जो कमर्शियल पैसेंजर व्हीकल सेगमेंट में नए मानक स्थापित कर रहा है।

कितनी है कीमत

टाटा की ओर से लॉन्च किए गए Tata Winger Plus को भारत में 20.60 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

मारुति ग्रैंड विटारा को मिले नए शानदार कलर, सिग्मा और डेल्टा वेरिएंट्स में मिलेंगे ये ऑप्शन

मारुति ग्रैंड विटारा के सिग्मा डेल्टा और डेल्टा+ वेरिएंट्स में नए रंग विकल्प पेश किए हैं। सिग्मा वेरिएंट में अब नेक्सा ब्लू ग्रैंड्योर ग्रे और पर्ल मिडनाइट ब्लैक रंग भी मिलेंगे जो पहले केवल आर्कटिक व्हाइट में उपलब्ध था। डेल्टा और डेल्टा+ वेरिएंट्स में पर्ल मिडनाइट ब्लैक रंग जोड़ा गया है। इन नए कलर वेरिएंट्स की बुकिंग 21 अगस्त से शुरू हो चुकी है।

नई दिल्ली। मारुति ने हाल ही में Nexa की 10वीं सालगिरह के सेलेब्रेशन के रूप में Maruti Grand Vitara का फैंटम ब्लैक एडिशन लॉन्च किया था। अब कंपनी ने Maruti Grand Vitara के Sigma, Delta और Delta+ वेरिएंट में नए कलर ऑप्शन को लेकर आया गया है। इन कलर ऑप्शन को लेकर इसके लिए और भी स्कीम को बढ़ा दिया गया है। इन नए कलर वेरिएंट्स की बुकिंग 21 अगस्त से शुरू हो गई है।

Grand Vitara के नए कलर

ग्रैंड विटारा के बेस सिग्मा वेरिएंट में तीन नए कलर ऑप्शन को सामिल किया गया है। यह तीनों मोनोटोन कलर हैं, जो नेक्सा ब्लू, ग्रैंड्योर ग्रे और पर्ल मिडनाइट ब्लैक है। पहले सिग्मा वेरिएंट को केवल केवल आर्कटिक व्हाइट ऑप्शन में ऑफर किया जाता था। अब इसे कुल चार कलर ऑप्शन में ऑफर किया जाएगा।

डेल्टा और डेल्टा प्लस वेरिएंट्स में पर्ल मिडनाइट ब्लैक को एक नए कलर ऑप्शन को शामिल किया गया है। इसके अलावा बाकी वेरिएंट के साथ डेल्टा और डेल्टा प्लस वेरिएंट्स में अब कुल सात कलर ऑप्शन हो गए हैं। पहले Grand Vitara को नेक्सा ब्लू, स्प्लेंडिड सिल्वर, ओपुलेंट रेड, ग्रैंड्योर ग्रे, आर्कटिक व्हाइट और चेस्टनट ब्राउन कलर ऑप्शन में पेश किया जाता था।

कब से शुरू होगी डिलीवरी?

Maruti Grand Vitara के नए कलर वेरिएंट की डिलीवरी की तारीख की भी घोषणा भी कर दी गई है। डेल्टा वेरिएंट के लिए नया ब्लैक कलर अगस्त 2025 के अंत तक उपलब्ध होगा। सिग्मा वेरिएंट के लिए नए कलर सितंबर के मध्य से उपलब्ध होंगे। डुअल-टोन ऑप्शन कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में काफी लोकप्रिय हैं, क्योंकि वे गाड़ी को स्पोर्टी लुक देते हैं। ग्रैंड विटारा में आर्कटिक व्हाइट के साथ ब्लैक, स्प्लेंडिड सिल्वर के साथ ब्लैक और ओपुलेंट रेड के साथ ब्लैक जैसे डुअल-टोन ऑप्शन मिलते हैं।

कितनी है कीमत?

Maruti Grand Vitara के नए कलर ऑप्शन की कीमत में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसके सिग्मा MT वेरिएंट की शुरुआती कीमत 11.42 लाख रुपये है। डेल्टा MT और डेल्टा AT की कीमत क्रमशः 12.53 लाख रुपये और 13.93 लाख रुपये है। स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड ऑप्शन वाला डेल्टा प्लस वेरिएंट 16.99 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध है, जो मारुति ग्रैंड विटारा का सबसे किफायती स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट है।

हुंडई एक्सटर प्रो पैक वेरिएंट लॉन्च, नया कलर ऑप्शन समेत मिले शानदार फीचर्स

हुंडई ने अपनी लोकप्रिय एसयूवी Hyundai Exter Pro Pack को नए कॉस्मेटिक बदलावों डैशकैम और नए रंग विकल्प के साथ लॉन्च किया है। इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 7.98 लाख रुपये है। एक्सटर प्रो पैक में व्हील आर्च क्लैडिंग और एक नई साइड सिल गार्निश दी गई है। इसमें टाइटैन ग्रे मैट एक्सटीरियर रंग विकल्प भी मिलता है। SX(O) AMT वेरिएंट में डैशकैम भी मिलेगा।

नई दिल्ली। हुंडई ने अपनी पॉपुलर SUV Hyundai Exter Pro Pack को लॉन्च किया है। इस प्रो पैक में कुछ कॉस्मेटिक बदलाव, डैशकैम और एक नया कलर ऑप्शन के साथ लेकर आया गया है। इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 7.98 लाख रुपये है। आइए जानते हैं कि इसे और किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया है?

Exter Pro Pack में क्या है नया?

एक्सटर पर नया प्रो पैक इसके रग्ड लुक को और बढ़ाता है। इसमें अधिक प्रमुख व्हील आर्च क्लैडिंग और एक नई साइड सिल गार्निश दी गई है। हुंडई ने प्रो पैक के साथ एक नया टाइटैन ग्रे मैट एक्सटीरियर कलर ऑप्शन भी पेश किया है।

इसमें दिए गए फीचर्स की बात करें, तो SX(O) AMT वेरिएंट में अब डैशकैम भी मिलेगा। पहले यह केवल SX Tech और SX Connect वेरिएंट में दिया जाता था।

बेस वेरिएंट से 5,000 रुपये महंगी

Hyundai Exter Pro Pack वेरिएंट को S+ वेरिएंट और उससे ऊपर के वेरिएंट्स में उपलब्ध है। इसका मतलब है कि बेस EX, EX(O), S स्मार्ट और S वेरिएंट्स में ये एक्सेसरीज नहीं मिलेगी, जो इसमें दी जा रही है। वहीं, रेगुलर S+ मैनुअल वेरिएंट की कीमत 7.93 लाख रुपये से शुरू होती है, जिसका मतलब है कि प्रो पैक की कीमत बेस वेरिएंट से 5,000 रुपये ज्यादा है।

Hyundai Exter Pro Pack का इंजन

इस कॉम्पैक्ट SUV में और कोई बदलाव नहीं किया गया है। Exter में दिया जाने वाला 1.2-लीटर, चार-सिलेंडर पेट्रोल इंजन का ही इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 83hp की पावर और 114Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इस इंजन को 5-स्पीड मैनुअल और 5-स्पीड एएमटी गियरबॉक्स दोनों के साथ ऑफर किया जाता है। CNG स्पेसिफिकेशन में यह इंजन 69hp की पावर और 95.2Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे केवल 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ ऑफर किया जाता है। इसमें डुअल-सीएनजी सिलेंडर टैंक सेटअप भी मिलता है।

स्क्रीन पर हुक: भारत का साइलेंट डिजिटल क्राइसिस

विजय गर्ग

हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया कि भारत में पांच से कम उम्र के बच्चे स्क्रीन पर औसतन 2.2 घंटे प्रतिदिन खर्च करते हैं, जो अनुशंसित सीमा से दोगुना है। एक अन्य सर्वेक्षण में पता चला है कि 5 से 16 वर्ष की आयु के 60% बच्चे ऐसे व्यवहार दिखाते हैं जो संभावित डिजिटल लत का संकेत दे सकते हैं। हैदराबाद में एक अध्ययन में पाया गया कि युवा वयस्क स्क्रीन पर औसतन 6.47 घंटे बिताते हैं, इस भारी उपयोग के साथ धीमा मस्तिष्क समारोह और कम ध्यान स्पैन से जुड़ा हुआ है।

भारत, डिजिटल क्रांति में सबसे आगे एक राष्ट्र, एक मूक लेकिन व्यापक संकट से जूझ रहा है: व्यापक डिजिटल लत। जैसे-जैसे स्मार्टफोन और इंटरनेट दैनिक जीवन में तेजी से एकीकृत होते जाते हैं, बढ़ती संख्या में लोग, विशेष रूप से बच्चे और युवा वयस्क, स्क्रीन पर झुके हुए होते जा रहे हैं, जिससे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याएं होती जा रही हैं। समस्या का पैमाना भारत में अत्यधिक स्क्रीन समय के आंकड़े चिंताजनक हैं:

हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया कि भारत में पांच से कम उम्र के बच्चे स्क्रीन पर औसतन 2.2 घंटे प्रतिदिन खर्च करते हैं, जो अनुशंसित सीमा से दोगुना है।

एक अन्य सर्वेक्षण में पता चला है कि 5 से 16 वर्ष की आयु के 60% बच्चे ऐसे व्यवहार दिखाते हैं जो संभावित डिजिटल लत का संकेत दे सकते हैं।

हैदराबाद में एक अध्ययन में पाया गया कि युवा वयस्क स्क्रीन पर औसतन 6.47 घंटे बिताते हैं, इस भारी उपयोग के साथ धीमा मस्तिष्क समारोह और कम ध्यान स्पैन से जुड़ा हुआ है। अत्यधिक स्क्रीन समय के परिणाम ₹मूक डिजिटल संकट₹ का भारतीय आबादी के स्वास्थ्य और कल्याण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है: 1.। शारीरिक स्वास्थ्य:

दृष्टि समस्याएं: स्क्रीन पर लंबे समय तक निकट-ध्यान केंद्रित करना और बाहरी प्रकाश जोखिम की कमी से बच्चों के बीच आंखों के तनाव और मायोपिया (निकट दृष्टि) में खतरनाक वृद्धि हो रही है।

गतिहीन जीवन शैली: स्क्रीन की लत एक गतिहीन जीवन शैली को प्रोत्साहित करती है, जो मोटापे और संबंधित स्वास्थ्य मुद्दों में वृद्धि में योगदान देती है।

नींद की गड़बड़ी: स्क्रीन द्वारा उत्सर्जित

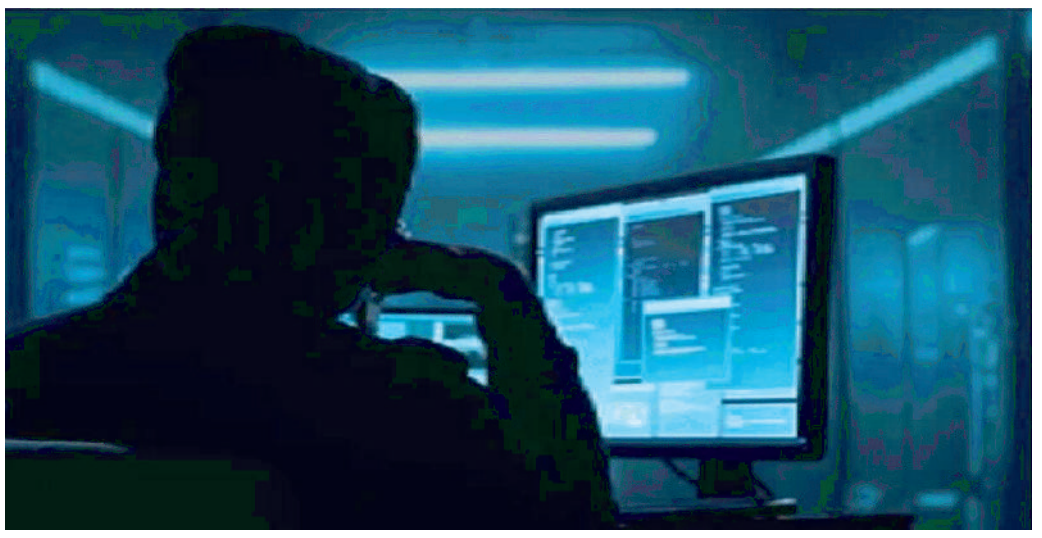

नीली रोशनी शरीर के प्राकृतिक नींद-जागने के चक्र को बाधित करती है, जिससे नींद की खराब गुणवत्ता और मानसिक और शारीरिक थकान होती है।2.। मानसिक और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य:

कम ध्यान स्पैन: तेजी से पुस्तक के लिए लगातार जोखिम, उत्तेजक सामग्री ध्यान फैला सिकुड़ती है और व्यक्तियों, विशेष रूप से छात्रों के लिए, विस्तृत या लंबे समय से फार्म सामग्री पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मुश्किल बना रही है ।

चिंता और अवसाद: अध्ययनों ने अत्यधिक स्क्रीन समय, सोशल मीडिया उपयोग और किशोरों के बीच चिंता और अवसाद के लक्षणों के बीच एक सकारात्मक संबंध दिखाया है।

विकासात्मक देरी: छोटे बच्चों के लिए, अत्यधिक स्क्रीन समय को विलंबित भाषा विकास, संज्ञानात्मक कार्य में कमी और सामाजिक कौशल में बाधा से जोड़ा गया है। 3। सामाजिक और व्यवहार संबंधी मुद्दे:

सामाजिक वापसी: स्क्रीन के आदी व्यक्ति वास्तविक दुनिया की सामाजिक बातचीत से हट सकते हैं, जिससे सामाजिक कौशल की कमी हो सकती है।

आक्रामकता में वृद्धि: अत्यधिक स्क्रीन समय, विशेष रूप से मीडिया हिंसा और ऑनलाइन संघर्षों के संपर्क में, बढ़ी हुई आक्रामकता और व्यवहार संबंधी समस्याओं के साथ सहसंबद्ध किया गया है। संकट को संबोधित करते हुए भारत सरकार और विभिन्न संगठन इस बढ़ती समस्या को दूर करने के लिए कदम उठाने लगे हैं:

विधान: सरकार ने ऑनलाइन गेमिंग की लत और वित्तीय बर्बादी पर अंकुश लगाने के लिए ऑनलाइन गेमिंग बिल, 2025 के प्रचार और विनियमन जैसे बिल और विनियम पेश किए हैं।

सलाह और पहल: शिक्षा मंत्रालय ने ऑनलाइन गेमिंग के डाउनसाइड्स पर माता-पिता और शिक्षकों के लिए सलाह जारी की है और सुरक्षित ऑनलाइन आदतों को कैसे बढ़ावा दिया जाए। कर्नाटक जैसे कुछ राज्यों ने डिजिटल निर्भरता से जूझ रहे लोगों के लिए समर्थन प्रदान करने के लिए अपनी ₹डिजिटल डिटॉक्स₹ पहल शुरू की है।

हेल्थकेयर इंटीग्रेशन: संरचित समर्थन प्रदान करने और इस मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मुख्यधारा के स्वास्थ्य सेवा में डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रमों को एकीकृत करने के लिए एक बढ़ती धक्का है। जबकि ये चरण एक शुरुआत हैं, एक व्यापक, बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसमें न केवल सरकारी कार्रवाई बल्कि जागरूकता अभियान, शैक्षिक कार्यक्रम और संतुलित डिजिटल जीवन शैली को बढ़ावा देने पर अधिक जोर शामिल है। स्क्रीन की लत के ₹मूक संकट₹ को यह सुनिश्चित करने के लिए एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है कि भारत की डिजिटल उन्नति अपने नागरिकों की भलाई की कीमत पर न आए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कोलोनोस्कोपी में एआइ कौशल के लिए खतरा

जहां आजकर हर क्षेत्र में एआइ पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। वहीं स्वास्थ्य क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रह गया है लेकिन हाल ही में हुए एक अध्ययन के मुताबिक इसका लगातार प्रयोग स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए कौशल खोने के जोखिम को बढ़ा सकता है। जी हां, पोलैंड, नार्वे, स्वीडन और अन्य यूरोपीय देशों के शोधकर्ताओं ने 1,400 से अधिक कोलोनोस्कोपी का अध्ययन किया जिनमें से लगभग 800 को एआइ सहायता के बिना किया गया जबकि 650 ने प्रक्रिया के दौरान एआइ का उपयोग किया। सामने आया कि एआइ का बिना प्रयोग किए अनुभवी स्वास्थ्य पेशेवरों की कोलोनोस्कोपी में ट्यूमर की पहचान करने की क्षमता में 20 प्रतिशत की कमी आई। बता दें, कोलोनोस्कोपी का उपयोग बड़ी आंत, जिसमें कोलन और मलाशय शामिल हैं, में रोग की जांच के लिए किया जाता है।

द लैंसेट गैस्ट्रोएंटरोलाजी और हेपेटोलाजी जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के दौरान एआइ के एकीकरण से तीन महीने पहले और बाद में की गई कोलोनोस्कोपी की तुलना की। एआइ पर निर्भरता के तीन महीने बाद मानक कोलोनोस्कोपी के दौरान एडेनोमा (एक प्रकार का ट्यूमर है जो ग्रंथियों के ऊतकों से बनता है और आमतौर पर गैर- कैंसरयुक्त होता है) की पहचान दर 28 .4 प्रतिशत से घटकर 22 .4 प्रतिशत हो गई। हालांकि अध्ययनों ने दिखाया है कि एआइ का उपयोग डाक्टरों और चिकित्सकों को कैंसर की पहचान में सुधार करने में मदद कर सकता है। शोधकर्ता मार्सिन रोमान्चिक ने कहा, ₹हमारे परिणाम चिंताजनक हैं, यह देखते हुए कि चिकित्सा में एआइ का अपनाना तेजी से बढ़ रहा है। हमें विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में स्वास्थ्य पेशेवरों की कौशल पर एआई के प्रभाव के बारे में अधिक शोध की आवश्यकता है।₹ वहीं नार्वे के ओस्लो विश्वविद्यालय के लेखक यूइची मोरी ने कहा कि परिणामों ने एक दिलचस्प प्रश्न उठाया है जो पिछले परीक्षणों से संबंधित है। इसमें पाया गया था कि एआइ सहायता प्राप्त कोलोनोस्कोपी ने बिना एआइ की सहायता वाली कोलोनोस्कोपी की तुलना में अधिक ट्यूमर पहचान की। लेखकों ने स्वास्थ्य पेशेवरों और एआइ प्रणालियों के बीच प्रभावी समन्वय की कमी के समय में शामिल गतिशीलता के लिए अतिरिक्त शोध की आवश्यकता पर जोर दिया।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

लंबे समय तक बैठने वाले वाले लोगों में हो सकती है हार्ट प्रॉब्लम

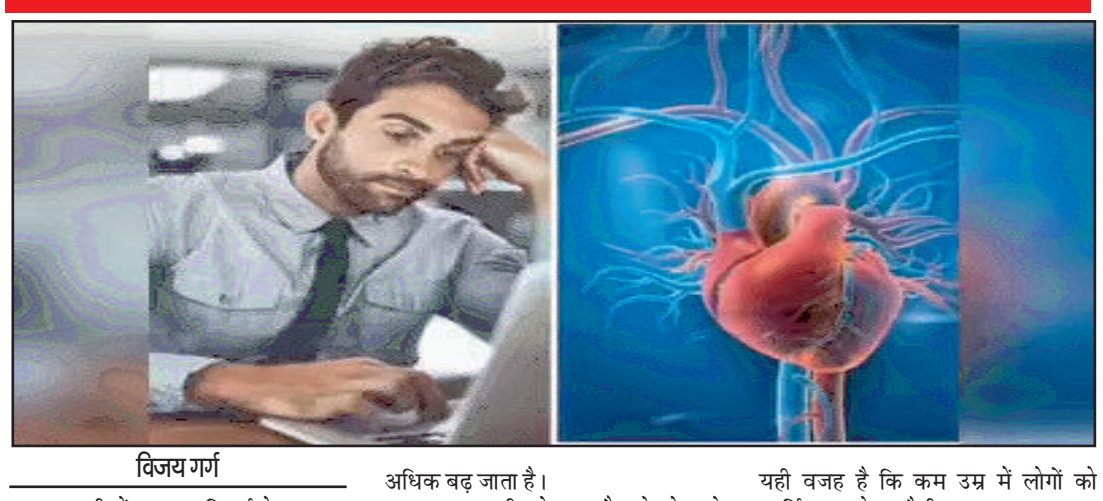

विजय गर्ग

हाल ही में हुए एक रिसर्च के अनुसार लंबे समय तक बैठे रहने वाले लोगों में हार्ट प्रॉब्लम और कैंसर का खतरा 80 प्रतिशत बढ़ जाता है। वहीं एक्टिव रहने वाले व्यक्ति अधिक स्वस्थ और एनर्जेटिक होते हैं। बैठे रहने से एक नहीं बल्कि कई हेल्थ समस्याओं को बढ़ावा मिलता है। अधिक देर तक बैठे रहने से किन हेल्थ इशूज का सामना करना पड़ सकता है। एक ही जगह देर तक बैठना व्यक्ति की उम्र पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यदि कोई व्यक्ति दिन का अधिकतर समय बैठे रहने में निकाल देता है तो उसकी उम्र कम हो सकती है। बैठे रहने से हार्ट प्रॉब्लम, कैंसर और मोटापे जैसी समस्याएं घेर सकती हैं। जो लोग एक्सरसाइज और वॉकिंग नहीं करते वह दूसरों की तुलना में कम जीते हैं। देर तक बैठे रहने की वजह से मानसिक समस्या जैसे डिमेंशिया होने का खतरा अधिक बढ़ जाता है।

लगातार स्क्रीन देखना और सोचते रहने से मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है जिस वजह से मानसिक विकार हो सकता है।

जो व्यक्ति बैठे रहने के साथ एक्सरसाइज और वॉक करते हैं वह स्वस्थ रहते हैं। डीप वेन थ्रॉम्बोसिस (डीवीटी) की समस्या पैरों में ब्लड क्लॉट होने की वजह से होती है। ज्यादा देर तक पैरों को लटकाकर बैठना या पैरों का कम मूवमेंट होना इस समस्या को बढ़ा सकता है। पैरों में

सूजन और दर्द इसके सामान्य लक्षण हो सकते हैं। कई बार डीवीटी की समस्या इतनी बढ़ जाती है कि ये पैरों से लंग्स तक पहुंच जाती है। लंग्स में ब्लड क्लॉट्स हो जाते हैं। एक्टिव न रहना या एक ही जगह पर अधिक देर तक बैठे रहने की वजह से हार्ट प्रॉब्लम का खतरा अधिक बढ़ जाता है।

बैठे रहने से बॉडी में ब्लड सर्कुलेशन कम होता है जो हार्ट प्रॉब्लम्स का कारण बनता है। यही वजह है कि कम उम्र में लोगों को कार्डियक अरेस्ट जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जो लोग खड़े रहकर या वॉक करते हुए काम करते हैं. वह लोग अधिक हेल्दी रहते हैं। मोटापा बढ़ने के कई कारण होते हैं जिसमें से अहम है बैठे रहना। बॉडी को अधिक देर तक रिलेक्स रखना या मूवमेंट न करना मोटापे का बढ़ावा देता है। मोबाइल, टीवी या लैपटॉप की स्क्रीन लोगों को बैठने पर मजबूर कर देती है इसलिए हर एक घंटे के बाद 10 मिनट वॉक जरूर करनी चाहिए। इससे बॉडी के साथ आंखों को भी आराम मिलता है। मालूम हो कि वर्क फॉम होम और बढ़ते वर्क कल्चर की वजह से लोगों में एंजाइटी, तनाव और मेंटल हेल्थ पर गहरा प्रभाव पड़ा है। घंटों तक एक ही जगह बैठे रहना इन दिनों लोगों की मजबूरी हो गई है। इस मजबूरी की वजह से न सिर्फ बॉडी पोश्चर पर बल्कि हार्ट हेल्थ पर भी बुरा प्रभाव देखा जा रहा है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पत्रकारिता के स्रोत महान शिक्षक हो सकते हैं

विजय गर्ग

पत्रकारिता की दुनिया में, स्रोत केवल सूचना के प्रदाता नहीं हैं; वे अक्सर अमूल्य शिक्षक होते हैं। यह पत्रकारों के लिए एक मौलिक अवधारणा है, अनुभवी पेशेवरों से लेकर छात्रों तक। यहां महान शिक्षकों के रूप में स्रोत क्यों और कैसे काम करते हैं, इसका टूटना है: 1.। विषय विशेषज्ञ: स्रोत अक्सर अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ होते हैं। एक नई वैज्ञानिक खोज को कवर करने वाला पत्रकार एक वैज्ञानिक के साथ बात करेगा, एक राजनीतिक रिपोर्टर एक राजनेता या नीति विशेषज्ञ का साक्षात्कार करेगा, और एक व्यवसायी लेखक अर्थशास्त्रियों या कंपनी के अधिकारियों से परामर्श करेगा। इन साक्षात्कारों के माध्यम से, पत्रकार जटिल विषयों की गहरी समझ प्राप्त करते हैं, जिससे वे उस ज्ञान को जनता के लिए सुलभ और सटीक कहानियों में अनुवाद कर सकते हैं। स्रोत पत्रकार को कहानी का ₹क्या₹ और ₹क्यों₹ सिखाता है। 2.। संदर्भ और Nuance प्रदान करना: बुनियादी तथ्यों से परे, अच्छे स्रोत संदर्भ और बारीकियों को प्रदान करते हैं। वे किसी स्थिति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभिन्न खिलाड़ियों की प्रेरणाओं और किसी घटना के संभावित परिणामों की व्याख्या कर सकते हैं। यह एक पत्रकार को केवल सतह-स्तर की घटना पर रिपोर्ट करने से रोकता है और इसके बजाय उन्हें एक अधिक व्यापक, सार्थक और अच्छी तरह से गोल कहानी बनाने की अनुमति देता है। वे पत्रकार को किसी मुद्दे की बड़ी तस्वीर और सूक्ष्मता को समझने में मदद करते हैं। 3। नैतिक और व्यावसायिक सबक: एक पत्रकार और एक स्रोत के बीच संबंध विश्वास और नैतिक विचारों पर बनाया गया है। एक पत्रकार स्रोतों से सटीक, निष्पक्ष और पारदर्शी होने के महत्व के बारे में सीखता है। वे संवेदनशील जानकारी को संभालना सीखते हैं, आवश्यक होने पर गुमनाम स्रोतों की रक्षा करते हैं, और ब्याज के संभावित संघर्षों को नेविगेट करते हैं। ये बातचीत पत्रकारिता नैतिकता और व्यावसायिकता में व्यावहारिक सबक हैं। 4। वर्ल्डव्यू का विस्तार: पत्रकार जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों से लगातार मिल रहे हैं। प्रत्येक नया स्रोत दुनिया पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। एक पत्रकार एक दिन एक सीईओ और अगले एक जमीनी संगठन के एक कार्यकर्ता का साक्षात्कार कर सकता है। ये विविध इंटरैक्शन एक पत्रकार के विश्वदृष्टि को व्यापक बनाते हैं, अपनी मान्यताओं को चुनौती देते हैं, और कहानी कहने के लिए अधिक सहानुभूति और संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। 5.। साक्षात्कार की कला सिखाना: किसी स्रोत का साक्षात्कार करने की प्रक्रिया अपने आप में एक कौशल है। स्रोत एक पत्रकार को ₹सिखा₹ सकते हैं कि विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब देकर एक बेहतर साक्षात्कारकर्ता कैसे बनें। एक पत्रकार सीखता है कि कैसे सक्रिय रूप से सुनना है, एक विस्तार पर अनुवर्ती कार्रवाई करना है, और सवाल पूछना है कि स्रोत को विचारशील, विस्तृत जवाब प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं । संक्षेप में, एक पत्रकार का करियर एक सतत शिक्षा है, जिसमें उनके सबसे लगातार और मूल्यवान शिक्षकों के रूप में सेवा करने वाले स्रोत हैं। इन इंटरैक्शन से प्राप्त ज्ञान, संदर्भ और नैतिक अंतर्दृष्टि वही हैं जो पत्रकारिता को तथ्यों के एक सरल रिले से एक महत्वपूर्ण और व्यावहारिक सार्वजनिक सेवा तक बढ़ाते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

संस्कृति की परीक्षा या विकृति का उदय, जानें क्या है सच

विजय गर्ग

प्रकृति हमें अनेक प्रकार से शिक्षा प्रदान करती है। कभी पशु-पक्षियों के द्वारा, कभी औषधि वनस्पतियों के माध्यम से। बात प्रकृति को समझने और उससे सीख लेने की है। हम देखते हैं कि हमारे आस-पड़ोस के परिवेश में, वनों में कुछ ऐसी बेलें होती हैं जो पहले तो किसी बड़े वृक्ष का सहारा पाकर उस पर धीरे-धीरे चढ़ जाती हैं फिर उस पेड़ पर पूरी तरह से फैल कर उसे जकड़ लेती हैं। धीरे- धीरे पेड़ का अपना रंग-रूप बदलने लगता है और कुछ समय बाद वह बेल ही दिखाई

देने लगती है। एक समय ऐसा आता है जब उस वृक्ष का तना और मोटी शाखाएं उसके अपने रह जाते हैं बाकी टहनियों और पत्तों पर वह बेल पूरी तरह से अपनी मजबूत पकड़ बना लेती है। पेड़ का अस्तित्व धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है और उस पर पनप जाती है एक छोटी-सी बेल ।

ऐसा ही एक उदाहरण है जलकुंभी का । जलकुंभी एक ऐसा पौधा होता है जो पहले किसी तालाब, पोखर के किनारे दिखाई देता है। फिर धीरे-धीरे कुछ हफ्तों में तालाब के सब कोनों में एक-दो पौधे तैरते दिखाई देने लगते हैं। बड़े ही सुंदर दिखते हैं। फिर अचानक कुछ महीनों या सालों में पानी दिखाई देना बंद हो जाता है । सारे तालाब के ऊपर सिर्फ हरा हरा ही दिखाई देता है। पानी की आक्सीजन खत्म होने लगती है। अंदर का जीवन, मछलियां मरने लगती हैं, धीरे-धीरे पानी सडने लगता है। सड़ांध किलोमीटर दूर से महसूस होनी शुरू हो जाती है और बाकी प्राणियों का जीवन मुश्किल हो जाता है। जिस-जिस तालाब में ये जलकुंभी पहुंचती है सब खत्म कर देती है।

जलकुंभी को समाप्त करने के लिए पहले उसको बाहर निकाल कर सुखाया जाता है और सूखने के बाद आग

लगा कर उसका बीज तक नाश कर दिया जाता है ताकि दोबारा न पनप सके। ऐसा ही कुछ समाज में भी घटता रहता है। कभी परिवार में, कभी समाज में, कभी राष्ट्र में, कभी पूरे विश्व में ऐसा देखने में आता है कि कोई एक गुट या समुदाय कभी अपने विचार के बल पर, कभी तलवार के बल पर किसी दूसरे गुट या समुदाय के बीच में घुस कर धीरे-धीरे अपना संख्या बल बढ़ा करके अपनी जड़ें जमा लेता है।

फिर एक समय ऐसा आता है कि पेड़ की तरह देश का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है और बेल तथा जलकुंभी की तरह वह सम्प्रदाय अपना असली रंग दिखाने लगता है। तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। वर्तमान में राष्ट्रीय परिदृश्य में कुछ सामाजिक एवं अराजक तत्व जलकुंभी की तरह धीरे-धीरे अपना आकार बढ़ाते जा रहे हैं और उसका दुष्प्रभाव समाज एवं राष्ट्र में भी देखने को मिलने लगा है अगर समय रहते इसको रोका नहीं गया तो एक दिन सारा तालाब प्रदूषित हो जाएगा । सत्य सनातन सांस्कृतिक परम्पराओं को बनाए रखने तथा उसके प्रति आस्था और श्रद्धा मजबूत करने का यह संक्रमण काल है, ताकि भारतीय ज्ञान परम्परा और सनातन चिंतन दृष्टि को बनाए रखा जा सके।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

ट्रम्प टैरिफ: चरखा बनाम साम्राज्यवाद

पंकज जायसवाल

अभीहालहीमेंअमेरिकानेभारतकेटेक्सटाइल, जेम्स-ज्वेलरी, लेदर, फुटवियर और सी-फूड्सपर50फीसदीकाअतिरिक्तटैरिफलगा दिया है जो पहले के मात्र 3 फीसदी से कहीं ज्यादा है। ऐसेमेंसवाल उठताहैकिभारतइसका मुकाबला कैसे करे हालांकि भारत के प्रधानमंत्री ने इसकी तैयारी काफी पहले से शुरू कर दी थी। अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही उनका मिशन मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और अब स्वदेशी की अपील इसी रणनीति का विस्तार है। कुछ वर्ष पूर्व जब प्रधानमंत्री मोदी खादी उत्सव में शामिल होकर साबरमती किनारे चरखा चला रहे थे, तब वह केवल लघु उद्योगों को बढ़ावा देने की औपचारिकता नहीं थी बल्कि गांधी के उस संकल्प की प्रासंगिकता को दोहराने का प्रतीक भी था। यह संदेश था कि खादी केवल एक वस्त्र नहीं बल्कि स्वदेशी का विचार है और चरखा उसका मिशन।

आज जो स्थिति ट्रम्प टैरिफ से बनी है, वैसी ही और उससे भी भयावह परिस्थिति अंग्रेजों के समय आई थी जब ब्रिटेन के व्यापारियों ने भारत के टेक्सटाइल निर्यात को लगभग ख़त्म कर दिया था। अंग्रेजों ने भारतीय कपड़ा उद्योग को यूरोपीय बाजार में ऊँचे टैरिफ और अपने सस्ते माल से नष्ट कर दिया था। उस दौर में स्वदेशी अभियान के तहत शुरू हुआ चरखा मिशन औद्योगिक क्रांति के बाद उभरे यूरोपीय साम्राज्यवाद और बड़े कारखानों के एकाधिकार के जवाब में सनातन अर्थशास्त्र आधारित कारगर कदम था। इतिहास गवाह है इसने न केवल ब्रिटेन की सत्ता को चुनौती दी, उनकी आर्थिकी की नींव भी हिला दी. इस अभियान ने भारत के हर घर को रोजगार और आर्थिक स्वावलंबन का मार्ग भी दिया। चरखा केवल कपड़ा बुनने का साधन नहीं था, बल्कि ब्रिटेन के निर्यात को घटाने और उसकी अर्थव्यवस्था पर प्रहार करने का एक सुनियोजित औजार भी था। हम अपना कपडा ही नहीं सिल रहे थे, हम जितना सिल रहे थे, उतना ही ब्रिटेन का निर्यात कम और उसकी इकॉनमी पर मारक चोट कर रहे थे, हम साम्राज्य की आँखों में बिना कुछ कहे आंखों में आँखें डाल कर बात कर रहे थे.

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लिए गए निर्णय सुविचारित और दूरगामी सोच पर आधारित थे। इन्हीं में से एक था चरखा और खादी का आंदोलन। गांधी का चरखा अभियान तत्कालीन ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रहार था। आज के ट्रम्प टैरिफ युग में भी यही चरखा स्वदेशी की अपील है. मोदी की यह अपील स्वदेशी आधारित आत्मनिर्भरता, स्वअनुशासन, मितव्ययिता और सार्वजनिक जीवन के लिए एक नजीर बन सकता है। ट्रम्प टैरिफ का मुकाबला करना है तो हमें आजादी के समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद से हुई हमारी अर्थकी लड़ाई को भी पढ़ना पड़ेगा, तभी हम इस टैरिफ से भी लड़ सकते हैं.

इतिहास पर नजर डालें तो पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में वास्कोडिगामा के आगमन ने भारत और यूरोप के बीच व्यापार का नया समुद्री मार्ग खोला। इसी रास्ते से पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज भारत आए और कारखाने स्थापित किए। उन्हें भारत के रेशम और कपास ने आकर्षित किया। इसी लालच में 1608 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत आई, जो मसाले, कपास और रेशम का व्यापार करती थी। गांधी खादी के माध्यम से अंग्रेजों के इसी लालच की जड़ पर प्रहार करना चाहते थे।

सत्रहवीं शताब्दी में भारत से कपास का निर्यात तेजी से बढ़ा। गाँवों में बुने कपड़े व्यापारी बंदरगाहों तक पहुँचाते और वहीं से निर्यात होता। भारतीय छपाई वाले कपड़े इंग्लैंड और यूरोप में अत्यधिक लोकप्रिय थे। यहाँ तक कि इंग्लैंड की रानी तक भारतीय वस्त्र पहनती थीं। इस बढ़ती लोकप्रियता से परेशान होकर इंग्लैंड के स्थानीय उद्योगपतियों ने भारतीय आयात का विरोध शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप 1730 के दशक में इंग्लैंड का पहला वस्त्र उद्योग स्थापित हुआ जिसने भारतीय डिज़ाइनों की नकल की और भारतीय वस्त्रों का बाजार समाप्त कर दिया।

18वीं शताब्दी तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी 23 प्रतिशत थी जो पूरे यूरोप के बराबर थी लेकिन जब अंग्रेज भारत छोड़कर गए तो यह केवल 3 प्रतिशत रह गई। वस्त्र उद्योग इसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि कैसे अंग्रेजों ने सुनियोजित साजिश से भारतीय अर्थव्यवस्था को नष्ट किया। औद्योगिक क्रांति और तकनीकी आविष्कारों ने ब्रिटेन को वाणिज्यिक और साम्राज्यवादी ताकत बना दिया। भारत से आयातित वस्त्रों पर ऊँचे शुल्क लगा दिए गए जबकि अंग्रेजी माल भारत में लगभग शुल्क-मुक्त प्रवेश करता था। परिणामस्वरूप हजारों भारतीय बुनकर और कारीगर बेरोजगार हो गए।

प्राचीन ज्ञान व भविष्य की तकनीकों के बीच पुल बन सकती है संस्कृत

विजय गर्ग

दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक संस्कृत जर्मनी, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे पश्चिमी देशों में बेहद लोकप्रिय हो रही है। वे इसके महत्व को समझ रहे हैं। वरिष्ठ पत्रकार मीरा जोशी ने अपने एक लेख में कहा है कि जब विश्व सांस्कृतिक पहचान, डिजिटल संचार जैसे मुद्दों से जूझ रहा है, तब संस्कृत भविष्य की भाषा के रूप में उभर रही है। इसके पीछे कई कारण हैं। कई लोगों का मानना है कि इसकी सुदृढ तार्किक संरचना भाषा प्रसंस्करण, एआइ और यहां तक कि रोबोटिक्स को भी सुगम बना सकती है, जिससे यह प्राचीन ज्ञान और भविष्य की तकनीकों के बीच पुल बन सकती है।

दरअसल, संस्कृत की व्याकरण प्रणाली की परिशुद्धता जटिल विचारों की संक्षिप्त और सुस्पष्ट अभिव्यक्ति को आसान बनाती है। शोध बताते हैं कि संस्कृत की वाक्य रचना गणितीय रूप से इतनी सुसंगत है कि इसे कंप्यूटर - अनुकूल भाषा के रूप में पहचाना गया है। भारत में प्रौद्योगिकी कंपनियां और शैक्षणिक संस्थान कंप्यूटिंग और एआइ अनुसंधान में संस्कृत को शामिल कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आइआइटी और अनुसंधान केंद्र इस पर शोध कर रहे हैं कि संस्कृत व्याकरण मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को कैसे बेहतर बना सकता है। लेखिका के अनुसार, गूगल और अन्य तकनीकी दिग्गजों ने भी अधिक कुशल सूचना पुनर्प्राप्ति और मानव-मशीन संपर्क के लिए संस्कृत की संरचना का उपयोग करने में रुचि दिखाई है।

प्राचीन ग्रंथों तक पहुंच : इस भाषा को पश्चिमी विद्वान न केवल जिज्ञासा के विषय के रूप में, बल्कि सभ्यता को समझने की कुंजी के रूप में देखते हैं। इससे योग, आयुर्वेद से लेकर खगोल विज्ञान और संगीत पर प्राचीन ग्रंथों तक पहुंच प्राप्त होती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

राहुल गांधी की वोट यात्रा किसे चुनाव जिताएगी

राजेश कुमार पासी

बिहार में मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण चल रहा है जिसे मुद्दा बनाकर राहुल गांधी ने वोट अधिकार यात्रा शुरू की है । इस यात्रा में अच्छी-खासी भीड़ जुट रही है. इससे उत्साहित होकर राहुल गांधी ने अपना पूरा जोर इस यात्रा में लगाया हुआ है । उन्होंने इस यात्रा को चुनाव प्रचार की तरह बढ़ाना शुरू कर दिया है । कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दल आजकल राहुल गांधी के पीछे चल रहे हैं और राहुल गांधी का कहना है कि मतदाता सूची में गड़बड़ी करके भाजपा चुनाव चोरी कर रही है । वो बिहार में मतदाता सूची के पुनरीक्षण को भी वोट चोरी से जोड़ रहे हैं । उनका कहना है कि चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के वोट काट रहा है क्योंकि ये लोग हमें वोट देते हैं ।

अब सवाल उठता है कि इस यात्रा से चुनाव में किसको फायदा होगा और किसको नुकसान होगा । कुछ लोगों के लिए यह सवाल अजीब हो सकता है क्योंकि उन्हें लगता है कि राहुल गांधी सड़क पर उतर कर मेहनत कर रहे हैं तो फायदा गठबंधन को ही होने वाला है । सवाल यह है कि क्या राजनीति इतनी सीधी और सपाट होती है । अगर राजनीति सच में इतनी सीधी और सपाट होती तो विश्लेषण की जरूरत ही नहीं पड़ती । वो कहते हैं कि उनके पास वोट चोरी का सबूत है. सवाल यह है कि क्या उन्हें सुप्रीम कोर्ट पर यकीन नहीं है. अगर सबूत हैं तो मामले की सुनवाई जो सुप्रीम कोर्ट में चल ही रही है वहां अपने सबूत क्यों नहीं पेश करते । इस यात्रा का आधार ही यही है कि वोट चोरी हो रही है । जब विपक्ष खुद ही सारा मामला सुप्रीम कोर्ट में ले जा चुका है तो वो क्यों नहीं सारी बातें माननीय अदालत में रखता । इसके विपरीत सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर विपक्ष को कई बार लताड़ लगा चुका है कि चुनाव आयोग सही काम कर रहा है. आप अपने आरोप साबित नहीं कर पा रहे हैं । एक तरफ देश की सबसे बड़ी अदालत में लड़ना, दूसरी तरफ सड़क पर उतर जाना सही रणनीति नहीं है । अगर सड़क पर उतरना था तो अदालत में नहीं जाना चाहिए था ।

इस यात्रा में शामिल होने के लिए कांग्रेस ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन और तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को बुलाया था । जो नेता अपने प्रदेशों में बिहार के लोगों को गाली देते हैं, उनको काम करने से रोकते है, उन्हें इस यात्रा में लाने की रणनीति क्या है । विशेष रूप से स्टालिन और उनकी पार्टी की छवि हिंदी, हिन्दू और उत्तर भारतीय विरोधी की है । ऐसे नेता अगर चुनाव प्रचार करते हैं तो भाजपा का ही रास्ता साफ होने वाला है । बिहारियों का अपमान करने वाले लोग राहुल गांधी के साथ दिखाई देंगे तो बिहार में इसका राजनीतिक फायदा होगा या नुकसान होगा । डीएमके नेता दयानिधि मारन में कहा था कि उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग तमिलनाडु में आकर शौचालय साफ करते हैं, वो इसी लायक हैं । आजकल लोग ऐसे नेताओं के पुराने वीडियो निकाल कर वायरल कर देते हैं, इसलिए पार्टी को सोच समझकर काम करना चाहिए। डीएमके नेताओं के पुराने बयान भाजपा का आईटी सेल सोशल मीडिया में वायरल कर रहा है । बिहार में सवाल पूछा जा रहा है कि जब बिहारियों को तमिलनाडु में परेशान किया जा रहा था तो स्टालिन कहाँ थे. राहुल गांधी बिहारियों की मदद करने तमिलनाडु क्यों नहीं गए और चुप क्यों रहे।

गुरुवार को यात्रा के एक मंच से मोदी जी को मां की गाली दी गई जिसे भाजपा ने मुद्दा बना लिया है । इससे यात्रा की छवि खराब हो रही है । खुद राहुल गांधी प्रधानमंत्री मोदी के लिए अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं । वो मोदी जी के लिए तू-तड़ाक वाली भाषा बोल रहे हैं और मोदी जी पर निजी हमले कर रहे हैं । स्पष्ट रूप से राहुल गांधी में राजनीतिक परिपक्वता की कमी दिखाई दे रही है. वो बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि कोई नौसिखिया बोल रहा है जबकि उन्हें राजनीति करते हुए 20 साल से ज्यादा का समय हो चुका है । उनकी परवरिश भी एक राजनीतिक माहौल में हुई है. अगर ऐसे माहौल में पले-बढ़े व्यक्ति की राजनीतिक समझ पर सवाल उठता है तो सोचना होगा कि वो कांग्रेस को कहां ले जाने वाले हैं।

यात्रा का मूल मुद्दा एसआईआर है लेकिन इस मुद्दे के चक्कर में राहुल गांधी दूसरे मुद्दों से दूर होते जा रहे हैं । वो कभी-कभी अपनी रैलियों में दूसरे मुद्दे उठा रहे हैं लेकिन उनका मुख्य मुद्दा वोट चोरी बन गया है । ये मुद्दा कांग्रेस के कट्टर समर्थकों के लिए तो ठीक है लेकिन आम जनता को इस मुद्दे से कोई लेना देना नहीं है । जनता के मुद्दों से दूरी बन रही है और ये चुनाव में भी जारी रहने वाली है । सवाल यह है कि कांग्रेस या राजद के कट्टर समर्थक तो वैसे भी एनडीए को वोट नहीं देने वाले नहीं हैं. फिर इनको खुश करके क्या हासिल होने वाला है । देखा जाए तो वोट यात्रा अब चुनाव प्रचार यात्रा बन गई है, अब जो हवा चलेगी वो उसी यात्रा के इर्द गिर्द चलने वाली है ।

इस यात्रा का सबसे बड़ा नुकसान यह दिखाई दे रहा है कि चुनाव की कमान राहुल गांधी ने संभाल ली है जबकि बिहार चुनाव की कमान तेजस्वी यादव के हाथ मे रहनी चाहिए थी । यात्रा चुनाव को राहुल बनाम मोदी बना रही है । जो चुनाव क्षेत्रीय मुद्दों पर लड़ा जाना है, वो धीरे-धीरे राष्ट्रीय मुद्दों पर जा रहा है । बिहार चुनाव अगर तेजस्वी बनाम नीतीश होगा तो विपक्ष के लिए फायदेमंद हो सकता है । सोशल मीडिया में कांग्रेस राजद से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है, इसकी वजह से माहौल बन रहा है कि राहुल गांधी नेता हैं और तेजस्वी यादव उनके पिछलग्गू हैं । नीतीश कुमार की सेहत अच्छी नहीं है और दूसरी तरफ उनके 20 साल के शासन से जनता ऊब चुकी है । बिहार की राजनीति को समझने वालों का दावा है कि जनता में बदलाव की लहर चल रही थी जिसका फायदा गठबंधन को मिलने वाला था लेकिन इस यात्रा से माहौल बदल रहा है । जनता का मूड फिर बदलने का खतरा पैदा हो गया है । जब ये चुनाव राहुल बनाम मोदी होगा तो विपक्ष के लिए कुछ अच्छा होने वाला नहीं है ।

इस बात को चुनाव विश्लेषक अच्छी तरह जानते हैं कि बिहार चुनाव तेजस्वी यादव के इर्दगिर्द घूमना गठबंधन के हित में है । यह बात विपक्षी नेता भी जानते हैं लेकिन राहुल गांधी को कौन रोक सकता है. वो अपनी धुन में चले जा रहे हैं । इस समय मोदी पर निजी हमले करना घातक है क्योंकि मोदी देश के लिए ट्रम्प से लड़ रहे हैं और देश की जनता उनके पीछे खड़ी है । मोदी पर निजी हमले बड़ी राजनीतिक गलती है जिसका खामियाजा गठबंधन को भुगतना पड़ सकता है।

वास्तव में यात्रा का मुद्दा ही हवा-हवाई है जिसके कारण इस यात्रा के चुनावी फायदे को लेकर संदेह है । राहुल गांधी गुजरात में मोदी सरकार बनने में भी वोट चोरी ढूंढ रहे हैं, 2014 में मोदी सरकार बनने में भी उन्हें वोट चोरी नजर आ रही है। सवाल यह है कि वो वोट चोरी के लिए चुनाव आयोग को दोषी ठहरा रहे हैं जबकि उस समय तो चुनाव आयोग उनकी पार्टी का था. क्या राहुल गांधी कहना चाहते हैं कि कांग्रेस ने चुनाव आयोग को मोदी के लिए वोट चोरी करने को कहा था। क्या तमिलनाडु, बंगाल, केरल, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, कर्नाटक और तेलंगाना में विपक्ष ने वोट चोरी करके सरकार बनाई है। वो कहते हैं कि चुनाव आयोग चुन-चुन कर भाजपा को चुनाव जीता रहा है। सवाल यह है कि क्या उक्त राज्यों में चुनाव आयोग ने विपक्ष के लिए वोट चोरी की है ।

एसआईआर को लेकर राहुल गांधी जो मुहिम चला रहे हैं, उसके कारण वो देश की दो सबसे विश्वसनीय संवैधानिक संस्थाओं पर हमला कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि वो सिर्फ चुनाव आयोग पर हमला कर रहे हैं जबकि सच यह है कि वो सुप्रीम कोर्ट पर भी निशाना लगा रहे हैं । इस मामले की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट कर रहा है और उसने ऐसा कुछ नहीं कहा है जिससे राहुल गांधी की बात में लोगों को सच्चाई दिख सके । इसके विपरीत सुप्रीम कोर्ट इस मामले में कई बार विपक्षी दलों को ही लताड़ लगा चुका है कि वो इस प्रक्रिया में कोई बड़ी गलती नहीं ढूंढ सके हैं और अदालत का समय खराब कर रहे हैं। राहुल गांधी के कितने ही दावों की पोल खुल चुकी है और बार-बार साबित हो रहा है कि राहुल गांधी झूठ बोल रहे हैं। उनके दावे लगातार गलत साबित हो रहे हैं लेकिन राहुल गांधी पर कोई असर नहीं हो रहा है । जिन लोगों के नाम मतदाता सूची से गलत तरीके से हटाए गए हैं, उनके बारे में चुनाव आयोग ने सभी राजनीतिक दलों को एक महीने में सूचित करने का कहा था लेकिन राजनीतिक दल कुछ नहीं कर रहे हैं । चुनाव आयोग के द्वारा नियुक्त बीएलओ के साथ काम करने वाले आधे बीएलए विपक्षी दलों के हैं तो मतदाता सूची में गड़बड़ी कैसे हो रही है । राहुल गांधी ने मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर जो प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी और चुनाव आयोग पर आरोप लगाए थे, उसके बारे में चुनाव आयोग ने कहा था कि वो शपथपत्र देकर अपनी शिकायत दें लेकिन राहुल गांधी पीछे हट गए हैं जिससे जनता में उन पर भरोसा कम हो रहा है। इस यात्रा का मुद्दा जनता से जुड़ा हुआ नहीं है इसलिए इसका फायदा कम लेकिन नुकसान ज्यादा होने की आशंका है ।

बहुचर्चित छत्तीसगढ़ अन्तरराज्य शराब घाटला में झारखंड के दो कारोबारी फंसे

प्रोडक्शन वारंट के साथ रायपुर ले जाया जा रहा है , शराब सिंडिकेट ने कमाये रु 2000 करोड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। छत्तीसगढ़ की आर्थिक अपराध अन्वेषण शाखा (EOW) ने राज्य में शराब घोटाले मामले में झारखंड के दो शराब कारोबारियों को हिरासत में लिया है। गिरफ्तार कारोबारियों को प्रोडक्शन वारंट पर वहां ले जाया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि विदेशी शराब लाइसेंसधारी कंपनी ओम साईं बेवरेज के निदेशक अतुल सिंह और मुकेश मनचंदा पर राज्य में कथित शराब घोटाले के तहत विदेशी शराब के व्यापार पर कमीशन वसूलने का आरोप है। राज्य में इसी तरह के एक शराब 'घोटाले' मामले में दोनों को पहले ही गिरफ्तार कर रांची जेल में रखा गया है।

छत्तीसगढ़ के अधिकारियों ने बताया कि झारखंड की अदालत से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त करने के बाद दोनों को रायपुर लाया जा रहा है। उन्हें शुक्रवार को यहां भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो/आर्थिक अपराध अन्वेषण शाखा (एसीबी/ईओडब्ल्यू) की विशेष अदालत में पेश किया जाएगा। इस मामले में धन शोधन की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुसार, राज्य में कथित शराब घोटाला 2019 और 2022 के बीच रचा गया था। उस दौरान छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार का शासन था।

ईडी ने कहा है कि कथित घोटाले के परिणामस्वरूप राज्य के खजाने को भारी नुकसान हुआ और शराब सिंडिकेट के लाभार्थियों की जेबों में 2,100 करोड़ रुपये से अधिक की रकम गयी। ईडी ने जनवरी में पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता कवासी लखमा के अलावा अनवर ढेबर, पूर्व आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा, भारतीय दूरसंचार सेवा (आईटीएस) अधिकारी अरुणपति त्रिपाठी और कुछ अन्य लोगों को मामले की जांच के तहत गिरफ्तार किया था। राज्य की आर्थिक अपराध अन्वेषण शाखा (ईओडब्ल्यू) ने पिछले साल 17 जनवरी को इस मामले में एक प्राथमिकी दर्ज की थी। राज्य की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने इस मामले में यहां की विशेष अदालत में छह आरोपपत्र दाखिल किए

दिवंगत शिक्षा मंत्री को श्रद्धांजलि देने राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री दंपति पहुंचे जमशेदपुर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार एवं मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन अपनी धर्मपत्नी कल्पना संग आज स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री रहे स्मृति शेष-स्व० रामदास सोरेन जी के श्रसंस्कार भोजश आयोजन में घोड़ाबांधा, जमशेदपुर स्थित उनके आवास पर पहुंच कर श्रद्धांजलि दी । यहां उन्होंने दिवंगत मंत्री स्व० रामदास सोरेन की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी । राज्यपाल का

हाथ पकड़कर स्व मंत्री पुत्र उनके श्रद्धांजलि स्थल तक ले गये । राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने शोकाकुल परिजनों से मिलकर अपनी गहरी संवेदना जताई। मुख्यमंत्री ने परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति प्रदान कर शोक संतप्त परिजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की। राज्यपाल मुख्यमंत्री ने स्मृति शेष-स्व० रामदास सोरेन जी की धर्मपत्नी सूरजमनी सोरेन एवं उनके पुत्र सोमेश चंद्र सोरेन तथा अन्य परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी तथा उनका ढांढ़स बंधाया।

तकनीक के दौर में 'लंबे कार्य घंटे' क्यों हैं पुरातन सोच? [कार्यस्थल पर थकान और तनावः सरकार ने क्या सोचा है?]

महाराष्ट्र सरकार का निजी क्षेत्र में कार्य घंटे 9 से बढ़ाकर 10 करने का प्रस्ताव न केवल कर्मचारियों के लिए अन्यायपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। प्रस्तावित संशोधन, जो महाराष्ट्र शॉप्स एंड एस्टेब्लिशमेंट्स एक्ट, 2017 के तहत लागू होने की योजना है, उत्पादकता बढ़ाने के नाम पर कर्मचारियों के कल्याण को नजरअंदाज करता है। यह धारणा कि अधिक घंटे काम करने से उत्पादकता स्वतः बढ़ेगी, भ्रामक और वैज्ञानिक रूप से असमर्थित है। अध्ययनों से बार-बार सिद्ध हुआ है कि लंबे कार्य घंटे कर्मचारियों की कार्यक्षमता, स्वास्थ्य और रचनात्मकता को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे कार्यस्थल पर नवाचार और समग्र उत्पादकता में कमी आती है।

लंबे कार्य घंटों का सबसे गंभीर प्रभाव कर्मचारियों की कार्यक्षमता पर पड़ता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) का एक अध्ययन स्पष्ट करता है कि प्रति सप्ताह 40 घंटे से अधिक काम करने पर थकान और तनाव के कारण उत्पादकता में कमी आती है। उदाहरण के लिए, 2019 के एक शोध में पाया गया कि 50 घंटे से अधिक साप्ताहिक कार्य करने वाले कर्मचारियों में त्रुटि दर 20% बढ़ जाती है और रचनात्मकता में 15% की कमी आती है। महाराष्ट्र में वर्तमान 9 घंटे की दैनिक कार्य अवधि (साप्ताहिक 54 घंटे, 6 कार्य दिवस मानकर) पहले ही वैश्विक मानकों से अधिक है। इसे 10 घंटे प्रतिदिन (60 घंटे साप्ताहिक) करने से कर्मचारियों पर शारीरिक और मानसिक दबाव बढ़ेगा, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं, कार्यक्षमता में कमी और कार्य-जीवन संतुलन बिगड़ने का खतरा है। क्या सरकार ने इस बात पर विचार किया है कि बढ़े हुए घंटों से उत्पन्न थकान कर्मचारियों की दीर्घकालिक कार्यक्षमता और अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव डालेगी?

इसके अतिरिक्त, लंबे कार्य घंटे कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के 2021 के संयुक्त अध्ययन के अनुसार, लंबे कार्य घंटों के कारण प्रतिवर्ष वैश्विक स्तर पर 7.45 लाख लोग हृदय रोग और स्ट्रोक से जान गंवाते हैं। यह आंकड़ा वर्ष 2000 की तुलना में 29% अधिक है, जो कार्यस्थल पर लंबे समय तक काम करने की संस्कृति के घातक परिणामों को उजागर करता है। भारत में, जहां निजी क्षेत्र में तनाव और बर्नआउट पहले से ही व्यापक है, यह प्रस्ताव स्थिति को और गंभीर कर सकता है। उदाहरण के लिए, 2022 के एक सर्वेक्षण में खुलासा हुआ कि भारत के 59% कर्मचारी कार्यस्थल पर तनाव का शिकार हैं, और उनमें से 42% ने बताया कि लंबे कार्य घंटे उनकी मानसिक सेहत को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। महाराष्ट्र जैसे औद्योगिक केंद्र, जहां लाखों लोग निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं, में क्या सरकार इस गंभीर जोखिम को अनदेखा कर सकती है?

प्रस्तावित नाइट शिफ्ट में महिलाओं को शामिल करने का प्रावधान भी गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि इसे लैंगिक समानता और रोजगार के अवसर बढ़ाने के नाम पर प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इससे जुड़े सुरक्षा और सुविधा के सवाल अनुत्तरित हैं। नाइट शिफ्ट में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कठोर उपाय, जैसे अनिवार्य पिकअप-ड्रॉप सुविधाएं और सुरक्षित कार्यस्थल, अनिवार्य होने चाहिए। लेकिन क्या सरकार ने इसके लिए कोई ठोस और विश्वसनीय योजना तैयार की है? भारत में कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा पहले से ही एक ज्वलंत मुद्दा है। 2019 की एक रिपोर्ट के अनुसार, केवल 23% महिलाएं ही नाइट शिफ्ट में काम करना सुरक्षित मानती हैं, और उनमें से अधिकांश ने परिवहन और कार्यस्थल सुरक्षा की अपर्याप्त व्यवस्था की शिकायत की। मजबूत सुरक्षा ढांचे के अभाव में, यह प्रस्ताव महिलाओं को सशक्त बनाने के बजाय उन्हें जोखिम में डाल सकता है।

इसके अतिरिक्त, यह दावा कि लंबे कार्य घंटे उत्पादकता बढ़ाएंगे, तकनीकी प्रगति के युग में आधारहीन और पुरातन लगता है। आज टेक्नोलॉजी और ऑटोमेशन के बल पर उत्पादकता को कई गुना बढ़ाया जा सकता है, न कि कर्मचारियों को अधिक समय तक काम करने के लिए बाध्य करके। जापान जैसे देशों ने कम कार्यघंटों और नवाचारों के माध्यम से उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उदाहरण के लिए, 2019 में जापान में माइक्रोसॉफ्ट ने चार दिन के कार्य सप्ताह का प्रयोग किया, जिससे उत्पादकता में 40% की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई। महाराष्ट्र सरकार को ऐसे प्रगतिशील और सिद्ध उपायों पर ध्यान देना चाहिए, न कि पुराने, अप्रभावी और थकाऊ तरीकों पर निर्भर रहना चाहिए।

आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह प्रस्ताव दीर्घकालिक रूप से हानिकारक सिद्ध हो सकता है। लंबे कार्य घंटे कर्मचारियों के कार्य-जीवन संतुलन को नष्ट करते हैं, जिससे उनकी नौकरी से संतुष्टि में कमी आती है। 2023 की एक अध्ययन के अनुसार, असंतुष्ट कर्मचारी 30% अधिक संभावना के साथ नौकरी छोड़ते हैं, जिससे कंपनियों को प्रतिभा का नुकसान और भर्ती लागत में भारी वृद्धि का सामना करना पड़ता है। महाराष्ट्र, जो भारत का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है, अगर कर्मचारी असंतोष में वृद्धि होती है, तो इसकी आर्थिक प्रतिस्पर्धा और समृद्धि को गंभीर झटका लग सकता है। क्या सरकार इस जोखिम को अनदेखा करके राज्य के भविष्य को दांव पर लगाने को तैयार है?

यह प्रस्ताव सामाजिक असमानता को और गहरा सकता है, जिससे समाज का ताना-बाना और कमजोर हो सकता है। निजी क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश कर्मचारी मध्यम और निम्न-मध्यम वर्ग से आते हैं, जो पहले से ही आर्थिक तनाव से जूझ रहे हैं। लंबे कार्य घंटे उनके परिवार और निजी जीवन के लिए समय को और अधिक छीन लेंगे, जिससे सामाजिक तनाव और असंतुलन में खतरनाक वृद्धि होगी। इसके बजाय, सरकार को कर्मचारी कल्याण पर जोर देना चाहिए—बेहतर वेतन, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं और लचीले कार्य घंटों जैसे कदम न केवल कर्मचारियों की भलाई सुनिश्चित करेंगे, बल्कि सामाजिक समरसता को भी बढ़ावा देंगे।

महाराष्ट्र सरकार को इस प्रस्ताव पर तत्काल पुनर्विचार करना चाहिए। यह प्रस्ताव न केवल कर्मचारियों के हितों के खिलाफ है, बल्कि यह दीर्घकाल में उद्योगों और समाज के लिए भी हानिकारक हो सकता है। लंबे कार्य घंटों की पुरातन नीति के बजाय, तकनीकी नवाचार, कर्मचारी प्रशिक्षण और कार्यस्थल सुधारों पर निवेश करना कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध होगा। यह न केवल कर्मचारियों के हितों की रक्षा करेगा, बल्कि दीर्घकाल में राज्य की अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचे को भी सुदृढ़ करेगा। सरकार को यह स्पष्ट रूप से समझना होगा कि कर्मचारी किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, और उनकी उपेक्षा करना एक ऐसी भयावह भूल होगी, जिसका खामियाजा पूरे राज्य को भुगतना पड़ सकता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सूर्या हासदा एनकाउंटर, नगड़ी में रिम्स-2 का विरोध को लेकर भाजपा ने राज्यपाल को सौपा ज्ञापन

मृतक के परिवार तथा वकील को सुरक्षा एवं सीबीआई जांच की लगाई गुहार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड के विभिन्न दलों के विधायक प्रत्याशी रहे मुखर व्यक्तित्व व जुझारु सांथाल नेता, गोड्डा जिले के निवासी सूर्या हांसदा पुलिस मुठभेड़ मामले की सीबीआई जांच और रांची में किसानों की उपजाऊ जमीन पर प्रस्तावित रिम्स-टू मेडिकल कॉलेज का निर्माण रोकने की मांग को लेकर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल शुक्रवार को राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से मुलाकात की।

भाजपा ने राज्यपाल को सौंपे ज्ञापन में आरोप लगाया कि गोड्डा जिले के आदिवासी, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता सूर्या हांसदा को 11 अगस्त को पुलिस ने फर्जी मुठभेड़ में मार डाला। पुलिस ने 10 अगस्त को देवघर जिले में सूर्या हांसदा को घर से उठाया और 11 अगस्त को गोड्डा के महगामा में उनके एनकाउंटर में मारे जाने का दावा किया। उनके परिजनों के अनुसार, सूर्या बीमार थे और इलाज कराकर लौटे थे, लेकिन गिरफ्तारी के बाद उनका न मेडिकल परीक्षण हुआ और न ही कोर्ट में पेशी।

भाजपा ने कहा कि हांसदा पर दर्ज 24 मामलों में से 14 में वे बरी हो चुके थे और किसी भी अदालत ने उन्हें अपराधी घोषित नहीं किया था। आरोप लगाया गया है कि पुलिस-राजनीति गठजोड़ और अवैध खनन विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रहने के कारण सूर्या को साजिश के तहत मौत के घाट उतारा गया।

भाजपा ने राज्यपाल से इस पूरे मामले की सीबीआई जांच कराने और पीड़ित परिवार व उनके वकील को सुरक्षा मुहैया कराने की मांग की। ज्ञापन में भाजपा ने रांची के नगड़ी इलाके में रैयत किसानों की उपजाऊ कृषि भूमि पर रिम्स टू अस्पताल निर्माण का भी कड़ा विरोध किया है।

पार्टी ने कहा कि सरकार ने किसानों की सहमति और मुआवजा दिए बिना उनकी जमीन को घेर लिया है। इसके विरोध में 24 अगस्त को शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे किसानों पर पुलिस ने लाठीचार्ज और आंसू गैस का इस्तेमाल किया। भाजपा ने इसे आदिवासी अस्मिता और किसान हित पर हमला करार दिया। पार्टी ने कहा कि भाजपा अस्पताल निर्माण का विरोध नहीं करती, लेकिन सरकार को इसके लिए बंजर या वैकल्पिक भूमि चुननी चाहिए। नगड़ी की रैयती जमीन पर निर्माण सीएनटी एक्ट और भूमि अधिग्रहण कानून का उल्लंघन है।

भाजपा ने किसानों पर दर्ज मुकदमों की वापसी और जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया पर रोक लगाने की भी मांग की। राज्यपाल से मिलने वाले प्रतिनिधिमंडल में सांसद आदित्य प्रसाद साहू, विधायक सीपी सिंह और नवीन जायसवाल समेत पार्टी के कई पदाधिकारी शामिल थे ।

सीएनटी एक्ट उलंघन मामले में पूर्व मंत्री एनोस एक्का, डीसीएलआर समेत 10 दोषी

30 को होगी सजा ।एनोस एक्का अर्जुन मुंडा, मधुकोड़ा सरकार में मंत्री रहे हैं

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, छोटानागपुर कास्तकारी अधिनियम (CNT- Act), आदिवासी की जमीन पर हुई कारोबार में नियम उल्लंघन कर जमीन खरीदी बिक्री के देढ़ दशक पुराने एक मामले पर रांची स्थित सीबीआई की विशेष अदालत ने राज्य के पूर्व मंत्री एनोस एक्का, उनकी पत्नी मेनन एक्का, रांची के तत्कालीन भूमि सुधार उप समाहर्ता कार्तिक कुमार प्रभात सहित 10 लोगों को दोषी करार दिया।

ठीक तुरंत बाद सभी आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। अदालत ने सजा पर सुनवाई के लिए 30 अगस्त की तारीख तय की है। सिमडेगा निवासी एनोस एक्का वर्ष 2005 से 2008 के बीच अर्जुन मुंडा और बाद में मधु कोड़ा सरकार में मंत्री रहे।

आरोप है कि मंत्री रहते उन्होंने पद का दुरुपयोग करते हुए फर्जी पते का इस्तेमाल कर बड़े पैमाने पर आदिवासी जमीन की खरीद-फरोख्त की। रांची के तत्कालीन एलआरडीसी

कार्तिक कुमार प्रभात ने उनकी मदद की। प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों की मिलीभगत से यह सौदे किए गए।

सीबीआई की जांच में सामने आया कि मार्च 2006 से मई 2008 के बीच एनोस एक्का की पत्नी मेनन एक्का के नाम पर विभिन्न इलाकों में जमीन खरीदी गई। इसमें हिनू में 22 कट्ठा, ओरमांझी में 12 एकड़, नेवरी में 4 एकड़ और चुटिया के सिरम टोली मौजा में 9 डिसमिल भूमि शामिल है।

कोर्ट ने सीबीआई के सभी आरोप सही पाए। इस मामले की सुनवाई सीबीआई के विशेष लोक अभियोजक प्रियांशु सिंह ने की। अदालत में दलीलों और गवाहों के आधार पर यह साबित हुआ कि जमीन खरीदने-बेचने में सीएनटी एक्ट का खुला उल्लंघन हुआ है।

गौरतलब है कि छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट, 1908 ब्रिटिश शासनकाल में लागू हुआ था। इसका उद्देश्य आदिवासी समुदाय की जमीन की सुरक्षा करना है। इस कानून के तहत आदिवासी भूमि को गैर-आदिवासियों को बेचना, गिरवी रखना या स्थानांतरित करना प्रतिबंधित है। यहां तक कि कोई आदिवासी भी अपने थाना क्षेत्र से बाहर के किसी अन्य आदिवासी को भूमि नहीं बेच सकता है। पर झारखंड के सिंहभूम एवं सरायकेला खरसावां जिले में जमीन कारोबार पर इसका उलंघन दिखता है । जहां अधिकारी- दलालों के मकड़े जाल में साधारण किसानों को फंसते देखा जा सकता है ।

ओम बिरला ने कहा,देश में एक कन्वेंशन प्रणाली स्थापित होनी चाहिए

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ओडिशा लोक सेवा भवन के कन्वेंशन सेंटर में आज दो दिवसीय राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति सम्मेलन का आयोजन किया गया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में ओम बिरला ने कहा कि देश में एक कन्वेंशन प्रणाली स्थापित होनी चाहिए।देश को आगे बढ़ाने के लिए, हमें सभी वर्गों के लोगों को साथ लेकर चलना होगा। हमें सभी को न्याय और सभी को उनका अधिकार देना होगा। देश की पहली महिला आदिवासी अध्यक्ष, द्रौपदी मुर्मू, इसी धरती से आती हैं। वह लोकतंत्र और लोकतंत्र की ताकत को पूरी दुनिया को समझा रही हैं। एससी/एसटी के लिए बजट आवंटन की समीक्षा की जानी चाहिए। रोजगार और आर्थिक शक्ति के क्षेत्र में बदलाव किए जाने चाहिए। यह सोचना ज़रूरी है कि कौन सी योजना दलित आदिवासियों को लाभान्वित करेगी, और हमें उन्हें आवश्यकतानुसार अधिकार देने होंगे।

दूसरी ओर, मुख्यमंत्री मोहन माझी ने एससी/एसटी राष्ट्रीय सम्मेलन में कहा कि देश के विकास के लिए एससी/एसटी का उत्थान आवश्यक है। ओडिशा की 40% आबादी आदिवासी और दलित है। 23% आदिवासी और 17% दलित हैं। मैं हाल ही में एक समर्पित आदिवासी लड़की से मिला, जिसने NEET पास किया है। हम अभी अच्छा कर रहे हैं, और भविष्य और भी बेहतर होगा। देहात से लेकर दिल्ली तक संवैधानिक व्यवस्था लागू है। हमने हजारों सालों तक अत्याचार सहा है। हम छुआछूत के शिकार थे, लेकिन संविधान ने हमें अधिकार दिए। अगर हम सशक्त नहीं होंगे, तो चाहे हम कितनी भी योजनाएँ बना लें, हमें परिणाम नहीं मिलेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा, जब तक हम सशक्त नहीं होंगे, राज्य का विकास नहीं हो सकता।

ओड़िशा में चलेंगी 1000 ई-बसें

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ओडिशा ने शहरी परिवहन क्षेत्र में इलेक्ट्रिक बस (ई-बस) यातायात में देश में पाँचवाँ स्थान प्राप्त करके एक उपलब्धि हासिल की है। वर्तमान में, राज्य में 450 ई-बसें चल रही हैं और आने वाले वर्षों में यह संख्या 1000 को पार करने की योजना है। आवास एवं शहरी विकास विभाग ने बताया कि शहरों को अधिक स्वच्छ, स्मार्ट और यात्री-अनुकूल बनाने के लिए एक विशेष रणनीति तैयार की गई है।विभाग के अनुसार, देश में वर्तमान में 14,329 ई-बसें चल रही हैं। दिल्ली में सबसे अधिक 3,564 ई-बसें हैं, उसके बाद महाराष्ट्र में 3,296, कर्नाटक में 2,236 और उत्तर प्रदेश में 850 हैं। हालांकि, ओडिशा ने शहरी क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल परिवहन के क्षेत्र में निर्णायक कदम उठाए हैं और इस क्षेत्र में पड़ोसी पश्चिम बंगाल (391), आंध्र प्रदेश (238), छत्तीसगढ़ (215) और झारखंड (46) को पीछे छोड़ दिया है। केंद्र सरकार पीएम-ई बस सेवा और पीएम-ई ड्राइव जैसी योजनाओं के तहत राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन (CRUT), जो ओडिशा में हमारी बस सेवाओं का संचालन करता है, सक्रिय रूप से इस सहायता का लाभ उठा रहा है और संबलपुर, झारसुगुड़ा, क्योंझर, बेरहामपुर और अंगुल में हमारी बस सेवाओं का विस्तार करने की तैयारी कर रहा है आवास एवं शहरी विकास मंत्री डॉ. कृष्ण चंद्र महापात्र ने ओडिशा के हरित दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला और कहा कि ई-परिवहन में ओडिशा की तीव्र प्रगति पर्यावरण और लोगों, दोनों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। बताया गया है कि अब ओडिशा में ई-बसें मुख्य रूप से भुवनेश्वर, कटक और पुरी के यात्रियों को सेवा प्रदान कर रही हैं।

मोदी-ट्रंप रिश्तों में दरार: टैरिफ विवाद से रणनीतिक समीकरणों तक

अशोक कुमार झा

जर्मनी के प्रतिष्ठित अख़बार फ्रैंकफर्टर आल्गेमाइने साइटुंग (FAZ) ने हाल ही में सनसनीखेज दावा किया है कि डोनाल्ड ट्रंप ने चार बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन करने की कोशिश की, लेकिन मोदी ने एक भी कॉल रिसीव नहीं की। सतही तौर पर यह महज़ एक घटनाक्रम लगता है, लेकिन वास्तव में यह घटना आधुनिक कूटनीति की सबसे शक्तिशाली "नॉन-वर्बल डिप्लोमेसी" का प्रतीक है। फोन कॉल का जवाब न देना किसी भी राष्ट्राध्यक्ष के लिए साधारण निर्णय नहीं होता — यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्पष्ट संदेश है कि भारत अब अमेरिकी दबाव को बर्दाश्त नहीं करेगा।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: भारत-अमेरिका रिश्ते

भारत और अमेरिका के रिश्ते हमेशा से उतार-चढ़ाव भरे रहे हैं।

नेहरू–केनेडी दौर (1960s): अमेरिका ने भारत को लोकतांत्रिक सहयोगी के रूप में देखा लेकिन पाकिस्तान को सैन्य मदद देने से रिश्तों में खटास आई।

इंदिरा–निक्सन (1971): बांग्लादेश युद्ध के समय अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने पाकिस्तान का साथ दिया, जिससे भारत-अमेरिका संबंध दशकों तक अविश्वास से भरे रहे।

वाजपेयी–बुश (2000s): न्यूक्लियर डील ने भारत-अमेरिका रिश्तों में ऐतिहासिक मोड़ लाया। यह दौर सहयोग और साझेदारी का स्वर्णकाल माना जाता है।

ओबामा–मोदी (2014-16): मोदी के सत्ता में आने के बाद अमेरिका ने भारत को 'ग्लोबल पार्टनर' मानते हुए कई रणनीतिक समझौते किए।

ट्रंप–मोदी (2017-2020): शुरुआती दोस्ती (Howdy Modi, Namaste Trump) के बावजूद व्यापारिक मुद्दों पर तनाव बढ़ा। ट्रंप की आक्रामक 'अमेरिका फर्स्ट' नीति ने भारत को बार-बार असहज किया।

इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बाद मौजूदा हालात को समझना आसान है कि भारत अब केवल आर्थिक सहयोग से आगे बढ़कर रणनीतिक स्वायत्तता की दिशा में क्यों बढ़ रहा है।

मौजूदा विवाद: ट्रंप की बयानबाज़ी और मोदी की नाराज़गी

ट्रंप ने भारत की अर्थव्यवस्था को "डेड इकोनॉमी" कहकर अपमानित किया। यह बयान केवल राजनीतिक भाषा नहीं था, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति थी जिससे अमेरिकी मतदाताओं को यह दिखाना था कि वह "कमज़ोर साझेदार" को भी कठोर शब्दों में चुनौती दे सकते हैं।

मोदी का कॉल न उठाना इसी का जवाब था। यह निर्णय केवल व्यक्तिगत अहंकार नहीं बल्कि राष्ट्र की गरिमा से जुड़ा था। मोदी जानते थे कि अगर वह ट्रंप से सीधे संवाद करेंगे तो ट्रंप बातचीत को तोड़-मरोड़कर चुनावी मंच पर पेश कर सकते हैं।

टैरिफ युद्ध: भारत पर अमेरिकी दबाव

अमेरिका ने भारत पर आयात शुल्क बढ़ाकर 50% कर दिया। यह निर्णय रूस से भारत की तेल खरीद के खिलाफ दबाव की रणनीति के तहत लिया गया।

इससे भारत के वस्त्र, आभूषण, जूते और समुद्री उत्पादों का निर्यात बुरी तरह प्रभावित होगा।

छोटे उद्योगों और निर्यातकों के लिए यह संकट खड़ा कर देगा।

वहीं, अमेरिकी बाज़ार में भारतीय उत्पाद महंगे हो जाएंगे, जिसका असर अमेरिकी उपभोक्ताओं पर भी पड़ेगा।

भारत ने इसे अन्यायपूर्ण और अनुचित करार दिया है और स्पष्ट किया है कि ऊर्जा सुरक्षा किसी भी दबाव का विषय नहीं है।

भारत की प्रतिक्रिया: आक्रामक कूटनीति

भारत ने व्यापार वार्ता रद्द कर दी और अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का दौरा रोक दिया। यह स्पष्ट संकेत है कि भारत अब 'प्रतिक्रियात्मक कूटनीति' नहीं, बल्कि 'आक्रामक प्रतिरोधक कूटनीति' अपना रहा है।

यह कदम केवल अमेरिका के खिलाफ नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए यह संदेश है कि भारत अब अपनी शर्तों पर वैश्विक साझेदारी तय करेगा।

सामरिक समीकरणों पर असर

भारत-अमेरिका सहयोग:

इंडो-पैसिफिक में अमेरिका चाहता था कि भारत उसकी "एंटी-चाइना स्ट्रेटेजी" का स्थायी हिस्सा बने। लेकिन मौजूदा घटनाक्रम से यह सहयोग कमजोर पड़ सकता है।

भारत-रूस संबंध:

रूस से ऊर्जा खरीद अब केवल एक आर्थिक विकल्प नहीं, बल्कि रणनीतिक संकल्प बन चुकी है। अमेरिका के दबाव से उल्टा भारत और रूस का रिश्ता और गहरा हो रहा है।

भारत-चीन समीकरण:

मोदी की हालिया चीन यात्रा को इसी दृष्टि से देखा जा रहा है। चीन और भारत के बीच सीमाई तनाव भले हो, लेकिन वैश्विक राजनीति में दोनों देशों का सहयोग अमेरिका की चिंता बढ़ा रहा है।

वैश्विक दक्षिण (Global South):

भारत अब "ग्लोबल साउथ" का नेता बनने की कोशिश कर रहा है। अमेरिका के दबाव को झुककर स्वीकार करना उसकी इस नेतृत्वकारी छवि को कमजोर करता। यही कारण है कि मोदी सरकार ने सख्त रुख अपनाया।

अमेरिका की घरेलू राजनीति और ट्रंप की रणनीति

ट्रंप की आक्रामक टैरिफ नीति और भारत के प्रति कठोर रवैये को अमेरिकी घरेलू राजनीति से जोड़कर देखना होगा। 2024 का चुनाव नज़दीक है और ट्रंप को अपने समर्थकों को यह दिखाना है कि वह "अमेरिका फर्स्ट" नीति पर समझौता नहीं करेंगे।

भारत को 'कमज़ोर साझेदार' बताकर और उस पर टैरिफ लगाकर ट्रंप अपनी चुनावी राजनीति को मज़बूत करना चाहते हैं। लेकिन इस चुनावी लाभ के लिए वैश्विक संबंधों की कुर्बानी देना दीर्घकालीन रूप से अमेरिका के लिए भी नुकसानदेह साबित हो सकता है।

भारत का भविष्य का रास्ता

भारत के सामने अब दो विकल्प हैं:

अमेरिका के दबाव में झुककर सीमित लाभ हासिल करना।

या फिर बहुपक्षीय कूटनीति (रूस, चीन, यूरोप, खाड़ी देश, अफ्रीका) के साथ तालमेल बनाकर अपनी स्वायत्त पहचान बनाए रखना।

मोदी सरकार ने दूसरा रास्ता चुना है। यह भारत की दीर्घकालीन रणनीतिक स्वायत्तता को मजबूत करता है और उसे एक स्वतंत्र ध्रुव के रूप में स्थापित करता है।

इतिहास में दर्ज होगी यह खामोशी

मोदी द्वारा ट्रंप की चार कॉल ठुकराना केवल व्यक्तिगत असहमति नहीं है। यह उस नए हिंदुस्तान का प्रतीक है जो अब महाशक्ति अमेरिका को भी "ना" कहने का साहस रखता है।

आने वाले वर्षों में यह घटना इतिहास में दर्ज होगी — उस क्षण के रूप में जब भारत ने दुनिया को यह संदेश दिया कि उसकी विदेश नीति केवल और केवल राष्ट्रीय हितों से तय होगी, न कि किसी महाशक्ति के दबाव से।

यह खामोशी कूटनीति की भाषा में एक गूँज है — और यह गूँज बहुत दूर तक सुनाई देगी।

एक शाम वीर तेजाजी महाराज के नाम जागरण 1 सितंबर को

जगदीश सीरवी

हैदराबाद अलमासगुड़ा स्थित परमेश्वर मंदिर जाट समाज ट्रस्ट मंदिर व भवन अलमासगुडा वीर तेजाजी महाराज के मंदिर प्रांगण मे भादवा सुदी नवम्के पावन अवसर पर दो दिवसीय वीर तेजाजी महाराज का भव्य जागरण सोमवार 1 सितम्बर एवं मंगलवार 2 सितम्बर पुजा-अर्चना व महाप्रसादी कार्यक्रम जाट समाज वीर तेजाजी जाट समाज ट्रस्ट मंदिर बन्धुओं व भक्तों के सानिध्य मे आयोजित किया जाएगा। जारी प्रेस विज्ञप्ति मे अध्यक्ष दुदाराम बाबल, संरक्षक सोहनलाल बागड़ा, सचिव बाबूलाल पुनिया, कोषाध्यक्ष लिकमाराम खोखर ने संयुक्त रुप से बताया कि हर वर्ष की भांति भादवा सुदी नवम्पर वीर तेजाजी महाराज का भव्य जागरण समाज बन्धुओं के सानिध्य मे आयोजित किया जाएगा। वीर तेजाजी महाराज का विशेष श्रृंगारकर, पूजा-अर्चना व आरती के पश्चात्पधारे भक्तों एवं रात्रि 9.15 बजे से जागरण का आयोजन किया जाएगा। जिसमे वीर तेजाजी महाराज के भजनों की प्रमुख भजन गायक किशोर मालवीय एण्ड पार्टी पाली राजस्थान भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। मंगलवार 2 सितम्बर प्रातः वेला मे समाज बन्धु पुजा-अर्चना, दर्शन-वंदन, श्री तेजाजी महाराज के चरणों मे श्रीफल व श्रद्धा के पुष्प अर्पितकर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करेंगे। प्रातः 11.30 बजे से जाट समाज बन्धुओं के लिए महाप्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी। जाट समाज बन्धुओं से निवेदन है कि 2 सितंबर को अपने प्रतिष्ठान बंद रखे।समाज बन्धुओं व भक्तों से निवेदन है उपरोक्त कार्यक्रम में समय पर सपरिवार पधारकर कार्यक्रम का लाभ लेवे।

कोमपल्ली स्थित श्रीकन्वेंशन हाल में आयोजित होने वाले एक शाम श्याम बाबा के नाम जागरण में विशेष अतिथि के रूप में भाजपा संगठन मंत्री चंद्रशेखर, बीजेपी प्रभारी रामचंद्र राव, मल्काजगीरी सांसद ईटेला राजेन्द्र, मध्य प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव, दर्शन अग्रवाल शांतिलाल सुथार व अन्य को आंत्रित करते बंसल परिवार एवं मनीष भाई।

टैरिफ की मार, साझेदारी का वार: मोदी का जापान मिशन

जब वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक मंच पर तूफान मचा हो, और अमेरिका के 50% टैरिफ भारत के व्यापारिक ढांचे को हिलाने की कोशिश कर रहे हों, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 29 अगस्त से शुरू होने वाला जापान दौरा एक दूरदर्शी और निर्णायक कदम के रूप में सामने आता है। यह यात्रा केवल एक कूटनीतिक औपचारिकता नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक रणनीति को नया आयाम देने का एक सशक्त प्रयास है। अमेरिकी दबाव के बीच जापान के साथ गहरी साझेदारी न केवल भारत को आर्थिक स्थिरता प्रदान कर सकती है, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी रणनीतिक स्थिति को अभेद्य बना सकती है।

मोदी का जापान के साथ रिश्ता 2007 में तब शुरू हुआ, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में टोक्यो और क्योटो की यात्रा पर गए और जापानी कंपनियों के साथ निवेश के अवसरों पर चर्चा की। इस मुलाकात ने जापानी उद्योगों और भारतीय बाजार के बीच एक मज़बूत सेतु बनाया। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद, उनकी शिंजो आबे के साथ पहली भेंट ने भारत-जापान संबंधों को "विशेष रणनीतिक और वैश्विक भागीदारी" का दर्जा दिलाया। 2022 में आबे की हत्या के बाद मोदी ने उन्हें "प्रिय मित्र" कहकर श्रद्धांजलि दी, जो उनके गहरे व्यक्तिगत और पेशेवर बंधन को उजागर करता है। यह बंधन आज भी भारत-जापान संबंधों की रीढ़ बना हुआ है, खासकर ऐसे समय में जब अमेरिकी टैरिफ भारत को नई आर्थिक रणनीतियों की ओर प्रेरित कर रहे हैं।

मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना भारत-जापान सहयोग की चमकती मिसाल है। 2017 में शिंजो आबे के साथ इसकी आधारशिला रखी गई, जिसमें जापान की विश्व-प्रसिद्ध शिंकानसेन तकनीक और 68 बिलियन डॉलर का भारी-भरकम निवेश भारत के बुनियादी ढांचे को क्रांतिकारी रूप देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। हालाँकि समय और लागत की चुनौतियाँ बाधाएँ खड़ी करती हैं, जापान का तकनीकी समर्थन इस परियोजना को अभूतपूर्व गति प्रदान कर रहा है। इसके अलावा, जापान की 68 बिलियन डॉलर की प्रस्तावित निवेश योजना, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर और अन्य अत्याधुनिक तकनीकी क्षेत्रों पर केंद्रित है, भारत को आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती है। अमेरिकी टैरिफ के कारण उत्पन्न व्यापारिक अस्थिरता के बीच यह निवेश भारत के लिए एक मज़बूत जीवनरेखा बन सकता है।

2016 में वाराणसी और क्योटो को "सिस्टर सिटी" घोषित करना दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव का एक प्रेरक कदम था, जिसने लोगों के दिलों को और करीब लाया। जापानी विशेषज्ञता से प्रेरित स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ और शहरी विकास मॉडल भारत के लिए एक आदर्श बन गए हैं। यह सहयोग न केवल आर्थिक प्रगति को गति देता है, बल्कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता रखता है, बशर्ते निवेश का वितरण समान और समावेशी हो।

2018-19 में क्वाड (भारत, जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया) पहल ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता के खिलाफ एक मज़बूत रणनीतिक संतुलन स्थापित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी जापान यात्रा, जिसमें 15वें भारत-जापान शिखर सम्मेलन और नए जापानी पीएम शिगेरु इशिबा के साथ निर्णायक वार्ता शामिल है, क्वाड, समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी। जापान के साथ सूचना साझा करने और संयुक्त सैन्य अभ्यासों से भारत की रक्षा क्षमता अभेद्य होगी, जो अमेरिकी तनाव के बीच एक रणनीतिक बढ़त प्रदान करेगी।

हालाँकि, इस साझेदारी के सामने चुनौतियाँ भी हैं। जापान-अमेरिका के बीच हालिया बातचीत, जिसमें एक जापानी दौरा रद्द हुआ, यह संकेत देती है कि जापान अमेरिकी दबाव में झुक सकता है, जो भारत के साथ उसकी प्रतिबद्धता को प्रभावित कर सकता है। साथ ही, जापानी निवेश को केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित रखने के बजाय ग्रामीण और पिछड़े इलाकों तक विस्तारित करना होगा, ताकि आर्थिक असमानता को दूर किया जा सके। भारत को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि परियोजनाएँ समयबद्ध तरीके से पूरी हों, अन्यथा जापान का विश्वास डगमगा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह जापान यात्रा भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति और जापान की "फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक" पहल के बीच एक सशक्त सामंजस्य रचती है। चीन की आक्रामकता और क्षेत्रीय अस्थिरता जैसी साझा चिंताएँ दोनों देशों को और करीब ला रही हैं। शिंजो आबे की दूरदर्शी विरासत को आगे बढ़ाते हुए, नई जापानी सरकार के साथ भारत को अपनी साझेदारी को अभेद्य बनाना होगा। यह सहयोग न केवल आर्थिक समृद्धि का द्वार खोलेगा, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की रणनीतिक भूमिका को भी नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

पीएम मोदी की जापान यात्रा एक कूटनीतिक विजय का मार्ग प्रशस्त करती है, जो अमेरिकी टैरिफ की चुनौतियों के बीच भारत को एक वैकल्पिक आर्थिक और रणनीतिक गलियारा प्रदान करती है। जापान के साथ गहरा रिश्ता, अत्याधुनिक तकनीकी सहयोग, और अटूट आपसी विश्वास इस साझेदारी को आगामी दशकों के लिए एक मज़बूत आधार दे सकते हैं। यह दौरा न केवल भारत-जापान संबंधों को नई दिशा देगा, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की सशक्त उपस्थिति और चुनौतियों से डटकर मुकाबला करने की दृढ़ता का स्पष्ट संदेश भी देगा। दोनों देशों को मिलकर एक ऐसी साझेदारी गढ़नी होगी, जो एक स्थायी, समृद्ध और सुरक्षित भविष्य की नींव बने।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

डिस्ट्रिक्ट शॉपिंग कंपलेक्स रणजीत एवेन्यू की पार्किंग और बेअंत पार्क का लगभग एक करोड़ रुपये की लागत से होगा कायाकल्प : करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर, (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने आज रणजीत एवेन्यू बी ब्लॉक में स्थित जिला शॉपिंग कंपलेक्स की पार्किंग और बेअंत पार्क के नवीनीकरण कार्य का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इन विकास कार्यों के पूर्ण होने से न केवल स्थानीय निवासियों को सुविधा मिलेगी, बल्कि क्षेत्र की सुंदरता और उपयोगिता भी कई गुना बढ़ जाएगी।

रिंटू ने बताया कि पार्किंग को लगभग 60 लाख रुपये की लागत से आधुनिक स्वरूप दिया जाएगा। पार्किंग क्षेत्र का फर्श पूरी तरह से इंटरलॉकिंग टाइलों से दोबारा बनाया जाएगा जिससे लोगों को गाड़ियों की आवाजाही और पार्किंग में कोई दिक्कत न हो। इसके साथ-साथ इस पार्किंग स्थल के फुटपाथ का भी पुनर्निर्माण किया जाएगा, ताकि पैदल चलने वालों को सुगम और सुरक्षित मार्ग प्राप्त हो सके। इसी प्रकार, रणजीत एवेन्यू का लोकप्रिय बेअंत पार्क भी नवीनीकरण के तहत बदला जाएगा। पार्क में नई और उच्च गुणवत्ता वाली एलईडी लाइटें, सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे, जिससे सुरक्षा व्यवस्था और बेहतर होगी। पार्क में जो भी पुराना सामान या उपकरण खराब हो चुके हैं, उनकी मरम्मत करवा दी जाएगी और आवश्यकतानुसार उन्हें बदला भी जाएगा। इस परियोजना पर लगभग 40 लाख रुपये का व्यय होगा, जिससे पार्क का संपूर्ण स्वरूप नया और आकर्षक बनेगा।

उन्होंने कहा कि इन विकास कार्यों से स्थानीय निवासियों, व्यापारियों और यहां आने वाले लोगों को बड़ी राहत मिलेगी। जिला शॉपिंग कंपलेक्स की पार्किंग का उन्नयन व्यापारिक गतिविधियों को और सुगम बनाएगा जबकि बेअंत पार्क का आधुनिकीकरण नागरिकों को एक बेहतर और सुरक्षित मनोरंजन स्थल उपलब्ध कराएगा।

रिंटू ने स्पष्ट किया कि इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर का लक्ष्य सिर्फ निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि गुरु नगरी की पवित्रता, स्वच्छता और सौंदर्य को बनाए रखने की निरंतर कोशिशें की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट की सभी योजनाओं को समय पर और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जा रहा है ताकि लोगों को प्रत्यक्ष लाभ मिले।

इस मौके पर कमल डालमिया, नवजोत सिंह ग्रोवर, राज प्रताप सिंह बाजवा, गुरदीप सिंह पनेसर, राहिल कुमार सहित इंप्रूवमेंट ट्रस्ट के कई अधिकारी और स्थानीय गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे क्षेत्र का विकास और भी तेजी से होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023